श्री

॥श्री॥ श्रीरामो विजयतेतराम् ॥श्री॥

श्री

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सा०

श्रीगणेशाय नमः॥

[illegible] नमः॥ श्रीसिद्धेश्वर्यै नमः॥ प्रणम्य परमात्मानं
बालधीवृद्धिसिद्धये॥ सारस्वतीमृजुं कुर्वे प्रक्रियां नातिविस्तराम्॥
॥१॥ ॥१॥ इन्द्रादयोऽपि यस्यान्तं न ययुः शब्दवारिधेः॥ प्रक्रियां तस्य
कृत्स्नस्य क्षमो वक्तुं नरः कथम्॥२॥ तत्र तावत्संज्ञा संव्यवहारा
य संगृह्यते॥ अ इ उ ऋ ऌ समानाः॥ अनेन प्रत्याहारेण अहरा सार
पवर्णाः परिगृह्यन्ते॥ तेषां समानसंज्ञा विधीयते॥ नैतेषु सू
त्रेषु संहितानुसंबन्धोऽविवक्षितत्वाद्विवक्षितसंधिर्भवतीति
नियमात्॥ लौकिकप्रयोगनिष्पत्तये समयमात्रत्वात्॥ ह्रस्वदीर्घ
प्लुतभेदाः सवर्णाः॥ एतेषां ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदाः परस्परं सवर्णा राम
भण्यन्ते॥ [illegible] ॥१॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अइउण ऋऌक एओङ ऐऔच ॥ हयवरट लण ॥ ञमङणनम झढधष
भ ॥ जउदगब ॥ इत्येतावत्स् ब्राकः अनपघने ॥ वढनकेपइ
ति नप प्रत्याहारः ॥ जउदगब इति जब प्रत्याहारः ॥
झढधब भ इति झभ प्रत्याहारः ॥ एवं पञ्च पञ्च पेनये
न प्रत्याहारेण कृतं स ... त्र ब ... ः ॥ तं स्याति
पमस्तु नास्ति ॥ हलंत्यम् ॥ नानि ॥ ... ना दपः ... ना नो
वर्णा हि सा ... नानि भवन्ति ॥ ... रहोनं ... नेते ... ला नः ॥
वर्ग ... नराग ... दिति संज्ञकः ॥ का ... स्त
प्रत्यपादिति निमः ॥ केसे वितको ... पो ब ... माने
वर्ण इति संज्ञाको भवति ॥ पस्से संज्ञानस्य लोपः ॥ वर्णा
दर्शनं लोपः ॥ वर्णा विना ... लोपः ॥ ... पाद रनङ्क

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वर्ण स्वादि संज्ञा ज्ञातव्या ॥ एकमात्रो ह्रस्वः ॥ द्विमात्रो दीर्घः
त्रिमात्रो प्लुतः ॥ व्यंजनं चार्धमात्रकं ॥ एषामप्येषूदात्तादि
भेदा भवंति ॥ उच्चैरुपलभ्यमानो उदात्तः ॥ नीचैरनुदात्तः ॥ स
मवृत्त्या स्वरितः ॥ ए ऐ ओ औ संध्यक्षराणि ॥ एषां ह्रस्वा न सं
ति ॥ उभयेऽस्वराः ॥ अकारादयः ४ पंचवर्गाः कवर्गादयः ४ उ
भयेस्वरा ऊष्माणः ॥ अवर्णो नामिनः ४ ॥ अवर्णवर्जाः स्वरा
नामिन उच्यंते ॥ अनुस्वारो विसर्गः ४ ॥ [illegible] जिह्वामूलीयोपध्मानीयौ
[illegible] व्यंजनान्यनेकामति ॥ ह्रस्ववन्त ॥ [illegible] ॥ [illegible]
घघवभ ॥ जडदगव ॥ खफछठथ ॥ चटतकप ॥ सषशा ॥ अघना
म्यो प्रत्याहारं जिह्वामूलीय ॥ अघोनाम्यो मनेव राश्या [illegible]
दिर्वर्णोऽनेन [illegible] सानुनासिक प्रत्याहार ४ ॥ [illegible]
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham
[illegible] अप्रत्याहार ४ ॥ सर्व ॥

सा॰न॰ इवरो॥ पवमापघजे स्वने पनो॥ द षिश्वा नपइति स्थिपते॥ दमपश्वा
नपइतिताव स्वेवृति॥ हसेहंसः॥ स्वाप्य नोनेफ कानवलि स्व॰न॰
नो हसेति सपवे विर्न ति॥ इति श्वानस्या हु नम॥ गुनुद्ध नेप
3 पे॥ न द्वित मस्य दिह ति॥ द्वित्व विघानो द्वा वेद शिष्ये तेन्म ॥३॥
॥३॥ प नो हसाः उपपन्ने॥ [illegible] वा॥ मसानां मे पूर्व जवाः राम
मेति॥ इति पूर्व भकान स्मदकान [illegible] सवनी [illegible] स्यो वग्र
गो [illegible] वृणीइति वचनात्॥ यस्या [illegible] यावै [illegible]॥
रा स्वहां नपनरा सपो ज्यमम्॥ द स्यान पइति सि धेमं॥ गोनी सेव
शति स्थिते श्येहं इतिविशेषणान्नैफ स्यादिवम्॥ किंजुन
पमाने॥ [illegible] पवोहूहका [illegible] नवोज पोहिमं वृति॥ जयत्तु
विकल्पा पेत नेपरो [illegible]॥ औपम्यं॥ सनइस [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

उपनगोनं सा॥१२

मित्रवदागमः॥ शत्रुवदादेशः॥ स्वरानन्तरित हसासंयोगः॥ उवर्णमु
त्तवर्जोः॥ उकारवर्णेव वर्ण्णं पीनि स्फह सारापः॥ अयेषो नामिनो
ग्राः॥ नामिनः स्यान्तिको ग्रृचुरयो रन्तेग्रसामज्ञकाः भ
वन्ति॥ आनेपोधिः॥ आमानरयोरन्तेबधि संज्ञका भवन्ति॥
अन्त्यस्वरादिष्टिः॥ अन्त्योपः स्वरस्तदादिर्वर्ण्णः टिसंज्ञको भ
ति॥ अन्त्यात्पूर्व उपधा॥ अन्त्याद्वर्णात् मात्रात्पूर्वो यो वर्णः
स उपधासंज्ञको भवति॥ असंयोगादिपेनोहसोल
घु॥ विसर्गान्तस्वानसंयो[redacted]स्वरवनास्व
कान्यां हवापमानोवर्णाऽनुनासिकः॥ विविकृत
सज्ञः सितोविन्दुन्त्स्वानः॥ ० ॥इतिसंज्ञाप्रक्रि
या॥ ० ॥ अथ नामकन्तं सिस्ततीयते॥ ० ॥ इ पंचसे

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

द्वितियेदेवस्त ३३ ११॥

मि॥ गङ्गा इ ए चरसि॥ अ ओऽन्ता दौवन्यः॥ गोअग्रतः॥ ४
गवाग्रतः॥ गोइन्द्रः॥ गवेन्द्रः॥ ओ प्र जिनमः॥ ग ६
वाजिनमः॥ प्र उढः॥ प्रौढः॥ स्व ईरिणी॥ स्वै ७
रिणी॥ अक्ष ऊहिनी॥ अक्षौहिनी॥ सेना॥ ह ८
विल्लव वपकानः॥ पण्प वपाने मा ने गोपतिः॥
गव्यूतिः॥ ओरथ्ये गे अक्ष व्यवग वांशि भ्यो मा
वो जो गोयूतिः॥ रे अप॥ रे ऋ ने ऋप अवन्ति
स्वने पचे॥ नै ऋ कः॥ नाप्रकः॥ औ अश्व॥ अश्वाका
नो ऋ व भवन्ति स्वने पचे॥ पौ ऋकः॥ पावकः॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मन्वन्तादिपूर्व

नर्वे तेस्व नम्स्या ः ज्ञा पर्शिरिस्त
वसपेय सूत्रा नन्नीन्प दानरोदन्वे जिज्ञा ने वा॥
ग्रन्प मूपे कुभे पान्नोस्माभि लि स्व ने॥ उवम॥
उवरो वत्नमापघ नेस्वेपवे॥ ममनम॥ मव
रो नत्नमा पद्य ने स्वे पवे॥ पितृन्प्रर्पः॥ पितृ
त्पः॥ मातन्प्रर्तः॥ मातृर्पः॥ जलम॥ लवरो
लत्नमा पधे नेस्वनेपवे॥ लम्प्रन वंशेः॥ लेनव
मः॥ एम्प्रय॥ मकोत्रो ऽपमवति स्वनेपवे॥ नेऽ
नम॥ नप नम॥ श्रोमप्रत॥ श्रोको नेऽवमवति
वनेपवे॥ श्रोम्प्रति॥ म वति॥ प्रति॥ गव

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सा॰ स॰ ॥५॥

पत्रेरा पूर्वं वा जेवाप्रयासोहश्च मिह ४ गी

भातउदपं॥ न्नान् दपो अदीर्घौ दीर्घं तो जानासिदी
र्घस्पदीर्घं नापूर्वं दीर्घत्वं सिंहपनपोपो विषय
ते सामान्यशास्त्रतो नूनं विशेषो बलवान् भ
वेत्॥३॥ अइउण्॥ अवर्ण इवर्णो पनेसहय हूं मने ति॥
नव इदं॥ नवेदं॥ मम इदं॥ ममेदं॥ हल्ोदेनीपादो
देनो दोवनत्यः॥ हल्इ पा॥ हल्ीपा॥ लोउ॰ लइ पा॥ ल
उ॰ लीपा॥ मनस उपा॥ मनीपा॥ प तत्र औ जली॥ प
तं जली॥ अप औ॥ अहो॥ उओ॥ अवर्ण उवर्णो
परेस हओ तेकारा [illegible]

राम

राम ॥५॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

तोइह॥ ताविह॥ ता इह॥ य्वोर्लोपशौ वा पदान्ते॥
पदान्ते स्थितानामयादीपकारवकारयोर्लोप
शौ वा भवति॥ तेआगताः॥ तयागताः॥ तआगताः॥
पटाइह॥ पटविह॥ पटइह॥ लोपशषुनर्नसेभि॥
केनैसितु भवति॥ हे सखे इति॥ हे सखयिति॥ हे
सखेति॥ एदोतोऽतः॥ पदान्ते स्थितादेकारादोका
रात्परस्याकारस्य लोपो भवति॥ तेत्र॥ तेऽत्र॥
पटोत्र॥ पटोऽत्र॥ सवर्णे दीर्घः सह॥ सवर्णस्य सव
र्णे परे सह दीर्घो भवति॥ [illegible]॥ सात्रोऽस्त्र॥ दधीदं॥
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सा॰स॰ ॥६॥

श्री १

नेल्नवति॥ तवओदनं॥ नवोइनं॥ नवौनिस्थं॥ नवोविस्से
ओष्ठे ते वौ॥ अवर्ण ओष्ठे: वोपरपो वा सर्व ओकारो
६ भवति॥ समासे पति॥ बिम्ब ओष्ठः॥ बिम्बोष्ठः॥ बिम्बौष्ठः॥
अस्यू नञ्चतु॥ अस्यूनौतु॥ अस्यूनौतु॥ ॥ इति
स्वरसन्धिः॥ ॥ अथ प्रकृतिभाव उच्यते॥ ॥
मी६ नामी॥ अदसो अ सन्धि र्न प्राप्नोति॥ अमी आ ६
दित्या॥ अमी अश्वा॥ अमीरुका॥ द्विवचने॥ इस्व ऊव एव
दे॥ इकारान्तानां ऊकारान्तानां एकारान्त स्वरस्य द्विवचने व
र्तमानः सन्धि र्न प्राप्नोति॥ मुनिङ्॥ पटूः॥ राम ॥६॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

न॥ अवर्ग ऋवर्णे परे सह अर् भवति॥ तव ऋद्धिः॥ तव
र्द्धिः॥ कृ विदाने॥ अवर्णात् ऋवर्णे परे सह [illegible] विदारभ
वति॥ अरा॥ ऋणम्॥ अ र्णा सम्॥ शीतन ऋतः॥ शी
तार्तः॥ ऌ अल्॥ अवर्णात् ऌवर्णे परे सह अल् भवति॥
तवऌकारः॥ तवल्कारः॥ रलयोः सावर्ण्यं वा वक्त
व्यम्॥ पञ्च ऌकः॥ पर्चकः॥ पल्चकः॥ ऋऌव
र्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्॥ होतृ ऌकारः॥ होत्ल्
कारः॥ होतॢकः॥ ए ऐ ऐ॥ अवर्णात् एकार ऐकारे परे सह ऐका
रो भवति॥ तव एषा॥ तवैषा॥ तव ऐश्वर्यं॥ तवैश्वर्यं॥
ओ औ औ॥ अवर्णात् ओकार औकारे परे सह औ
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham
एव पञ्चपदानि मिलित्वा [illegible] ल्कारः लकारस्याः

सा॰स॰ ॥८॥

वाग्मात्रं ॥३ इति ॥ चर्यातपंचुं नंतं प्रदस्त: [illegible] तं प्रगंतं
यपदो उत्तर जो [illegible]

षट्स्थूर्द्ध ॥ षड्वं ॥ वाक्पत्या ॥ वागपत्या ॥ अमेमेनमा वा ॥
पदान्ते वर्त्तमानः खव ॥ अमे मे पने अमान व न्ति ॥ वाक्
मात्रं ॥ वाग्मात्रं ॥ वाक्मनं ॥ वाङ्मनः ॥ वाङ्मनः ॥ वा
ङ्मनः ॥ षट्मम ॥ षण्मम ॥ षड्मम ॥ एतन्मुरारिः ॥
एतन्मुरारिः ॥ एतद्मुरारिः ॥ मैपाभिविनिपेनेनं
म ॥ मपाभिप्रत्य स्पवे वपान्तं अमानि तं खः ॥
मे तमपं मा ॥ त्रिमपम ॥ तमपमा ॥ मिमत्त प
म ॥ वपादुः ॥ वपाद्वत्तं नस्पसकाव स्य
हो नामति ॥ वाक्हरः ॥ वाग्घरः ॥ होमंरमा ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

विपनितोत्रानरामामपपाद्विनयिमित्तद्धवंनं २

राम ॥८॥

स्सीदु [illegible] रीदसीव

मत्तेऽयानप॥ [illegible]ऐ॥ मरीचिवादिवज्जैं॥ मरीच इव॥ म
रीचिवादम्भपतिरिव॥ इत्यपनीवा॥ औ निपातः॥ प्राक्
नव्यौ कान्त निपातः॥ एकस्वरस्त्रि [illegible] न प्राप्नोति॥ अ
रवं नुमन्पे स्येनोऽन्नस्यात नमः॥ अत्र पेहि॥ इन्दुं प
स्या॥ उ उतिव॥ दूर्गादालनेदूत॥ दूर्गादाल्हानेगा
नेरोदने विवाने [illegible]भ्रु जोमवति॥ द्रुतः॥ द्रुतस्य सम
भिर्न्नप्राप्नोति॥ देवदत्तयहि [illegible] त्रा विप्रा॥ [illegible]॥ इति
प्रकृतिभावः॥ अथ पञ्चानकाचार्यभ्यने॥ व
पादेनवा॥ [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

विश्वस्तः॥ विहस्तः॥ प्रसन्नः॥ प्रहृष्टः॥ प्रमितः प्रभुः॥ सो
मृकान तवर्ज पोः षकान्तवर्जमन्यं पोजे [illegible]
टवर्जे पत्यासंख्ये न भवतः॥ स्वकनस्पषकारः॥ त
वर्जस्पटवर्जः॥ कसपटः॥ कष्पटः॥ कमृदी
कते॥ कृष्णीकृते॥ नत्तरीकृते॥ नद्दीकृते॥ ने[illegible]
दः॥ नवर्जस्पत्लकाचे पचेल्न काचो भवति॥ त
तेन्नाति॥ तष्णेनाति॥ भवानलिषति मव[illegible]
धि॥ स्प्रि नस्त्यादि प्रमे नेफवर्जितः प

तम
॥८

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ज्ञानबलेके चपेहु ॥ नवगोश्रीया अक्षर जानवो ॥

वपाइ त नस्य हका नस्य कपा वामवन्ति ॥ जहर्जगस्य
पस्त हर्जेगस्य तुर्तो भवन्ति ॥ तन्नहवि: ॥ नह्व वि: ॥ नह वि:
अवहलौ ॥ अमलौ ॥ अजलौ ॥ वाव्हहि: ॥ ताव्हवि: ॥
वाग्हवि: ॥ सोऽनुभिन्नु ॥ सोम्हकानतव जेपो: स्व
कानव वर्जी भ्यां पोसे श कानव वर्जो पपास ल्येन
भवत: ॥ स कोनस्य शकान: ॥ नव र्जेस्य व वर्ज: ॥ क
भवनति ॥ कश्नु नति ॥ कस स्नून: ॥ कशशुन: ॥ तन
वित्रं ॥ त वित्रं ॥ नतशस्रं ॥ तकात्रं ॥ नतशास्त्रं ॥ न
नागमव कानगुनन व सम व र्जका तेनवि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सी.स्व
॥१८॥

भवानत्तोति
भवांस्तनोति

सिमगमो भवति॥ पिक्ति ता वा घनयो र्वनपो॥
[illegible]नै॥ वि[illegible]इनै॥ राजन् विद्रम्॥ राजखि
द्रम्॥ शेवग्वा॥ नानस्यपदस्य शैपनेवावगा
गमो भवति॥ भवान् शरसः॥ भवाञ्छ नः भवाञ्श
नः॥ भवाञ्श्च सः॥ ञो ह्स्वादि स्वे नो॥ ङका
णकारनकाराणां ह्स्वादुत्तराणां द्विर्भवति स्वे
परे पदान्ते च॥ प्रत्यङ्ङ् इदं॥ सुगण्णिदं॥ सन्न
श्चिच्छन्नास्मिन्॥ राजन्नु॥ राजन्निह॥ कः॥
ह्स्वादुत्तरा इति किं भवति॥ स्वरे परे पदान्ते॥

सिम
॥१८॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वर्णाः शोष्ठनाशिका निनष्ठनाशिकाश्चत

त्रनकानस्पसानुनाशिक्र ए ब्ल कायेभव

ति॥ल षि॥ षकाने पयेत च र्गजस्पष्ठ न्नं नभव

ति॥ क्न षण्णः॥ णानन्यात्॥ पदन्ते वर्त्त

मानाट वर्गात्पर स्प स्तोः ष्टु त्वं न भव ति॥

पदन्न नः॥ षड् न नः ष ताम नः॥ षण्णींद नि॥

नष्टं पष्ठतो॥ नान स्व पद स्प हुते पचे॥

षड्सीर्दीन

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

गा५

सा० नकानस्यमकानस्पनापदांते वर्तमान स०

स्यानुसानेभवति स्संपने पू दांतेव

शानुसि॥ परांसि॥ पपानसि

॥१०॥ पर्णासि॥ पुमस्पां॥ पुंस्पां॥ पमा तन

पर्पेस्यथामु नेस्वानस्यपमा भ

वान्नपपेपने॥ स्त्रसपपसपसवकांः ॥१०॥

भवंति॥ तंकनौपि॥ तंकनौपि॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

श्री१

न्मस्थानां त्वंसेपणेवपाभवंति ॥ न
कावेम ॥ तक्रा वेमा ॥ वैदिवीर्वांद
पिवनाम्नपः ॥ हि क्र: ॥ न्वेक: ॥
मोऽन्तस्वान: ॥ मकानस्यात्तस्
नेभवतिहसेपणेपदान्तेव ॥ नम
हसति ॥ नेहसतिपदुमवर्ण ॥
परुंकण्ण ॥ नस्वापदन्तेस्ये ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सार विसर्जनीयस्य सः ॥ विसर्जनीयस्य सकारो भ स्वत

वति खसे परे ॥ कः तनोति ॥ कस्तनोति ॥ शष

११ से वा ॥ विसर्जनीयस्य वा सकारो भवति

शषसे परे ॥ कः शेते ॥ कश्शेते ॥ कः ष

क५ ण्डः ॥ कष्षण्डः ॥ [illegible] ॥ वा ॥ वि

सर्जनीयस्य कवर्ग पवर्ग संबन्धिनि ॥११

खसे परे ऌपौ वा भवतः ॥ कपावुच्चार

णौ ॥ कः करोति ॥ कᳵकरोति ॥ कः पठति ॥

क... CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

जेवलपने ज्ञलीषा॥ अनुसारस्य

तंतनोति। तनौति॥ सं पश्यति॥ स प्य

नो॥ सर्वस्पनः॥ संभ्रमं सन् रोक

रोम॥ कृत्यसि उष्णा नो ज्ञंका नमा

पद्यते स॥ पस हे पै भुप नतः॥ हं

सः॥ ह ज्ञंकः॥ स नेमः॥ अ उ स्वान

सामका नो भवति स नेपने॥ सं म

षि॥ समृषिः॥ इति प जानसमि

पर्वतिजर्यादि नस्पाते॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सा॰न॰

विशेषणान्तु॥ अहः रात्रं॥ अहोरात्रं॥ अहः रूपं॥ अहोरूपं॥
अहन पतनं॥ अहोनपतनं॥ अ...॥ अकारान्त्य
नस्य विसर्जनीयस्य उकारो भवति ... तिपञ्चतः॥ कः
अत्रः॥ कोऽर्थः॥ हवे॥ अकारात्परनस्य विस
र्जनीयस्य उकारो भवति हवे परे॥ कः गतः॥
कोऽगतः॥ देवः याति॥ देवो याति॥ मनः
मनोवतः॥ आदके लोप सः॥ अवर्णा
त्परस्य विसर्जनीयलोपश्च भवति
अवे परे॥ देवाः अत्र॥ देवात्र॥ वातः वा
ताः॥ वाता वांति॥ स...॥ अवर्णा

१२॥
राम
12

वि॰त॰
१२॥
राम

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Satyagya Sharada Peetham

निपातनात्साधवः ॥ वाचः पतिः ॥ वाचस्पति
तद्बृहतोः करपत्योश्चोरदेवतयोः सुट् त
लोपश्च ॥ जध्नुरोनात्पन्नं त
त्सर्वं निपातनात्सिद्धं ॥ तत्करः ॥ त
स्करः ॥ बृहतपतिः ॥ बृहस्पतिः ॥ अहो
रेफः ॥ विभु ॥ अहो विसर्जनीयस्य
पदान्ते रो भवति ॥ रानादिवर्जितेषु
परतः ॥ अहः पतिः ॥ अहर्पतिः ॥ अहः
गणः ॥ अहर्गणः ॥ अहरानिविती

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ऋग्निनवा। पञ्चः पञ्चते पञ्चर्जप नो। स्वन:

नेफप्रक्तीति कस्यरवपेवा। नेफप्रक्तिक

१३॥ स्यविसर्जनीपस्यरवपेपनेवाने

फेभवति। गीःपतिः। गीर्प्पतिः। गी ॥१३॥

ष्पतिः। धूःपतिः। धूर्प्पतिः। धूष्पतिः। उ

पसोऽवो। उपशो। विसर्जनीपस्यप राम

नेभ्रतिवेपनो। उ[illegible]। उ[illegible] ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

त्परस्यविसर्जनीयस्यसत्वंनामवतिस
येपरे॥देवाःअत्र॥देवायत्र॥भोसः॥भोस
भगोसअघोसइत्येतस्मात्परस्यविस
र्जनीयस्यलोपोभवतिस्वरेपरे॥भोः
एहि॥भोएहि॥भगोःनमस्ते॥भगोनम
स्ते॥अघोःयाहि॥अघोयाहि॥नामि
नोरः॥नामिनःपरस्यविसर्जनीयस्य
रेफोभवतिस्वरेपरे॥अग्निःअत्र॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

रैत्रो नमस्कारम?

सा.न. सैषनाजाउविष्ठिरः॥ सैषकरणो महात्मासी॥ स.न.

सैषभीमो महाबलः॥४॥ इत्याद्यौपादपूरणेस

र्पणी॥ पडुनंनौ किकापेहजनेदेवडु नंभ

॥१४॥ वेत॥ सेमासु म्यांडुदेशोषा भित्पाईनांमडु ॥१४॥

पता॥५॥ कविन्ना मिनोनो पश्च॥ कविन्ना राम

मिनः पनस्यविस जातीपस्य नोपे भवति॥

प्रवेपने॥ कविस्रवति॥ कविद प्रवर्तितः॥

कविद्गमा पाडुविदनदेवः॥६॥ विषे

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

विषानंवकुधासमनोमयवानुविधिबंगडु नमे

नः॥ रेफसंभिन्ने विसर्जनीयस्य रो भवति स्वरे॥
प्रातः अत्र॥ प्रातरत्र॥ अग्निः रतः॥ अग्नी रतः॥
रि लोपो दीर्घश्च॥ रो रस्य लोपो भवति रेफे परे
पूर्वस्य च दीर्घः॥ पुनः रमते॥ पुना रमते॥ रुचिः
रूप्या स्म ना भाति॥ रुची रूप्या स्म ना भाति॥
सैषदसे॥ सएष दादेः परस्य स्व पनस्या वि
विसर्जनीयस्य लोपो भवति॥ हसे परे॥
स चरति॥ स चरति॥ एषः हसति॥ एष हसति॥ एष हस
ति॥ सैषादि संहिता॥ सैषदाशरथी रामः॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible]
हृस्य समचरराणांसारे [illegible] प्रकृतिः [illegible]

सार॰ त्र्यविभक्ति नामा॥ विभक्तिरहितं धातुवर्जि

तं चार्थवद्रूपं नामोपैताः कृत

त समासाश्च॥ प्रातिपदिक संज्ञा इति केचित्॥

२५ तस्मात्॥ सि॰ औ॰ जस॰ अम॰ औ॰ शस॰

टा॰ भ्यां॰ भिस॰ ङे॰ भ्यां॰ भ्यस॰ ङसि॰

भ्यां॰ भ्यस॰ ङस॰ ओस॰ आम॰ ङि॰ ओस॰ ॥१५॥

सुप॰ तस्मान्नाम्नः परस्यादयः सप्त

विभक्तयो भवन्ति॥ तत्राप्यर्णमात्रे कव

विवक्षायां प्रथमैकवचने बहुवचनेषु इति रामेति

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविका-
रनाशौ ॥७॥ धातोस्तदर्थातिशयेन योगस्तदुच्य-
ते पंचविधं निरुक्तं ॥ वर्णागमो गवेन्द्रादौ सिंहे
वर्णविपर्ययः ॥ षोडशादौ विकारः स्याद्वर्ण-
नाशः पृषोदरे ॥ वर्णविकारनाशाभ्यां धातोस्त-
दतिशयेन यः । योगः स उच्यते प्राज्ञैर्मयूर-
भ्रमरादिषु ॥८॥ ॥इति विसर्गसंधिः॥
॥ अथाविभक्तिर्विभाष्यते ॥ स्या-
दिभ्या ॥ स्यादिः सुपादिश्च ॥ विभक्तेस्तंप
दय ॥ तस्यादि द्विर्भा [illegible] कोपो वते ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सार

अमृश्यसे॥ रसा॥ समानादुत्तरस्य ष्णासौ नकारस्य लो
पो भाति ॥ यथा ॥ देव मृदेवौ ॥ दितीयावहुवचने देव
श सइति स्थिते ॥ शसोऽनुदेवश्च शीति ॥ विशेषणा ॥ पूर्वे॥ ॥सा॥

२६ सोनः पुंसः ॥ पुंलिङ्गा समानादुत्तरस्य शसः स
कारस्य नकारादेशो भवति ॥ शशि ॥ शसि परे २६
पूर्वस्य दीर्घो भवति ॥ पदादेशस्तु भवति ॥ न

16 नुवर्णमात्रविधौ ॥ देवान् ॥ तृतीयैकवचने देव टा रामः
इति स्थिते ॥ टकारोनो टेनेति ॥ शेषः टा
षः ॥ टेना ॥ तकारात् परे नपरइनं भवति ॥ अष्टर
षु ॥ एवर्णोऽतिर्भवति ॥ देवेन ॥ अभि ॥ एना

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ते॥इकानउ ञ्जनार्थ॥सो विसर्गः॥सुकानरेफ

पो विसर्जनीपादेसोदेशो मवृति धानोनस्ते

पदोनेव॥ [illegible] नुते॥देवः॥ द्वि

वविद्वापामो॥ श्रो श्रोत्रै॥देवे॥वहुव

विद्वापा वहुववनेदेव.जस इति स्थिते॥जका

रस्येत्संज्ञापो नस्यलोपः॥ प्रयोजनंतुज

सीतिविशेषया॥पः॥दीर्वविसर्जौ॥देवाः॥प्र

काराजसोऽयक विद्यत्वः॥देवाश॥ब्रम

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

स्थासः॥ द्वितीयेकववनेदेव.अम इति स्थिते

सा न.

ङसिन्नत॥अकारोऽङ.सिनन्ददाति॥सवर्णेदीर्घःसह॥ खत.

सवर्णस्य सवर्णेपरे सह दीर्घो भवति॥देवात॥देवोभ्यां॥

देवेभ्यः॥ बहुवचने देवङ.स्य इति स्थिते॥ङस्य

स्य॥अकारात्परे ङस स्यो भवति॥ देवस्य॥ओ

सि॥अकारस्य ओसिपरे एत्वं भवति॥ एषाम्‌आप॥ तम

देवयोः॥ डामः॥समानात्‌नस्य मोत्र ऊ॥

मो भवति॥ विशारादौ॥ अकारस्लानीपम

॥ उकारऊवानरागौ॥ नाम्नि॥ नामि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

तस्मात्त्वं भक्ति भक्ता ने पने॥ देवा भ्यां॥ [illegible]॥ प्रका
त्माप्तस्य मिसं भक्ता तस्या का॥ चाँदरा॥ जवा
प्रइय॥ प्रहेरो॥ दवै॥ प्रकातस्य मि सिकृत स्यो॥ का॥ नेव
व त्रप्प॥ देरे मिः॥ कलोमिः॥ वजु पे केववने देवङ
इति स्थिते॥ ङः का नो ङिः का यैां पः॥ सर्वत्र॥ ङःन
का॥ प्रका॥ प [illegible] भवति॥ [illegible] ने॥
स्प्रय॥ दे॥ वा प॥ देवा भ्यां॥ स्प्र सिवहवे॥ प्रकात स्य
स्वं भवति सन्ता भक्ता न वप ने वहु वे सन्ति॥ देव
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham
वे॥ [illegible] भवति ने दे उ [illegible] सि सिया ते॥
ङः ङस तस्या गा ग [illegible]

अभिभूत्वा निव्याप्तये ॥ हे स दस प्राप्य
गः ॥ हे देव ॥ हे देवौ हे देवाः ॥ एवं रूप समस्त
आदेशोप्यकाना: उद्दिष्टः ॥ अगताना ना
१८ मपि समवीरी नात्र विशेषः ॥ सर्व० विश्व० उ
भ० उभय० अन्य० अन्यतर० इतर० डतर०
18 डतम० कतर० कतम० सम० सिम०
नेम० एक० पूर्व० पर० अवर० दक्षिण० उत्त
र० अपर० अधर० स्व० अंतर० त्यद्०

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पर्वस्य दीर्घो भवति पदेवानां भ॥ सवर्णमध्ये कवर्गनो

स्रुपतिस्थिते॥ घ्र३९॥ दे३॥ देवपा॥ दे३श पइतिनि

ते॥ द्विगामकलसा॥ कवर्गा द्विगा न प्रयाहा गं

ङ तो नस्य के नवि स्वेराम तस्य सकान स्य य कोगा

देशो भवति॥ देवे ७॥ आमेवते सिद्धि॥ आमे

ने नरां म्मःभिमुखकनरांतस्मिन्नपे विहि

तःसिद्धिस्स ज्ञको भवति॥ समानादेवौ पो

पनो॥ समानाङनन स्य ङे वौ पो भवधाने

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

श्रीग

नेभ्रू अवर्गेभ्य: परस्य नस्य णकारा सार
देशो भवति॥ अन्ते स्थितस्य नमेति
१८ सौनइत्यादै॥ अवकुप्पंनानेपि॥
अवपवाह नेण कवर्जेण पवर्जेण १८
नव मध्ये पपाव भानेपि णत्वं भवति रा.म
नाम्पेणा॥ नवैणा॥ सवीम्णां॥ स
वैः॥ चतुर्भिकतवने सर्वै॥ इतिसा

19

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

तर॰ पर॰ एतद॰ इदम॰ द्वि॰ किम॰ युष्मद॰
अस्मद॰॥ एते सर्वादयः स्त्री लिङ्गाः॥ तत्र
पुल्लिङ्गत्वेन रूपं नेयम्॥ सर्वः॥ सर्वौ॥ ज
सो॥ सर्वादेनकारे जातस्य जेजस ईकारो भ
वति॥ अइए॥ सर्वे॥ सर्वम्॥ सर्वौ॥ सर्वान्॥
तृतीयैकवचने सर्वेणाइ ति स्थिते॥
टेना॥ डेर्ना रोऽनेन॥ सर्वे र

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सार॥ मात्॥ सर्वास्याम्॥ सर्वेभ्यः॥ सर्वस्य॥ सर्वयोः॥ सार

॥२०॥ सर्वेषामिति स्थिते॥ ङस आमः॥ सर्वादेरका

रान्तात्स्यामः सुडागमो भवति॥ सर्वेषां॥

ङिस्मिन्॥ सर्वादेरकारान्तात् ङेः स्मिन् भवति॥

सर्वस्मिन्॥ सर्वयोः॥ सर्वेषु॥ हे सर्व॥ हे सर्वौ॥ ॥२०

एवं विश्वादीनां मेकसहप्रजनानां रूपं नेयम्॥ उत्तरस्

मा किम्पनीष्वन्यतरस्याम्नास्काम॥ पूर्वः॥ पूर्वौ॥ राम

पूर्वादीनां नवानां जसि इर्वा भवति॥ पूर्वे॥ पूर्वाः॥

ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ वा वक्तव्यौ॥ पूर्वस्मात्॥ पू

र्वात्॥ पूर्वस्मिन्॥ पूर्वे॥ एवं परादयः॥ [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ते॥सर्वस्मै॥सर्वादेनकारान्तस्य
चतुर्थ्येकवचने ङे स्मै न स्यात् स्मैडागमो भ
भवति॥ङेतानस्थानीयमार्ये:॥स
र्वे॥सर्वस्मै॥सर्वाभ्यां॥सर्वेभ्यः॥प
ञ्चमेकवचने सर्वङसि इति स्थिते॥ङ
सिन तः॥तस्मात्स्मान्तः॥सर्वादेनकारान्ता
त्पञ्चम्यां ङसि: स्मादागमो भवति॥सर्व

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

भ्यां ॥ द्वितीयै ॥ द्वितीयेभ्यः तीयस्याः ङि॰ ॥

सर्वद्वं पंवत्कं रूं ॥ द्वितीयस्मै ॥ द्वितीयाय

द्वितीयाभ्यां ॥ द्वितीयेभ्यः ॥ द्वितीयस्मात् ॥

॥२१॥ द्वितीयात् ॥ द्वितीयस्मिन् ॥ द्वितीये ॥ ए

वं तृतीयः ॥ उभशब्दो नित्यं द्विवचनान्तः ॥ उभे

उभौ ॥ उभौ ॥ उभाभ्यां ॥ उभयोः ॥ द्विवचना

उभे ॥ उभयं ॥ उभयाः ॥ द्विवचनाभावः ॥

~~... उभयोः ॥ उभ~~

~~... उभयाः ॥ उभयेषाम्...~~ ॥२१॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नपापडलपार्द्धक्रितिपपनेमोनोजनीगाप्र
[illegible] मैा॥ पुत्य मे॥ प्र पमो॥ पे पंच
दे व पत॥ निमः॥ नेमो॥ नेमे॥ नेमा॥ सेवकसर्वत्र
ततनपापडोप्रत्यपौततनसदनोसद्धाग।
त्यो॥ द्वि[illegible] पः॥ द्वितपो॥ द्वितपे॥ द्वितपा॥ द्वप:
द्वपो॥ द्वपेद्वपा॥ द्वितीपः॥ द्वितीपो॥ [illegible]
व॥ [illegible] वे॥ द्वितीपा॥ द्वितीपं॥ द्वितीपो॥
द्वितीपान॥ द्वितीपन॥ द्वितीपेन॥ द्विती

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

92

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

गौरादि
आयाद
योवा
१

श्रीगणेशाय नमः अथ कृदन्तप्रक्रिया निरूप्यते कर्त्तरि कृत् ॥ धातोर्वक्ष्य
माणाः प्रत्ययाः कृत्संज्ञकाः स च कर्त्तरि ण्वुतृचौ धातोर्ण्वुतृचौ प्रत्ययौ
भवतः डुपचष् पाके पच् इति स्थिते नामत्वं ज्ञापयितुं स्यादिर्विभक्तिः
सु नात्र पचतीति पाचकः करोतीति कर्त्ता हरतीति हर्त्ता ऋतः धातो
रस्य धातुप्रत्ययस्य वसादेरिडागमो भवति भवतीति भविता
एषिता उदितो वा उदितो धातोर्वा इडागमो भवति गुपू रक्षणे गोपायि
ता गोपिता गोप्ता सहिवहोरोदवर्णस्य सहिवहोर्धातोरवर्णस्य ओका
रो भवति ढलोपे सति सोढा वोढा युवोरनाकौ युवु इत्येतयोरनकौ
इत्येतावादेशौ भवतः यथासंख्येन पाचकः शोभनात् अत उपधाया
वृद्धिः पठतीति पाठयति पाठकः कारकः स्रावकः भावकः
लावकः इत्यादि । नृपवनतेर्णावौ नायकः भावकः लावक १

[illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ऽयमाते आतो रवाप्रत्ययो भवति कुंभकारः उग्रकारः आतो ॥ ३
ऽपि प्रज्ञशोपश्यः घटपाले उष्टपः पापाले उस्थिलः ग्रंगपोपादाने
उणिश्च गोष्ठः ऽयत्तादेशः ऽपालः तंपःसं तापेसापः पथिगतो पान्थः
आदोऽद्धिः पञ्चान्नुनागमः कार्ये आत्मनेपदि प्रत्ययं आकारान्तात्
लोऽप्रत्ययो भवति गोदः धनदः नाम्नि च नामन्यप्रत्ययमाने प्रत्य
२ यो भवति दाम्भांपिबतीति द्विपः ध्रिजः ऽरुहस्थः दुग्ने गावः दुहतीति ध
द्रुः भुवः लुट्भुवः शुद्धस्यादेशो भवति द्रुपदे उपसः सन्तोषो नुम्भ्या उपसगा
३ द्धतीति उपगः उरंगः विहायसो विहच विहायसागच्छतीति विहगः विहंगः
सर्वेनाम्नि कार्ये सति अकारट्कारोप्रत्ययो भवति टकार इष्यर्थः म
स्थिहयतीति मुस्थिहयः स्वांकवचंहरतीति कवचहरः कुमारः धनुः
धनयतीति धनुर्धरः धनतिजनः कुलभरतीति कुलभरः कु
लवनी ऽकर्मणि कार्ये सति ऽकारः कवकः मेतःप्रत्ययो भवति

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पध्यात्कः नाम्नुपधाप्री तोः कप्रत्ययो भवति ककारो गुणाप्रति
षेधार्थः क्षिपप्रेरणे क्षिपः भिदः प्रियः कृग्नक्ष्यश्व कप्रत्ययो भव
ति लुधातोः प्रीणातीति प्रियः कृन्तीति किरः गिरः जा नाति ग्व
स्यः आतोनपि इत्याकारलोपः पचिनंदिग्रहादेव प्रदिति पचा
देर्नघादेर्ग्रहादेश्च अपुमां ति इत्येते प्रत्यया भवंति यथासंख्येन
पचः वदः दीव्यतीति देवः नंदयतीति नंदनः वर्धनः मर्दनः दूषणः
साधनः शोभनः रोचनः पापनः दमनः सेर्घुवा ग्रधातोर्युप्रापत्यया
त्ययो भवति रोति रावः पतिग्रावराः उत्रहः लीहि ग्राही विनाधी इशा
देशः इषादेः धातोः शप्रत्ययो भवति शाकवः श्रि त्वा पर्यार्थः पीतिं वत
र्तते क्षितिप्रत्यये परे धनकोतिवा दिष्ट पत्काप्ये मतान्तं भवति इ

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मो२ ग१

मावैतोहइत्यादिसोहं:प्र:सा ढिालअ्रगांविस हतेलुयाषाटलेनासाहौनुरासा
हरित्यादिनोघातेः ध्यातोर्मकावस्यलकामादेशोभवतिप्रवषेरासस्वती
तिप्रशानस्वमूलमदावेलालनवलिपोगेष्विः वोदीर्घः ईनास्वयोपरेस्वबती
स्यईकारोभवतिअ्रन्यस्यरस्यदीर्घोभवतिचकारोव्यपार्थः वेरितिलि
३ लोपः स्वमिपुनंमिपुनं पते स्वनेनेलिलिपुनीकयांस्वर्ट्लोःश्रृली ३
मृषतेधः लीनाषः स्वसहापः सपस्यात सर्हांपीस्यातेस्रोहेतः हेतः कृते
हेतेकृतेवोपालोपश्च ऽनतोमावः ऽवेकरिचतेष्पः ऽ:रवाकतोमी
२४ महाकरतोलीस्वातेमतिघातिपदुनिवः स्त्राधारांताध्यातोर्मसिपुकजि
पर्वनिपइस्मेतेपूस्यपामवंतिरुपरांतीतिमुदामायाजनराच्यवतप्र
तिपास्थामीस्यापाजादौनोमीर्मजतिकितिपरेनाकेपिइपवइस्वे
[illegible] तोगीशपपिर्यतीतिनपिता हरितजाग्र नानोपिइस्यपो

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

आत्मानं विमन्यं सकने तीति स्तनंधयः ञ्चिः आप्नृ व्याप्तौ देवान आप्नो
तीति देवाप्रिः वाताप्रिः खिति पदस्य खित्प्रत्यये परे पूर्वपदस्य मुमागमो
मो भवति लेभं करोतीति लेमंकरः प्रियं वदतीति प्रियंवदः आत्मंभरिः
१४ उदरंभर... तीति उदरंभरिः एजोः खश् एजृ कंपने इत्यादीनां खश्
प्रत्ययो भवति खश् खकारो मुमागमार्थः शकारश्चतुर्थ्यकार्यार्थः जना
न् एजयतीति जनमेजयः पंडितंमन्यः मन ज्ञाने खसूत्रे शोधातोः कर्त
र्यर्थे खश् प्रत्ययो भवति अनग्नो नग्नः क्रियते अनेनेति नग्नंकरणः प्र
सुपूर्वं करोतीदं भि मनोविधा मनोक्षीनां विनप्रत्ययो भवति कर्तरिवि
वेशे पो भवति मजसे वापांश्र्थ्यं भवतीति अर्धमाकृत
त्यप्रा ८ वह प्राप ने मार्ग वहतीति मार्गवाह ८ वाहोवैभ्रमासे स्वने मा योह
नत्यं ८ ... मीत ...

न स्य ... सूत्रं ... नेति ... तिः

दृष्त ३ दृशोव

त्रिंशीसो चिंशद्रस्येदमशब्दस्य की ईशा इत्येतौ ... तावादेशौ भवतः
ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् पितिप्रत्यये परे ह्रस्वस्य तुगागमो भवति क्विपः
क्विप्सर्वापहारी लोपादेशो भवतः कइ ... ते इति कीदृशः कीदृक् की
४ दृशी कीदृशी अन्यमिवाइक्ष्यते इति ईदृशः ईदृक् ईदृशी अदोमूः अदस्शब्दस्य
अमूदृशी ५ दृशेष्वसकादिषु प्रत्ययेषु परेषु अमू भवति अमूमिवाइक्ष्यते इति अमूदृ ४
शः अमूदृक् अमूदृशी समानस्य सः समानमिवाइक्ष्यते इति सदृशः सदृक्
सदृशी ६ सदृशी भवदादिषु दृशेर्विधानात्येभ्योपि स्यादेवं ... तादृवतो आभवाद्दृशः
त्वमिवाइक्ष्यते इति त्वादृशः अहमिवाइक्ष्यते इति मादृशः शितिचतो
२५ ते धातोर्नस्ती तकारादेशितेष्वेतेषु शिति निप्रत्ययो भवति अग्निष्टोमेन इष्टवा
न अग्निष्टोमस ... जो मो उस्मो मो जो क्विपश्च निष्ठा: धातोर्नकारे

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नारायणा भीवहो इभ्यां क्विपः सर्वापहारीलोपः श्रीरसेवाचां [illegible] सुश्रीः [illegible]

क्विप्
चिता
सोमपा
पतिंस्प्र
[illegible]
उपानह
नीति
[illegible]
जलेबंधने

सक्र्मोपि क्विप्सर्वधातुभ्यः क्विप् प्रत्ययो भवति स्पृश् अपतीति कर्म
कृत अग्निचित् सो। नीति अग्निचित् देवान् नीतो नीति देवयज्ञ सोमं पिब
तीति सोमपाः सर्वं पश्यतीति सर्वदृक् केदिसां मितिकृत्वे [illegible]
सुष्ठु प्राप्तं सुधीः [illegible] प्रकादेः दीर्घः तावदक्रव्यात [illegible]
[illegible] नीति तत्त्वप्राट् [illegible] उपानत् न [illegible] पसर्गान्त्य दीर्घ
लावचनकव्या करचि की [illegible] ६
शेषकस्कौ चोपमाने कार्ये हशोर्भा लोप कस कौ प्रत्ययौ भवतः चका
रात् क्विप् च कार्ये [illegible] उपमाने सति आसः वादेः हशे प्रत्यये उपपदे तत्
सर्वादेः छेरा [illegible] अम्भवति अन्य इव दृश्यते इति अन्यादृशः अन्यादृक् अन्या
इव अन्यादृशी [illegible] इव दृश्यते इति तादृशः तादृक् तादृशी विः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सं धौत ना [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कालेशिलेच क्तिप क्त निपठा इत्येते प्रत्ययाः भवंति वक्ष्यमाणः भासता
पित्वा तक्त किला उणाः भावः संवसिजं सा भजः क्त क्तवतू धातोर्वर्तमाने
काले क्त क्तवतू प्रत्ययौ भवतः भावे कर्मणि च क्तः कर्तरि क्तवतुः उकारानु
बन्धार्थः कृतः सृतः हृतः कृतवान् आजगाम स्थितः देवदत्तेन भवेत् नयं
भवे गत्यर्थादकर्मकाच्च कर्तरि क्तः गत्यर्थादकर्मकाच्च धातोः कर्तरि क्तप्र
त्ययो भवति गतः स्थितः ग्लानः सेट् क्तप्रत्ययो वा किंवद्भवति प्रवे
तितः प्रपतितः रोदितः रुदितः वेदितः विदितः मोषितः मुषितः ग्रहीतः
गृहीतः इट् उद्गन्तादीनां इकारो भवति कितः उकारान्तात् धा
तोः ताश्रीपश्च धातोश्च अनस्य कितः प्रत्ययस्य उनं भवति भूतः श्रुतः
श्रीतः श्रा हीदितः श्रादित इदित्स्वेत् भवति भौतां तके वर्णि नातेपि भौ
तो धातवो [illegible] भवति धते भाते कार्ये इतिस्य नो देवदत्ता वहु

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

दौ निर्वातस्तु गते। निर्वे ३ निर्वाणोऽग्निर्निर्वाणः लोपो दीर्घश्च १

लोटः इति ऊ लोपः स्तंतयोर्वा ३ ऋ विषु क्तः टि टौ डुडुडडूड्वा पक्व क्षाम संवर्गोऽसं
वीतं क्ले अकार्ते ग्राहूतः वेदस्य स्तापो चापि वचपरिभाष यो उपदिते उक्ते
उषितः ज्ञातः स्थीयाः जितः हीयाः क्रितः जिव्योषाः निर्वीते सपक्षो वेभः
कर्मोते भवरोस्तु ८ संस्कृतः परिस्कृतः उपस्कृतः जनेजी ज्ञातः पत्नोवः
पक्वः सुषेव्यः शुष्कः स्फायः स्फीति विति स्फीतः [illegible] राधेप्रत
तोः धस्तुक्ता शोपूस्वपो भवतः १ तौ ते कालेतौ वर्तधेयेत राजादिवन्दा
वार्दिर्वेचनं पश्यामापतयाश्च सपर्धा ऽते तथा कारः द्विविधा नचं
धानेव आगा शतसा नौ तिपूर्वक्लिपापा क्रियापदे गम्यमाने धातू
शाखा नौ पूस्वपौ भवतः तौ चतिपूर्वत इति परस्मैपद आत्मनेपद मोर्भवतः पू
धना स्तेपठं जतिठ तिशाप जगच्छति मृगानेतः श्रुकाम स्मानेपरे भगागने
नेयतिय वनाहा पठति पठनाय त्रिवृति भाषेवा तत्र वेदामापीतिनः वा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ष्यति काले तु भ्रूस्य त्यपो भवति तद्यथा पांक्षि पापं प्रउ अमालापं मो कुं वृजति
पठित मिष्ठ स्या तुं ईं ह तेषु अभावे आसो भां वे । पेंषु अप्रत्यपो भवति चेजो ठ
जौ क्षिति चेजो: कावगको सो भवतः क्षितिपदे पेव: त्याग: विभाग: प्रयागा
प ज्ञा गे नक्षित्रं [illegible] इत्यागतौ अपन आप: भोवतं भाव: हप:पा
प: आ तो प्रुव संज्ञा पां [illegible] वर्णेरि चक [illegible] नै वर्जिते काव वे भावे च द्रे अत
यो भवति संज्ञा पां विषये प्रतिका र्यमाह तेदितिप्र त्यला व: दीप तेइ ति दाप
विक्षिप तेश्च ने मे तिलिकावः स्यचाद्धः स्वना घातोः रप्र त्यपो भवति भावा दे
विषये व प तं व पः संजीपतेइति संज्ञ तव: नप: उन्नप: नविलोपे त्रिपते
कापादि मिरिति नर: हदाभ: मदकी नां भप्र त्यपो भवति भावादे विषये भर्गो
दर्पमद: प्रमापते । नपेति प्रमदापगा: मप: [illegible] : हपदे सं [illegible] यमउपद

दीर

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ॐ १

रिर्वचनं राम्नः सेत्मेपप्सिजें देदिजुश्चक्तिरस्मुतंपाययान नवविनाजक्रिः
यौंड्वी वे महाष्ठिजान २ तिसदेतोऽप २ सार्वेस्मिन्न्यात्येउरादयः षु
त्यपाः मजेति ऊ त्रौतीति काष्ठः वागतिज धनेपाः वा नीति वायुः स्वातेपुक्तो
शतीति ओष्ठकुसु वाने त्यप्रत्ययः स्वरकुशो स्तललानस्यगनने मतिप
प्रत्ययः स्वरतीति स्वात्मा वहं चंहं व्योधं तत्वात्वं हरात्याद्यावृर्लिन
निपपत्समपः धावशां धर्मः धा देः ति वृ ति घस्नकंप नेग्रां गे जुष्टिंगत
र्याः स्वगति स्वगिनः मार्येगें निःप्रत्ययः मौवी इष्टे इतीश्वरः पस्यत्पद
स्यावरः राजादेव नराजा वा जारा राज मारुदे दिप्रो व चादेवसवंचः म
सोभार्थे केति मः मि देवि मंच्छा छ पचे वि मांस्राट क्यः उणादयो
परिमिताः प्रयोगम नु स त्यपुको नेसा नेम वा अवियभितिया तो मेवि

मवेशिनिः ८

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

साधनाधारे प्रैं कृद्ग्रस्य प्रो भवति पचनेऽग्निं पचनी स्थाली ईषद्दुःसु
सुखल्पः ॥ घदादिभ्य प्रत्ययः सुमा जेभ्य खल्प्रत्ययः स्ये नोग्र स्य प्रो भवति भा वा
दोलका वः प्रत्य भेद ज्ञाप नार्थः ईषभ्दल: दुर्भेद: ईषल्कर: दुःकर: सुकर:
ऽगौर्भितः पुंसि प्रहारोनव्यानीपोव्यालोलव्यानीपोप्रस्य प्रो भवति ॥
मलिनव्यं स्त्रानीपं कर्तव्यं कर्तरीपं इ ऽ ऽनहो ऽनहादीनां मिऽईका ८
नो भवति गहिनव्यं मसंमको वमीनव्यं स्वनाप्य: स्वनं तु भातो
पिप्रस्य प्रो भवति मघादे चेपं अ पेऽनप्य: पे पंस व्या पे नप्यं पं सोवि
त्रं जीवये पुराकात पवगीता भूसेंग ऽ कावदेश्च पप्रस्य पो भवति
न्यनं शक्तं भीषा ईषात: स्त्रे कामं ता भानोपिप्रस्य पो भवति स्त्रे कावस्ये का र:
देपमजे [illegible]
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

३५

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मास्त्रेक्तिन्प्रत्ययो भवति क्तित्वात् संप्रसारणं इ... सम स्याग्रजंगतो लोप ले च वृ
त्तिः हस्ताक्तिः भावे स्त्रि प्रत्ययो भवति स्त्रियां भावे भूतिः पक्तिः वित्तिः नेपति
उक्तिः संवित्तिः शान्तिः ज्ञातिः ईयाद्(?) ... इश्वरः संगीतिः कार्तिकी... प्रभुत्व
त इति प्रकृतिः इकस्तिपौ धातु... निर्देशे पचिः पचतिः भिन्दिदा मङ ... भिन्ने
धातो भिदादेः स्त्रियां अङ् प्रत्ययो भवति पचाः ... ज्ञुष ... म ... जामिद
छिदा ... तन्त्राण नुवंश रक्षि ... प्रत्ययो भवति ... हिंसात ... नो
हसो ताद प्रत्ययो भवति स्त्रियां विषये इच्छे छायां इति ... वित ... ह ... ई ...
दर्शनां कलयोः इच्छाप्रत्ययात प्रत्ययान्तात् ... नप्रत्ययो भवति चिकीर्षा
बुभुक्षा पूर्वकाले क्त्वा: पूर्वकाले क्त्वाप्रत्ययो भवति तत्र: न कर्तृके धातोप्र
ग्रस्मा ... त्वा ... मुं ... भ ... क्त्वा प्रत्यय ... ते ... ... पिला ... हया
तन्दाद ... ... दत्वा ... दिवा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

प्रत्ययो भवति कार्यं भाव्यं वाच्यं वाच्यं हस्त हस्त नेत्रास्यं ... त्यात्के कायो
४ पि वाच्यं ये ९ ने भा ... का व्ये पो र्थि हि ता स्त व्या द ये स्तः हे यि जौ च व त व्या ४
नाने भे से इधा दर्श नमों इ द व्य: म्रु भ्र व रो श्चे ता त व्यं ये चि ता पां ख्या त व्यं म्रो
मावश्य के ऊ वर्णा ता दा व श्य के: ये ष्य ता पु स्व चे भ वति म्रो दे तो र्थ: स्व च व त
म्र व श्यं भा व्यं म्र व श्य: या भ्यं स म्रा से: व स्या ... दे तां भ: श्यो यो नि इ र्मि ... पे ९५
द व स्य भ: क स्ये तु ध्या भय न सो न पि स भो वा हि त न पो म्रा स स्व प नि पु थ
म्रो त व्या दी नां क स्य सं ज्ञा पा शि नी पा नां म्र व श्यं त्या व्य: म्र व श्य स्यो ... व्य४४
भो तु ध्या भ: म्रो तु भ ता: स हि तं सं हि तं स त: तं सं ते तं ना स स्य प च तं ना व प
प च तं ना व पा क: स्र टु प धा व प य स्र दु र्य द्यो तो व्य प्र त्य यो भवति भो व ध्ना
र्य पो: ष त्यं से तो जो द तं तिस्त्यं द्वि पा ना वे व्य य ... द ये र्या ते: द्वि पा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मुकुन्दजीवही

कर्दम० ५

९० लमन्मसमस्त्वीक्ष्मां चक्रेपृक्षिपां यस्नोविता स्वयता हप्तः ९०

मीयः केमाला कन ईश्वनः समुया सुअव मा क न मे भुपापी नपेधनः १०

१० इति श्री मनुभाति स्वरूपा वार्त्ते विवचिता सानस्मतपृति ५

पामापृता [illegible] शुभमस्तु १ श्रावै [illegible] सपुष्ठ मपविभिते शुभमवे

३। केमेच॥ श्रावाटे कृष्णपञ्चौवतर्दशी मुकेआसमे श्री [illegible] श्री [illegible]

पौ० मे०

CC-0: Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

छुंधस्यवस्तं०

को२ ना१ ५४

यस्त्रिवासेवसि कुचोविदडषित्वाकुपि [illegible] ाउदित्वाअस्तंयतोः प्रतिपत्ता
मलेभ्रक्षौरवल्गं सोडदितः [illegible] वेट षित्वाइडासमासेध्यप्रसमासे सति पूर्व
कालेध्यप्रत्ययोभवति तत्र तं [illegible] पे षधातोप्रत्यमा जे संभवत्यकनोति ग्रामपु [illegible]
[illegible] प्रगाम्यगछति अनभपूर्वइत्येके कृत्वाध्यपि अग्नेगुरास्वपरिशाभ्यभंक्तेत
तकालेपि ध्यप्रत्ययते नेत्रे संमिल्य तसति मिलति मीलतेः भरयव्यादापस्थापितिषे
नेः पुनेनम्यदंदिस्ससमाक ते क्षेषधातप्रत्यया ने पूर्वकालेप्पेपोतः पुरोपग्रा
ि६ म्यप्रत्ययोभवति तस्यपदस्यद्विर्वचनं [illegible] पापंपापंगापतिभोजंभोजंव्रजति ध्यप्रत
र दिभुस्वार्थे राक्षिभः ध्यपंधानेइत्यंकानंभुजोभावे प्रत्ययपूर्व [illegible] भूपं गतः लक्ष्ये
२४ गे [illegible] लघ्वदर्शनां नपोः नप्तृीः स्यापतें [illegible] पादसंजातपोः नेपः
तपोगोलतस्यनेपः टि आदीपश्रीवर्णाकारः अकारः बकारः नादिफा नेप
स्कोस्तकानादेनि नामानि अुतान्त सनाजयाः नतानियमनीपानिसंज्ञासेजव
पतिदोवधिपस्पविदिपदाललाये [illegible] तो धीमनलादिशब्दोभप

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

न२ उृध्दैतेपे४

११ वन्तः अः॥ निर्दिश्यमानस्यादेशा भवन्ति॥ एकदेशविकृतमनन्यवत्॥
निर्जरसौ॥ निर्जरौ॥ निर्जरसः॥ निर्जराः॥ निर्जरसम्॥ निर्जरम्॥
पन्तोह सादे च देवत्त॥ संख्याविसायपूर्वस्याह्नस्याहन्‌ङ्याङौ॥ वेञ्‌ाः॥
नान्तस्योपधाया लोपो वा भवति॥ द्वौ न्यतपोः पतयोः॥ वकारमका
रान्तसंयोगादुत्तरस्य न॥ विगतमहो॥ व्यह्नः॥ व्यह्नौ॥ व्यह्नाः॥ व्यहम्
व्यह्नौ॥ व्यह्नि॥ व्यहनि॥ व्यह्ने॥ अह्नः॥ सायः॥ सायाह्नः॥ सायाह्नौ
सायाह्नाः॥ सायाह्नि॥ सायाहनि॥ सायाह्ने॥ द्व्योरह्नोर्भवो द्व्यह्नः॥
32 द्व्यह्नि॥ द्व्यहनि॥ द्व्यह्ने॥ पाददन्तनासिकामासहृदयनिशाअसृग्यूष
दोषयकृच्छकृदुदकआस्यमांसपृतनासानुनाम॥ पद्दन्‌न
स्मास्हृद्निश्‌ असन्यूषन्‌दोषन्‌यकन्‌शकन्‌उदन्‌आसन्‌मांस
पृत्‌स्नुश्‌ आदेशा वा॥ पादः॥ पादौ॥ पादाः॥ पादम्॥ पादौ॥ पदः॥ पदा॥ पद्भ्याम्॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

र्पा चरमा शां॥ वा जसि॥ चरमाश्चमे न्तवे॥ चरमाश्चमे न्तराः॥ तृतीया समासे॥ तृतीया स
मासार्थवाक्ये पिन॥ मासपूर्वाय॥ मासेनपूर्वाय॥ प्रथमचरमतयाल्पार्ध
कतिपयनेमा श्च जसी वा॥ प्रथमे॥ प्रथमाः॥ तयडयजेप्रत्ययौ ततस्तदन्ता
ह्याः॥ द्वितीये॥ द्वितीयाः॥ त्रितये॥ त्रितयाः॥ पञ्चतये॥ पञ्चतयाः॥ द्वये॥ द्व
याः॥ कतिपये॥ कतिपयाः॥ अल्पे॥ अल्पाः॥ अर्धे॥ अर्धाः॥ शेषं सर्ववत्॥
नेमे॥ नेमाः॥ शेषं सर्ववत्॥ तीयस्य ङित्सु सर्ववद्वा॥ द्वितीयस्मै॥
द्वितीयाय॥ द्वितीयस्मात्॥ द्वितीयात्॥ द्वितीयस्मिन्॥ द्वितीये॥ एवं तृती
यः॥ उभशब्दो नित्यं द्विवचनान्तः॥ उभौ॥२॥ उभाभ्यां॥३॥ उभयोः॥२॥ उभय
शब्दस्य द्विवचनं नास्तीत्येके॥ अस्तीत्यन्ये॥ उभयः॥ उभये॥ उभयं॥ उभया
न्॥ उभयै॥ उभयानित्यादि॥ निर्जरः॥ जरायाः स्वरादौ जरस्वा वक्तव्यः॥
तदन्तविधिरत्र॥ षष्ठीनिर्दिष्टस्यादेशास्तदन्तस्य ज्ञेयाः॥ ग्रुऽः॥ शिश्च सर्वस्य
स्यानिर्धेयाधर्म आदिविशेषो भवति

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

न्तस्य उकारान्तस्य च जसि परे एकारश्च ओकारश्च भवति ॥ हरयः ॥ १२
औ । इकारान्तस्य उकारान्तस्य घौ परे एकारश्च ओकारश्च भवति ॥
हे हरे । हे हरी । हे हरयः ॥ हरिम् ॥ हरी । हरीन् ॥ टा नास्त्रियाम् ॥ इका
रान्तादुकारान्ताच्च परष्टा ना भवति ॥ न तु स्त्रियाम् ॥ हरिणा ॥ हरि
भ्याम् ॥ हरिभिः ॥ ङिति ॥ इकारान्तस्य उकारान्तस्य च ङिति परे एका
33 रश्च ओकारश्च भवति ॥ हरये । हरिभ्याम् ॥ हरिभ्यः ॥ ङस्य ॥ एदोद्भ्या
म् परस्य ङसि ङसोः अकारस्य लोपो भवति ॥ हरेः ॥ हर्योः ॥ हरीणा
म् ॥ ङेरौ ङितः ॥ इदुद्भ्यां परस्य ङेः औ भवति । स च ङित् ॥ ङिति टेः
१२ ङिति परे टेर्लोपो भवति । हरौ । हर्योः ॥ हरिषु ॥ एवं मणिनिधि रि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अपग्राकिम

अस्थिविति किं अस्थपुत्र्यादित्युक्तौ उन्नाः उन्नराः। न न्नशौ लादावृपकार लोपो न स्यात्। उ तिकिं
वीभुः वीभ्रा अस्थपक्ते स्यादानपि लोपो न स्यात् अपमो अपमाः २

पादभ्याम्॥ पद्भिः। पादैः॥ दन्तः। दता। दभ्याम्। दन्ताभ्याम्। दद्भिः। दन्तैः। मा
समासा भ्याम्। माभिः॥ अल्लोपः स्वरेऽल्लोपः सादौ॥ अन्नान्तस्योपधा
यालोपो भवति शसादौ स्वरे परे॥ वकार मकारान्तसंयोगादनस्य॥ पूष्णः
पूष्णा॥ नाम्नो नो लोपशधौ॥ नान्तस्य नाम्नो नकारस्य लोपो भवति
सेपदान्ते चाधौ॥ पूषभ्याम्॥ पूषभिः॥ नस्य लोपादौ नविभक्तिकार्यं॥
पञ्चेपंचसु देवजन्॥ पदादयः॥ सोमपाः। सोमपौ॥
सोमपाः॥ हे सोमपाः॥ सोमपाम्॥ सोमपौ॥ आतो धातोर्लोपः॥ आकारान्त
स्य धातोर्लोपो भवति शसादौ स्वरे परे॥ सोमपः॥ सोमपा॥ सोमपा
भ्याम्॥ सोमपाभिरित्यादि॥ एवं कीलालपा शंखध्मा विश्वपा प्रभृतयः॥
धातोः किम्॥ हाहान्॥ हाहा। हाहौ॥ हाहाः। हाहे हाहाभ्याम्। हविः॥ औपू॥ इकारा
न्तादुकारान्ता चयपत्रौ पूआपघते इत्यादिः॥ हरी॥ एवो जसि॥ इकारा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

डस्यन्त इति नाप्नु
नोघ्यं इति प्रत्यय
स्य शेषात्तिपात्या
के त्यादय इति ध्य
ध्यते संख्यापा
२ स्तनु वर्त्तते सं
ख्यासंवध्येनध्य
ध्यते न तु पातेऽ
ति पतिरिति ३

ङित्॥ सख्युः ङिऔ ङिदित्यौकारे कृते॥ सखिपत्योर्नीङः॥ सख्यौ सोमनः सुखासु
सखा। पञ्चमसखा। सुसखिना सुसख्ये सुसखे॥ सखीमतिक्रान्तोऽतिसखिः॥ इह ङा
देत्वेन॥ (?) लक्षणप्रतिपदोक्तयोः प्रतिपदोक्तस्यैव ग्रहणं न तु लाक्षणिकस्येति न्या
यात॥ पतिः। पती। पतयः। पत्या। पत्ये। पत्युः। पतिसमासे एव घि ब्रत्। भूपतये॥ भागमज
न्नित्यम्॥ सखिना पतिना॥ द्विशब्दो नित्यं द्विवचनान्तः॥ त्यदादेष्टेनः स्यादौ॥
द्वौ २ द्वाभ्याम् ३॥ द्वयोः॥ २॥ संज्ञोपसर्जनयोर्नीत्वम्॥ द्विर्नाम कश्चित्॥ द्विः॥
द्वौ। द्वयः। द्वाव(?)तिक्रान्तोऽतिद्विः॥ प्रधाने तु परमद्वौ॥ त्रिशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः॥ त्रयः
त्रीन्। त्रिभिः। त्रिभ्यः॥२॥ त्रेस्त्रयः। त्रिशब्दस्य त्रयङादेशो भवति नामि परे॥ तदंतविधि
नत्र॥ ङिदुलस्य वक्तव्यः॥ त्रयाणाम्॥ त्रिषु। परमत्रयाणाम्॥ कतिशब्दो नित्यं बहुवच
नान्तः॥ डतेः॥ डत्यन्ताज्जश्शसोर्लुक्॥ प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्॥ लुकि न तल्लि
ङ्गत्वम्॥ कति २ कतिभिः॥ कतिभ्यः॥२॥ कतीनाम्॥ कतिषु॥ औङ् ओ औः॥ औङ् ओ न्तो॥
न्तोऽन्त्यस्य तु छकारान्तः॥ उङ् ओमाः॥ औङ् ओ नित्य॥ औङ् ओमौ॥ उङ् ओ मान॥ वात १३

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

तदन्तविधिरत्र १ न ह्यदितिसपकादः १ ओमा १ नाभिः २
उङन्तत्वः २

३४

र्षेकलिप्रभृतयः ॥ उकारान्ताश्च विष्णुवायुभानुवर्ग्यो
दयः ॥ भानुः ॥ भानू ॥ भानवः ॥ हे ङी घेः ॥ सखिशब्दात्तदन्ता
च्चैस्सरघेर्ङीर्भवति ॥ सखा ॥ हे सखे ॥ हे सख्युः ॥ सखिशब्दस्य
तदन्तस्याप्यैकारादेशो भवति ॥ अघिषु पञ्चसु ॥ षष्ठीक्रु
र्द्धिकस्याद्देशस्तदन्तस्य ङेपः ॥ सखायौ ॥ सखायः ॥ सखिपत्यो
रीङ् ॥ सखिपतिशब्दयोरिगागमो भवति टाङेङसिङसुपन्ततः ॥ टी
र्घत्वाण्णत्वम् ॥ सख्या ॥ सख्ये ॥ ऋतेरे ॥ सखिपतिशब्दयोरिगाग
मो भवति ङसिङसोरकारे परे ॥ सख्युः ॥ अस्त इति स्थिते ॥ ऋतोऽ
उः ॥ ऋकारान्तात्परस्य ङसिङसोरकारस्य उकारो भवति ॥ सख

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

धातोः स्वरूपग्रहणे तत्प्रत्यये कार्यविज्ञानमस्तु धीशब्दे प्रतिषेधे
धात्वन्ये धातोः स्वरूपग्रहणापत्तिभावप्राप्त्वतिनिवृत्तिभावः ८ धातोः किं नातप्रत्ययेयोः किं विसर्गोऽस्यादौ किं नर्थकम्

१४ ईकारान्तादूकारान्ताच्च ङितामडागमो भवति॥ बहुश्रेयस्यै॥ बहुश्रेय-
स्याः॥ बहुश्रेयसी नाम॥ ह्रीपां श्चोः॥ इवर्णान्तादुवर्णान्ताच्च स्त्रियां वर्तमाना-
न्नाम्नः परस्य ङेरामादेशो भवति। बहुश्रेयस्याम्॥ अनीवन्तत्वात्सिलोपः
अवीतन्त्रीलक्ष्मीतन्त्रीह्रीधीश्रीणामुणादितः॥ शब्दानां तु भवेदेषां सि-
लोपो न कदाचन॥१॥ अतिलक्ष्मीः॥ शेषं बहुश्रेयसीवत्॥ सुश्रीः॥ धा-
तोरियुवौ स्वरे॥ धातोरिवर्णोवर्णयोरियुवौ भवतः स्यादौ स्वरे परे॥
सुश्रियौ॥ सुश्रियः॥ २ वसुधीप्रभृतिः स्यादयः सेनानीः॥ सेना॥ अने-
कस्वरस्य नाम्नो धातोरिवर्णोवर्णयोः पकारवकारौ भवतः स्वरे परे धातो-
रनपवसंयोगः पूर्वो यस्मात्तस्य तु न। संयोगपदस्य नेऽनेकस्वरस्य चेद्दुप्रत्न
र्जकारमनायूर्ध्व CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham नपूर्वस्य १४

प्रमीः॥ वातप्रम्यौ॥ वातप्रम्यः॥ अमि वातप्रमीम्॥ शसि वातप्रमीन्॥ ङौ वातप्र
मी॥ एवं पपीर्मोर्गः॥ पाति लोकमिति पपीः सूर्यः॥ किंच वातप्रमीशब्द
स्य तु अमि शसि ङौ च विशेषः॥ वातप्रम्यम्॥ वातप्रम्यः॥ वातप्रम्यि। यौ वेन
तिपः। बहुधः श्रेयस्यो यस्य स बहुश्रेयसी॥ पुंरूपः॥ ईदूदन्तस्य इयुवस्था
नमिन्नस्य [illegible] स्मारकस्योपसर्जनत्वेपि स्त्रीकार्यं न स्मादेन॥ हे सेपः से लौ
पः॥ ह्रस्वान्तादेवनाम्नः परस्य सेर्लोपो भवति। बहुश्रेयसी॥ बहुश्रेयस्यौ
यौ ह्रस्वः॥ इयुवस्थानवर्जितयोर्नीवर्णो वर्णयोः स्त्रीशब्दस्य च ह्रियां धौ परे
ह्रस्वो भवति। ह्रस्वविधानसामर्थ्यान्नावितिज्ञ॥ हे बहुश्रेयसि। बहुश्रे
यस्यः। बहुश्रेयसीम्। बहुश्रेयसीन्॥ बहुश्रेयस्या॥ ङिताम्नट्॥ स्त्रियां

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

बहुश्रेयसीत्युत्स्विवत्प्रमीति [illegible] किपापा [illegible] वोनकारो निरोधः

सारस्वतप्रटि ॥ अद्भिः ॥ अकारस्यात्वं भवति भकारे परे ॥ देवाभ्यां ॥ भ्यः ॥ अकारात्परस्य
ङेर्ङे भकारस्याकारादेशो भवति ॥ अ३ ९।५ ङे ङे ॥ देवैः ॥ अकारान्तस्य भिसि ऐस्त्वस्ये
थौवान्वयः ॥ देवेभिः ॥ कर्तरि भिः ॥ चतुर्थ्येकवचने देव ङे इति स्थिते ॥ ङकारोऽ
कार्यार्थः ॥ सर्वत्र ङे यक् ॥ अकारान्तात्परस्य ङे इत्यस्य यागमो भवति ॥ कित्वादन्ते
२ अप् ॥ दीर्घः ॥ देवाय ॥ देवाभ्यां ॥ एस्मि बहुत्वे ॥ अकारस्यैत्वं भवति भकारे भकारे च
परे बहुत्वे सति ॥ देवेभ्यः ॥ पञ्चम्येकवचने देव ङसि इति स्थिते ॥ ङसिरत् ॥ अथा ९५
९५ नात्परो ङसिरत् भवति ॥ देवात् ॥ देवाभ्यां ॥ देवेभ्यः ॥ षष्ठ्येकवचने देव ङस् इति
स्थिते ॥ ङस्य ॥ अकारात्परो ङस् स्यो भवति ॥ देवस्य ॥ ओसि ॥ अकारस्यैत्वं भ
38 वति ओसि परे ॥ २ अप् ॥ देवयोः ॥ ह्रस्वान्नुट् ॥ समानात्परस्यामो नुडागमो भवति ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

श्री श्री श्री ॥ देवौ । चतुर्लादिवज्ञापां देवमस्मइतिस्थिते उ
ज्ञापां प्रथमैकवचने देवम्सिइतिस्थिते । रेफस्य उच्चारणार्थः ॥ सोर्विसर्गः ॥ सकारस्य
रेफयोर्विसर्जनीयः आदेशो भवति । अवसाने रसेपदान्ते च । अतो नाम रसे ॥ देवः ॥ द्वित
चिवज्ञापां देवम्औइतिस्थिते । जकारस्येत्संज्ञा तस्य लोपः प्रयोजनं नसीति विशे
षणार्थः । दीर्घविसर्गौ देवाः । प्रथमा जसौ । सम्बोधने चिह्नं । देव ॥ देवासः । प्र
थमाः ॥ द्वितीयैकवचने देवअम्इतिस्थिते ॥ अमाओ तस्य समानाद्गुणवृ
धिः असो नकारस्य लोपो भवति । अपाति रसेपदान्ते च । देवम् । देवौ । द्वितीयाव
हुवचने देवशस्इतिस्थिते । शकारश्शसीति विशेषणार्थः । सोनः पुंसः । पुल्लिंग
समानाडतनस्यारासः तकारस्य नकारो भवति । शसि ॥ शसिपरे पूर्वस्य दीर्घो भव
ति । देवान् । पदान्तेत्वं भवति । अनुवर्णमात्रविधौ । तृतीयैकवचने देवटाइतिस्थि
ते । टकारेत्संज्ञे नातिविशेषणार्थः । टेना । अकारस्य

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

...दीऽ...राजेसीइति दीर्घो ...र्थं ...

सारस्वतप्रक्रिया०

त्वसति॥ देवेभ्यः॥ पंचम्येकवचने देव ङसि इति स्थिते॥ ङसिरत्॥ अकार-
रात् ङसिरद्भवति॥ देवात्॥ देवाभ्याम्॥ देवेभ्यः॥ षष्ठ्येकवचने देव ङस् इ..
स्थिते॥ ङस्स्यः॥ अकारात्परो ङस् स्यो भवति॥ देवस्य॥ ओसि॥ अकार-
स्यैत्वं भवति ओसि परे॥ य्वय्॥ देवयोः॥ नुडामः॥ समानादुत्तर- ॥१६॥
॥१६॥ स्यामो नुडागमो भवति॥ नामि॥ नामि परे पूर्वस्य दीर्घः॥ देवाना-
म्॥ सप्तम्येकवचने देव ङि इति स्थिते॥ अइए॥ देवे॥ देवयोः

37

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

शकारस्य नकारादेशो भवति॥ शसि॥ शसि परे पूर्वस्य दीर्घो भवति॥ देवान्॥ य
दादेशास्तु भवति॥ न तु वर्णमात्रविधौ॥ तृतीयैकवचने देव टा स्थिते॥ टका
रोऽनुबन्धष्टे नेति विद्याश्चरणार्थः॥ टेन॥ अकारात्परष्टाइन भवति॥ अदूर॥
देवेन॥ अभ्भि॥ अकारस्यात्वं भवति भकारे परे॥ देवाभ्याम्॥ भ्यः॥ अ
कारात्परस्य भिसो भकारस्याकारादेशो भवति॥ अङ्गृ॥ एऐऐ॥ देवैः॥
अकारस्य भिसि छन्दस्येकारो वक्तव्यः॥ देवेभिः॥ कर्णेभिः॥ चतुर्थ्येक
वचने देव ङे इति स्थिते॥ ङकारो ङित्कार्यार्थः सर्वत्र॥ ङेर्यः॥ अकारात्परस्य
ङे इत्येतस्य यागमो भवति॥ कित्वादन्ते॥ स्वप्॥ सवर्णे दीर्घः॥ देवाय॥
देवाभ्याम्॥ एत्वं बहुत्वे॥ अकारस्यैत्वं भवति सकारे भकारे च परे॥ भ्यसि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

उमा॥

ॐ श्री [illegible] इति दीर्घे [illegible] ॥

।उभय। अन्य। अन्यतर। इतर। इतम। ऽतर। ऽतम। कतर। कतम।
१९ सम। सिम। नेम। एक। पूर्व। पर। अवर। दक्षिण। उत्तर। अप
र। अधर। स्व। अंतर। त्यद्। तद्। यद्। एतद्। इदम्। अदस्। द्वि १७
।किम्। युष्मद्। अस्मद्। भवतु। एते सर्वादयो निर्लिंगाः। त
त्र पुल्लिंगत्वेन रूपं नेयम्॥ सर्वः। सर्वौ। सर्व जस्। जस। स
र्वादेरकारांतात्परे जस ई र्भवति। अरूप। सर्वे। सर्वं। सर्वौ। स
र्वान्। टतो [illegible] जे सर्वत्र इति स्मिन्। टेनातिरन। अरूप।
भुल्यानौ। नेता। पकैरेक [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

॥ ... स्वाच्च ... ओ: समाहार: क्लीब: तस्मात् [illegible]

क्लीबो समास: हे नम ॥ कृपर्णादि ... [illegible] तत्र

स्वमोर्नपुंसकात् ... स्वमो: सकाल्लुको भवति ॥ आमन्त्र

णे सिद्धि: । आमंत्रणं संमुखीकरणं तस्मिन् विषये विहिता

सिः संबोधनं भवति ॥ समानाद्धेर्लोपो धातो: । समानादुत्त

रस्य धेर्लोपो भवत्यधातो: । [illegible] ... स्यामि ... हे

[illegible] ... प्रयोग: । हे देव । हे देवौ । हे देवा: । [illegible] ...

... [illegible] ... नाम ... [illegible] ... नां ... [illegible]

... नाम ... सर्वादि ... [illegible] ... विशेष: । सर्व । विश्व ...

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वि॰

सर्वे ॥ २ वैश्वादीनामेकशब्दपर्य्यन्तानां रूपं सै पम् ॥ इतनइतमो

विता यत्नौ प्रत्यये ॥ ततस्तदन्ता: शब्दा ग्राह्या: ॥ पूर्व: ॥ पूर्वौ ॥ पूर्व

जसइतिस्थिते ॥ पूर्वादीनां नवानां जस इकारो वा वक्तव्य: ॥ पू

र्वे ॥ पूर्वा: ॥ पूर्वे ॥ पूर्वान् ॥ ङसिङ्योः स्मात् स्मिनौ वा वक्तव्यौ ॥ पूर्व

स्मात् ॥ पूर्वात् ॥ पूर्वस्मिन् ॥ पूर्वे ॥ परस्मात् ॥ परात् ॥ परस्मि

न् ॥ परे ॥ इत्यादि ॥ प्रथमचरमतयायअल्प अर्द्धकतिपयनेमानां १८

जसि वा ॥ प्रथमे ॥ प्रथमा: ॥ चरमे ॥ चरमा: ॥ शेषं देववत् ॥

नेमे ॥ नेमा: ॥ शेषं सर्ववत् ॥ तीयस्य सर्ववद्रूपं ङित्सु वा व

क्तव्यम् ॥ द्वितीयस्मै ॥ द्वितीयाय ॥ द्वितीयस्मात् ॥ द्वितीयात्

२४

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कानादेशो भवति ॥ अनेकस्वतस्य न भवति सर्वाणि त्यादौ ॥ अ
कृष्यन्तेऽपि ॥ अयं प्रत्याहारेत्ता कवर्गे न पवर्गे नवम् श्रेष्ठ
धाने पि भवति नान्येन ॥ सर्वता ॥ सर्वो भ्याम ॥ सर्वैः ॥ सर्व
देभ्यः सर्वादेनकाराज्जातस्य च स्यात् ध्वंशोवर्तनस्य ङ इतस
देभ्यः सङागमो भवति ॥ टकारस्थाननि पमाधः ॥ ट ए के ॥ सर्वस्मै
स्मङागमो भवति ॥ टकारस्थाननि ... सर्वस्मिन् ... इति सिते ॥
सर्वाभ्याम् ॥ सर्वेभ्यः ॥ ... स्मात् ... स्मडागमो भवति ॥ स
र्वतः ॥ सर्वादेर्ङकाराज्जातस्य ... स्मात् ... ॥ स
र्वस्मात् ॥ सर्वाभ्याम् ॥ सर्वेभ्यः ॥ सर्वस्य सर्वयोः ॥ सुडागमः ॥ स
र्वादेः ... स्य ... सः सुडागमो भवति ॥ सर्वेषाम् ॥ स
र्वादेरकारात्परस्य ङि स्मिन् ॥ सर्वादेनकारा ... त्परस्य ङि स्मि
न् ङि इति स्मिन् स्यते ॥ ङि स्मिन् ॥ सर्वादेनका ... स्मिन् ॥ सर्वे सु ॥ हे सर्व ॥ हे सर्वौ ॥ हे
सर्वे ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

...स्वन्तनाम॰

सेन। माभ्याम्। मासाभ्याम्। माभिः। मासैः। मासे। मासाय। माभ्याम्
मासाभ्याम्। माभ्यः। मासेभ्यः। मासः। मासात्। माभ्याम्॥ मासाभ्या
म्। माभ्यः। मासेभ्यः॥ मासः। मासस्य। मासोः। मासयोः। मासाम्
मासानाम्। मासि। मासे। मासोः। मासयोः। मासु॥ माःसु। मा
१८४ सेषु। हे माः। हे मास। हे मासौ। हे मासौ। हे मासः। हे मासाः॥ आका १९
५० रान्तः पुंलिङ्गः सोमपा शब्दः। सोमपाः। सोमपौ। सोमपाः।
सोमपाम्। सोमपौ। आतो धातो र्लोपः॥ धातुसंबंधिन
आकारस्य लोपः ०० ०००० ००००० ००००

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

द्वितीयस्मिन् द्वितीये एवं तृतीयः। उभशब्दो नित्यं द्विवचनान्तः। उभौ
उभौ। उभाभ्याम्। उभाभ्याम्। उभाभ्याम्। उभयोः। उभयोः। उभयशब्दस्य
द्विवचनाभावः॥ एकवचनबहुवचने भवतः। उभयः। उभये। उभ
यम्। उभयान्। उभयेन। उभयैः। उभयस्मै। उभयेभ्यः। उभयस्मात्।
उभयेभ्यः। उभयस्य। उभयेषाम्। उभयस्मिन्। उभयेषु। हे उभय। हे
उभये। अकारान्तो मासशब्दः। मासस्याकारलोपो वा॥ मासशब्दस्याकार
स्य लोपो भवति सर्वासु विभक्तिषु परतः॥ हलिपः से लोपः॥ हलन्ता
दीर्घन्तात् परस्य सेर्लोपो भवति॥ मा:। मासः। मासौ। मासौ। मासः।
मासाः। मासम्। मासम्। मासौ। मासौ॥ मासः। मासान्। मासा॥ मा
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सारस्वत प्रक्रिया

सा १

कारान्तौ वृ नामि परे रेफकारस्य ओकारश्च भवति॥ नाम
रूपः॥ गौः॥ इकारान्तस्य ओकारान्तस्य च ओति
परे एकारस्य ओकारश्च भवति॥ हे त्वे॥ हे त्वौ॥
हे त्वयः॥ हविष्म॥ हवी॥ हवीनः॥ दान्तो ऽ स्त्रि पाद॥
इकारान्तो ऽ दुधानाम्नौ व पच छा ना भवति॥ अनु १०
स्त्रि पाम॥ हधि ताम॥ तवि ष्यां॥ हवि लिः॥ हि. लि॥
इकारान्तस्य ओकारान्तस्य ङि. ति परे एकारस्य अ
१० कार एव भवति॥ हवे॥ तवि ष्याम॥ हवि ष्को॥
ङ. लिङ. तो रस्य॥ पदे ङ. पर स्य ङ. लि. ङ. मे

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

प्रवतिशत्साद्दे स्पर्शेभ्यः सो नपु:॥ सो नपा: सो नप
प्राप्त ॥ सो नप मि:॥ सो नपे॥ सो न पाभ्या॥ सो नपा
भ:॥ सो नप:॥ सो न पाभ्यो॥ सो न पाभ्य:॥ सो नप:
सो नपो:॥ सो नपाम॥ सो नपि॥ सो नपो:॥ सो नपासु॥
अथ धातौ विति विगिरोबरा [illegible] इति॥ सो
मपा:॥ सो नपो॥ सो नपा:॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ तत्र
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] स्पर्शः [illegible] १३

नरे श्री

प्रक्रिया सखिशब्दस्य भेदः ॥ सेर्डा घेः ॥ सखिशब्दस्य सेर्डा राम
भवति डित्वाट्टिलोपः ॥ सखा ॥ ऐ घेर्नि द्वित्रिषु
सादेर्घेर्ऐ वा ना सि ॥ सखायौ ॥ हे सखे ॥ हे सखायः ॥ सखिशब्द
द्विवचनस्य स्याकारादेशो भवति नं वसुषट्सु ॥ बही निर्दिष्टस्या १५
औ१आ१ देशात्तदन्तस्य तेयः ॥ हे प्राप ॥ सखायौ ॥ द्विवचनका
अव्ययंछन्द पो वा उः न सि ॥ सखायौ ॥ सखायः ॥ सखायं ॥ सखायौ
स्ि१ सखीन ॥ सखिपतौ नीणं ॥ सखिपतिशब्दयोर्णोरा
२१ गमो भवति टाङस्ङिसुप्यन्तः ॥ टीर्ट्वा नाभ भव
ति ॥ सख्या ॥ पत्या ॥ आगमजमानि त्मन ॥ सखिना ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

राम

पादपः।

र कारस्य ऽयो भवति॥ तवेः॥ तवि श्यामंदनि भ्यः। तवेः॥
ह र्थोः॥ तरी गाताम॥ दैं ऽयो ऽरि॥ इडु श्यां पत्रसवङ्के ऽयो भ
वति सवऽरि॥ ऽति टः। ऽतिपवेटैवैयो भवति॥ ह
नो॥ ह थों॥ हनि श्व॥ ह वम निव ञिनि चविकविश्च
शेषी श्रयमा ऽकारान्तो विभक्ता भानुभ्यः तपः। भानुः
॥ भानू। भानवः॥ भानुं॥ भानू। भानून्॥ भानुना॥ भा
नुभ्यां॥ भानुभिः॥ भानवे॥ भानुभ्याम्॥ भानुभ्यः॥
भानोः॥ भानुभ्याम्॥ भानुभ्यः॥ भानोः॥ भान्वोः॥
भानूनाम्॥ भानौ॥ भान्वोः। भानुषु॥ हे भानो। भानू

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

जश्शसोर्लुक् ।। कतिशब्दात्परयो ३

हुवचनान्तः ।। एत्रयो जसि ।। त्रयः । त्रीन् । त्रिभिः । त्रिभ्यः । त्रिभ्यः । त्रयस्
त्रिशब्दस्य त्रयादेशो भवति नामि परे । ङिः दन्तस्य बतेयः । त्रयाणा
म् ।। त्रिषु । हे त्रयः । कतिशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः । त्रिजसन्नपः जं
ष्णान्तो लुग् भवति ।। लुकि न तन्निमित्तम् ।। कति । कति । कतिभिः ।
।।२२।। कतिभ्यः २ ।। कतीनाम् । कतिषु । हे कति । ईकारान्तः पुंल्लिङ्गः
सुश्रीशब्दः । य्वोर्धातोरियुवौ स्वरे ।। धातोरीकारोकारयोरियुव्
93 यौ भवतः स्वरे परे ।। सुश्रीः । सुश्रियौ । सुश्रियः । हे सुश्रीः । हे सुश्रि
यौ । हे सुश्रियः । सुश्रियम् । सुश्रियौ । सुश्रियः । सुश्रिया । सुश्रीभ्यां
सुश्रीभिः । सुश्रिये । सुश्रीभ्याम् । सुश्रीभ्यः । सुश्रियः । सुश्रीभ्याम्
सुश्रीभ्यः । सुश्रियः । सुश्रियोः । सुश्रियाम् । सुश्रियि । सुश्रियोः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham.

पतीं। सखिभ्यां। सखिभिः। सख्ये। सखिभ्यां। सखिभ्यः।। ङसिङसोः। सखिपति प
वर्ज्जो ओगागमो भवति ङसिङसोरकारोऽपे। सख्य् अस् इति स्थिते। खतो ऽदुः
ओकारान्तात्परस्य ङसिङसोरकारस्योकारादेशो भवति सचडित्। सख्युः। स
खिभ्याम्। सखिभ्यः। सख्युः। सख्योः। सखीनां। सप्तम्येकवचने औङि ऽदि
त्यौकारे कृते पश्चात् सखिपतिशब्दयोरागमो भवति।। सख्यौ। सख्योः।
सखिषु। पतिशब्दस्य प्रथमाद्वितीययो हरिशब्दवत्। तृतीयादौ स्वरादौ तु
सखिशब्दवत्प्रक्रिया।। ततः समासान्तस्य नायं नियमो भवति। प्रजापतिना
प्रजापतये इत्यादि। द्विशब्दो नित्यं द्विवचनान्तः।। त्यदादेष्टेरः स्यादौ।। त्यदादेष्टेः अ
कारो भवति स्यादौ परे। द्वौ। द्वौ। द्वाभ्यां। द्वाभ्यां। द्वाभ्यां। द्वयोः। द्वयोः।। त्रिशब्दो नित्यं ब

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible]
पितृ ऋकारान्तस्य [illegible] भवति [illegible] पिता। [illegible] चतुर्ष्व
कारो [illegible] पञ्चस्वप्युपरेषु। पितरौ। पितरः। [illegible] ऋकारान्तस्य
रस्य धे रङ् भवति संबुद्धौ। हे पितः। हे पितरौ। हे पितरः। पितरम्। पि
तरौ। पितॄन्। पित्रा। पितृभ्याम्। पितृभिः। पित्रे। पितृभ्याम्। पितृ
भ्यः। पितुः। पितृभ्याम्। पितृभ्यः। पितुः। पित्रोः। पितॄणाम्। [illegible]
॥२३॥ कारस्य [illegible] पितरि। पित्रोः। पितृषु। एवं भ्रातृ जामातृ प्रभृतयः
[illegible] नामि [illegible] भवति [illegible]
[illegible] पञ्चस्वप्युपरेषु [illegible] सम्बन्धिन ऋकार
[illegible] कर्त्रा। कर्तारौ [illegible]
[illegible]
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham
[illegible] प्रभृतयः। ऋकारान्तस्य [illegible]

सेनां नयतीति सेनानी। [illegible] सेनानीशब्दस्य विशेषो [illegible] विशेषः
सेनानीः। एरनेकाचः। धातोरवयवसंयोगः पूर्वो यस्मादिकारादुकाराज्जाति तदन्त
स्यानेकाचो धातोरिकारोकारान्तस्य यकारवकारौ भवतः स्वरे। वर्षाभूः पुनर्भू
रिति केषाम्भूस्वस्तु धीशब्दे वर्जयित्वा [illegible] विवक्षा। सेनान्यौ। से
नान्यः। सेनान्यम्। सेनान्यौ। सेनान्यः। सेनान्या। सेनानीभ्याम्। से
नानीभिः। सेनान्ये। सेनानीभ्याम्। सेनानीभ्यः। सेनान्यः। सेनानीभ्याम्।
सेनानीभ्यः। सेनान्यः। सेनान्योः॥ [illegible] ।सेना
न्याम्। सेनानीनाम्। ङेराम्। आबन्ता [illegible] नीशब्दाच्चोत्तरस्य
ङेरामादेशो भवति। सेनान्याम्। सेनान्योः। सेनानीषु। हे सेनानीः॥
एवं ग्रामणीशब्दः॥ ऊकारान्तो [illegible]
[illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible]

रान्तः सुरैशब्दः। रै स्मि रैश्रा रः स्थाकारादेशो भवति। सकारककारौ

विभक्तौ परतः। सुराः। सुरायौ। सुरायः। व्यञ्जनादौ सर्वत्रायादेशः। सुराया। सु

राभ्याम्। सुराभिरित्यादि। ओकारान्तो गोशब्दः। औरो। ओकारस्यौका

रादेशो भवति पञ्चसु परेषु। गौः। गावौ। गावः। आ म्रा। सा अमि शसि च

॥२५॥ परे ओकारस्यात्वं भवति। गाम्। गावौ। गाः। गवा। गोभ्याम्। गोभिरित्या ॥२६॥

दि। एवं द्युशब्दः। औकारान्तो ग्लौशब्दः। औ आव। ग्लौः। ग्लावौ।

ग्लावः। [illegible] ग्लावा। ग्लौभ्याम्। ग्लौभिरित्यादि। इति स्वरान्ताः पु

ल्लिङ्गाः। अथ स्वरान्ताः [illegible] लिङ्गाः प्रदर्श्यन्ते। तत्राकारान्तः स्त्रीलि

ङ्गो गङ्गाशब्दः। आबन्तः स्त्रियाम्। अकारान्तान्नाम्नः स्त्रियां वर्तमाना

दाप् प्रत्ययो भवति। [illegible] सिद्धोपा भवति गङ्गा। औ

च्चाहमके॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

क्रोष्टारः। क्रोष्टारम्। क्रोष्टारौ। शसि तु प्रत्ययपराभावात्। क्रोष्टून्। अत्र
विभक्तिविशेषणत्वात्। हे क्रोष्टो। तृतीयादौ स्वरादौ तु तृप्रत्ययान्तता वा व
क्तव्या॥ क्रोष्ट्रा। क्रोष्टुना। क्रोष्टुभ्याम्। क्रोष्टुभिः। क्रोष्ट्रे। क्रोष्टवे। क्रोष्टु
भ्याम्। क्रोष्टुभ्यः॥ क्रोष्टुः। क्रोष्टोः। क्रोष्टुभ्याम्। क्रोष्टुभ्यः। क्रोष्टुः
क्रोष्टोः। क्रोष्ट्रोः। क्रोष्ट्वोः। कृताकृतप्रसंगी यो विधिः स नित्यः। नि
त्यानित्ययोर्मध्ये नित्यविधिर्बलवान्॥ तेन नुडागमे कृते सति तृ
त्त्वभावो नास्ति। क्रोष्टूनाम्। क्रोष्टरि। क्रोष्टौ। क्रोष्ट्रोः। क्रोष्टोः
क्रोष्टुषु। ॠकारान्ता ऌकारान्ता एकारान्ताश्च प्रसिद्धाः॥ ऐको

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वामामि शः न्मामि चुणे त्रीण्यादेस्य वाह्यादेशोभवति । त्रिषाम् स्त्रीन्

सर्वाभ्याम् सर्वाभ्यः सर्वस्याः सर्वयोः सर्वासाम् सर्वस्याम् सर्वयोः सर्वासु
हे सर्वे हे सर्वे हे सर्वाः जराशब्दः [illegible] जरा जरसौ जरे जरसः
जराः । जरसम् जराम् जरसौ जरे जरसः जराः जरसा जरया जराभ्याम् जराभिः
जरसे जरायै जराभ्याम् जराभ्यः जरसः जरायाः जराभ्याम् जराभ्यः जरसः ज
रायाः जरसोः जरयोः जरसाम् जराणाम् जरसि जरायाम् जरसोः जरयोः
जरासु हे जरे हे जरसौ हे जरे हे जरसः हे जराः इत्याकारान्ताः स्त्रीलिङ्गाः बुद्धिशब्दः । बु
द्धिः बुद्धी बुद्धयः बुद्धिम् बुद्धी बुद्धीः स्त्रीलिङ्गत्वान्नकारागमो न [illegible] बु
द्ध्या बुद्धिभ्याम् बुद्धिभिः [illegible] स्त्रियां वर्तमाना नाम्यादिकारोकाराभ्यां
ङवादि तावच्च नान्तं [illegible] भवति बुद्ध्यै बुद्धये बुद्धिभ्याम् बुद्धिभ्यः बु
द्ध्याः बुद्धेः बुद्धिभ्याम् बुद्धिभ्यः बुद्ध्याः बुद्धेः बुद्ध्योः बुद्धीनाम् स्त्रियाम् ओः ॥
[illegible] नाम्यन्तात् [illegible]
[illegible] भवति बुद्ध्याम् [illegible]

CC-0. In Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible]

हे अम्ब स्वरवतीनां नह्रस्वः हे अम्बाऽ हे अम्बाले हे अम्बिके गंगा
म् । गङ्गे । गङ्गाः । टौसोरे ॥ आपन्तस्य टौसोः परयो एत्वं भवति । गङ्गया ।
गङ्गाभ्याम् । गङ्गाभिः । ङितां यट् । आपन्तात्परेषां ङे ङसि ङस् ङीनां यडा
गमो भवति २२२ । गङ्गायै ॥ गङ्गाभ्याम् । गङ्गाभ्यः । गङ्गायाः । गङ्गाभ्या
म् गङ्गाभ्यः गङ्गायाः गङ्गयोः । गङ्गानाम् गङ्गायाम् गङ्गयोः ग
ङ्गासु ॥ एवं श्रद्धा मेधा शाला माला हेला दोला दुर्गा प्रभृतयः आबन्ताः
स्त्रियाम् आकारान्ता नाम्नः स्त्रियां वर्तमानाद् आप्प्रत्ययो भवति पका
रः सिद्धोपधः दीर्घः सर्वादि नानु विशेषः सर्वा सर्वे सर्वाः सर्वां सर्वे स
र्वाः सर्वया सर्वाभ्यां सर्वाभिः १८२ ङेषु वा आत्सर्वादेः परस्य ङेः स्युडा
गमो भवति पूर्वस्य चापोऽकारः सर्वस्यै सर्वाभ्याम् सर्वाभ्यः सर्वस्याः ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

प्रक्रियादि ॥ औकारान्तो ग्लौशब्दस्तस्य पिरःशब्दवत्प्रक्रिया ॥ ग्लौः ॥ ग्ला
ग्लावौ ॥ ग्लावः ॥ हे ग्लौः ॥ हे ग्लावौ ॥ हे ग्लावः ॥ इति सिद्धैर्न्ये ॥
स्वस्य शब्द स्तु कारैशब्दवत्प्रक्रिया ॥ सुगन्ध ... वो नावो
द्विशब्दः ॥ रै शब्द स्वरूपैव शब्दवत्प्रक्रिया ॥ गो शब्दस्तु १९
४७ पूर्ववत् ॥ नौ शब्दो ग्लौ शब्दवत् ॥ स्वरान्ताः स्त्रीलिङ्गाः ॥
स्वरान्ता नानानपुंसकलिङ्गाः ॥ तत्राकारान्तो कुण्डशब्द
१६ दः तस्य प्रथमाद्वितीयैकवचने ॥ अतोऽम् ॥ कुण्डं
नानानपुंसकलिङ्गात्परयोः स्यमोर्लुग्न भवति ॥ कुण्डे ॥ ग्धौ
औङ ईः ॥ कुण्डे ॥ ... र्णौ ... त्यर्थे ग ॥ कुण्डानि ॥ कुण्ड

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

स्त्रियौ॥ स्त्रियः॥ स्त्रीः॥ स्त्रिया॥ स्त्रीभ्यां॥ स्त्रीभिः॥ स्त्रियै॥ स्त्रीभ्यां॥ स्त्रीभ्यः॥ स्त्रियाः॥ स्त्रीभ्यां॥ स्त्रीभ्यः॥ स्त्रियाः॥
यो॥ नदीवत॥ श्रीः॥ श्रियौ॥ श्रियः॥ हे श्रीः॥ हे श्रियौ॥
हे श्रियः॥ श्रियं॥ श्रियौ॥ श्रियः॥ श्रिया॥ श्रीभ्यां॥
श्रीभिः॥ वपूर्वः॥ इयुवं नास्त्रियां च तेनाभावात् ङितां म
ङागमो नदीति॥ श्रियै॥ श्रिये॥ श्रीभ्यां॥ श्रीभ्यः॥ श्रि
याः॥ श्रियः॥ इत्यादि॥ ङेराम्नद्याम्नीभ्यः॥ श्रि
याम्॥ श्रीणाम्॥ श्रियां॥ अजादन्तभावे याम्नाधव ना
वः॥ श्रियि॥ श्रियोः॥ श्रीषु॥ एवं ह्री धी सुधी प्रभृत
यो वक्ताः॥ एवं भूशब्दो ऽपि शब्दस्य सर्वत्र ज्ञानवदतां
नदीवत् वस्त्र कियां॥ भ्रुवः॥ भ्रुवौ॥ भ्रुवः॥ हे भ्रूः॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नाम० अस्नद॥ अस्ने॥ अस्यानि॥ अस्नंतवत॥ अस्नवे॥ अस्नेतवानि॥
पुनर्नयि॥ कतनत॥ कतये॥ कतनानि॥ पुनर्नयि॥ कतनत॥ कतने॥
कतनानि॥ पुनर्नयि॥ शेषं पूर्ववत॥ एकारान्तो ऽस्थि शब्दः॥ नपु
सकात्स्यमोर्लुक्॥ नपुसकलिंगात्परयोः स्यमोर्लुग्भवति॥
अस्थि॥ नपुंसके वा गुणो वक्तव्यः॥ हे अस्थे॥ हे अस्थि
इत्यर्हि॥ संबोधने तु शनस त्रिरूपं सान्तं तथा नांतमथा २७
२९ प्यदन्तं॥ माध्यंदिनि र्वष्टि गुणं त्विगंते नपुंसके व्या
घ्रपदां वरिष्ठः॥ नामिनः स्वरे॥ नामि स्वरान्तस्य नपुंसक
स्य नुमागमो भवति स्वरे परे॥ अस्थिनी॥ अस्थीनि॥
पुनस्तद्वेव॥ अस्थ्यादीनां नुमाग

48

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सोनस्य अकारान्तोप:॥ ईनौ॥ नपुंसकलिंगात्परयोः औौ ईकार
मापद्यते॥ कुण्डे॥ जश्शसोः शिः॥ नपुंसकलिंगात्परयोः जश्शसोः शि
र्भवति॥ सैकारः सर्वादेशार्थः॥ नुम् शि सर्वस्य वक्तव्यः॥ नुम
पमः॥ नपुंसकस्य नुमागमो भवति शौ परे॥ यम प्रत्याहारान्तस्य न भ
ति॥ मिद्यास्त्वन्त्यात्परो वक्तव्यः॥ उकार उच्चारणार्थः॥ नुका
स्थाने नित्यं मित्त्वान्नित्य मकारः॥ सोपधायाः॥ नान्तस्योपधाया दीर्घो भव
ति एतौ विवर्जे भुपन्तः॥ कुण्डानि॥ पुनरपि॥ कुण्डं॥ कुण्डा
नि॥ शेषं पुंलिंगवत्॥ एवं मूल फल पत्र कुड्यादयः॥ ह्रस्व
स्यादेः॥ अन्यादेरौशास्त्वमोऽस्तु भवति॥ शाकारः शर्वा
देशार्थः॥ अन्यत्॥ अन्यद्॥ अन्ये॥ अन्यानि॥ अन्यत
जसमाते॥ अवसानेवर्तमा

ख्याति विशेषणत्वात् ॥ लुमन्तस्यापि दीर्घः ॥ वा नी नाम् ॥ वारि
णि ॥ वारिणो ॥ वारिषु ॥ हे वारे ॥ हे वारिणी ॥ हे वारीणि ॥
ग्रामणी शब्दः ॥ नपुंसकस्य ह्रस्वः ॥ नपुंसकस्य ह्रस्वो भवति ॥
ग्रामणि ॥ कुलम् ॥ स्वरादौ नामिनः स्वरे इति नुमागमः ॥ ग्रा २८
मणिनी ॥ ग्रामणीनि ॥ टादौ पुंस्त्वं पुंवद्वा ॥ उक्तपुंस्कं
नाम्यन्तं नपुंसकं टादौ स्वरे परे पुंवद्वा भवति ॥ ग्रामण्ये ॥ ग्रा
मणिने ॥ ग्रामण्या ॥ ग्रामणिना ॥ ग्रामणीभ्यः ॥ ग्रामण्यः ॥ ग्रा
५७ मणिनः ॥ ग्रामण्योः ॥ ग्रामणिनोः ॥ ग्रामणिनोः ॥ ग्राम
ण्योः ॥ ग्रामण्याम् ॥ ग्रामणीनाम् ॥ ग्रामणिनि ॥ ...

ग्रामणी भ्याम् ग्रामणीभ्यः २ ग्रामण्याम् १

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मो भवति टादौ स्वरे परे ॥ इकारान्तस्य वाकारो भवति ॥ अस्थि । पः स्व
रे स्व पुंवत् आदौ ॥ नान्तस्याघधायाः अकारस्य लोपो टादौ स्वरे
परे ॥ भकारवकारान्तसंयोगादुत्तरस्य न भवति ॥ अस्थि ॥ अ
स्थि भ्याम् ॥ अस्थिभिः ॥ अस्थ्ने ॥ अस्थिभ्याम् ॥ अस्थिभ्यः ॥
स्थ्नः ॥ अस्थिभ्याम् ॥ अस्थिभ्यः ॥ अस्थ्नः ॥ अस्थ्नोः ॥ अ
स्थ्नाम् ॥ अस्थ्नि ॥ अस्थनि ॥ अस्थ्नोः ॥ अस्थिषु ॥ एवं दधि
सक्थ्यक्षि शब्दाः ॥ वारि ॥ वारिणी ॥ वारीणि ॥ वारिणा
वारिणे ॥ वारिभ्याम् ॥ वारिभ्यः ॥
वारि भ्याम् ॥ वारिभिः ॥ वारिणौः ॥ वारि भ्याम् ॥ वारि भ्यः ॥
वारिणः ॥ वारि भ्याम् ॥ वारि भ्यः ॥ वारिणः ॥ वारिणोः ॥
इयान्त्यमत्र भवति ५

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सर्वप्रभृत्यादिकाबेवधेतझौ ॥ प्रतिपि ॥ प्रतिपिरती ॥
प्रति ...ति ॥ इत्यादि वानिवत् ॥ उपगता गावो यस्य उं षु ॥ २
उपगुनी ॥ उपगूनि ॥ इत्यादि ॥ मधुवत् ॥ नावमतिक्रान्तं अतिनु ॥ अ
तिनु ॥ अतिनुनी ॥ अतिनूनि ॥ ९ ॥ स्वरान्ताः नपुंसकलिंगाः ॥ अथ
हसान्ताः पुल्लिंगा प्रदश्यन्ते ॥ तत्र हकारान्तः पुंलिंगो अनडु
त् शब्दः ॥ पञ्चसु अनडुत् आम् आगमो वक्तव्यः ॥ सिद्धन्त्या स्वरा २८
त्पूर्वो वक्तव्यः ॥ अनडुह् इति स्थिते ॥ सावनडुहः ॥ अनडुह्
२९ शब्दस्य नुमागमो भवति ॥ संयोगान्तस्य लोपः ॥ संयोगान्तो लो म३
पो भवति ॥ ...स्य पदान्ते व ॥ ...नस्य समे व ॥ नुम
ति सर्वनामस्थाने परे ... ॥ हसेपः से लोपः ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

गोदैवै३ ग।३

फलायते ॥ ग्रामण्यः ॥ ग्रामणिनोः ॥ ग्रामणीषु ॥ सोमपं कुलम् ॥
उकारान्तो मधुशब्दः ॥ तस्यादि नामि नस्वरे नुमागमः ॥ मधु ॥
मधुनी ॥ मधूनि ॥ हे मधो ॥ हे मधु ॥ इत्यादि वारिवत् ॥ स्वल
पुशब्दो ग्रामणीवत् ॥ ऋकारान्तः ॥ कर्तृ ॥ कर्तृपाति ॥ कर्तृ
रितौ ॥ पुनरपि ॥ कर्तृ ॥ कर्तृ रितौ ॥ कर्त्रौ ॥ कर्तृ णां ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ कर्तृभ्याम् ॥ कर्तृभिः ॥ कर्तृ रौ ॥ कर्तृ
ग्राम ॥ कर्तृभ्यः ॥ कर्तुः ॥ कर्तृ राः ॥ कर्तृः ॥ कर्तृ राः ॥ क
त्रौः ॥ कर्तृ रोः ॥ कर्तृ राम ॥ कर्तरि ॥ कर्तृ रितौ ॥ कर्तृः ॥
कर्तृ रोः ॥ कर्तृषु ॥ ऐकारान्तो रैशब्दः ॥ तस्यादेशे
तेनान्तकर्तृशीहकर्तृशीघ कर्तृभ्याम् ॥ कर्तृभ्यः ३

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

धु3 धु3 धु3

गोदुहम्॥ गोदुहौ॥ गोदुहः॥ गोदुहा॥ भकारादौ दादेर्घः इति घत्वे
हाते॥ आदि जबगडदानां स्व वर्गचतुर्थे॥ नभैर्भवा॥ गोधुग्भ्या
धु3 म्॥ गो धुग्भिः॥ गोदुहे॥ गोधुग्भ्याम्॥ गोधुग्भ्यः॥ गोदुहः॥ गोधुग्भ्याम्॥
धु॥ गोधुग्भ्यः॥ गोदुहः॥ गोदुहोः॥ गोदुहाम्॥ गोदुहि॥ गोदुहोः॥ गोधु
क्षु इति स्थिते॥ वसे वा प्रथमायां॥ क्विन्नामस्येति घत्वं॥ कच संयो
गेन्तः॥ गोधुक्षु॥ मधुलिह् शब्दस्य भेदः॥ हो ढः॥ धातोर्हकारान्तस्य 30
5। ढत्वं भवति झसे परे नाम्नश्च असे पदान्ते च॥ वावसाने॥ मधुलि
30 ट्॥ मधुलिड्॥ मधुलिहौ॥ मधुलिहः॥ मधुलिहम्॥ मधुलिहौ॥
मधुलिहः॥ मधुलिहा॥ मधुलिड्भ्याम्॥ मधुलिड्भिः॥ इत्यादि॥
भारवाट् भारवाह शब्दस्य भेदः॥ वाहो वौ शसादौ स्वरे॥ वाहो वकारस्यौका
वाहः षष्ठ्य [illegible] तां भोगपमात्वं
॥ भारवाड्॥ भारौवाहौ॥ भारवाहः॥ भारवाहम्॥ भारवाहौ॥ १ तृतीमूसे

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वां१

अनड्वान्॥अनड्वाहौ॥अनड्वाहः॥आमे॥अनडुहशब्दस्य
स्विविभपे आमागमो भवति॥हे अनड्वन्॥हे अनड्वाहौ॥हे अ
नड्वाहः॥अनड्वाहम्॥अनड्वाहौ॥अनडुहः॥अनडुहा॥
दसां सेः॥वसु स्रंसु ध्वंसु भ्रंस अनडुह इत्येतेषां सेः पदा
न्ते दत्वं भवति॥अनडुद्भ्याम्॥अनडुद्भिः॥अनडुहे॥
गोडुहशब्दस्य भेदः॥दादेर्घः॥दादेर्धातोर्हकारस्य घत्वं भवति झ
से परे नाम्न्येव सेः पदान्ते च॥गोधुघ्स् इति स्थिते॥आदि
जबानां झभान्तस्य झभाः स्ध्वोः॥धातोर्भकारान्तस्य वर्त्तमा दौ
नां जबानां झभा भवन्ति सकारे ध्वशब्दे परे नाम्नः सेः प
दान्ते च॥वावसाने॥गोधुक्॥गोधुग्॥गोदुहौ॥गोदुहः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

दीर्घो धातून्नांतस्य ठस्यैवा भवति ॥ मित्रभुक् ॥ मित्रभुग् ॥
मित्रभुजा ॥ मित्रभुजः ॥ मित्रभुजौ ॥ मित्रभुजः ॥ तथा नलमत
शब्दः ॥ नैकांतः वतुन्नशब्दो निलंतं बहुवचनांतः ॥ व
तुन्नामशौवा ॥ वतुन्नशब्दस्य नागमो भवति धं वहुप
रे धुशौ वा ॥ वत्वानः ॥ वतुनः ॥ वताभिः ॥ वतुभ्यः ॥ नः 39
31 संख्यायाः ॥ नैपंचतनः संख्यायाः पंचस्वाभ्यानुडागमो
52 भवति ॥ त्यर्थं लिं त्यंव ॥ वतु स्तोम ॥ वतुषु ॥ नका नान्तो
राजनशब्दः ॥ नोपधायाः दीर्घः ॥ नालोपोपसर्गौ
नाम्नो नकारान्तस्यानागमः नोपरं भवति नलोप

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible] आदेशो भवति पाश्चात्ये परे॥ भानौ हः॥ भानौ हा॥ भानवा
ऽ भानुभ्य इत्यादि॥ स्नेहः [illegible] सखि॥ सखि शेषस निमित्ते: सकारस्य
धकारादेशो भवति घोषे परे॥ तुना साह॥ तुना साहौ॥ तुना
साहो॥ तुना साहः॥ तुना साहम॥ तुना साहौ॥ तुना साहः॥
तुना साहा॥ तुना साड्भ्यां॥ तुना साड्भिः॥ तुना साहे॥ तुना
साड्भ्याम॥ तुना साहः॥ तुना साड्भ्यां॥ तुना साड्भ्यः॥
तुना साहः॥ तुना साहोः॥ तुना साहाम॥ तुना साहि॥ तुना सा
होः॥ तुना साट्सु॥ हे तुना साट्॥ हे तुना साहौ॥ हे तुना साहो
हे तुना साहः॥ इत्यादि॥ दुरादीनां [illegible] वेवा॥ दुरा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सारस्वत इत्यादि ॥ स्वन पवन मघवन शब्दाभोपंद स नाज न शब्दवत्ता नौ॰
क्रिया ॥ शसादौ तु विशेषः ॥ स्वादेः ॥ स्वादेर्व कानस्य उत्वं
प्राप्तोति शसादौ स्वाने पवे तद्धिते ईपि इकारे च ॥ शुनः ॥
शुना ॥ श्वभ्याम् ॥ श्वभिः ॥ इत्यादि ॥ युवन शब्दस्य व
कारस्योत्वे कृते ॥ स वर्णो दीर्घः सह ॥ यूनः ॥ यूना ॥ यु ३२
वभ्याम् ॥ इत्यादि ॥ मघोनः ॥ मघोना ॥ इत्यादि ॥ पथि
५३ न शब्दस्य भेदः ॥ इतोत्यन्त्वस ॥ पन्थस्यादि बुम
३२ थ्यादीनामिति कानस्या कानादेशो भवति ॥ थोन्द ॥
पथ्यादीनां थकारस्य नङ गमो भवति पन्थस प
बु ॥ वपन सि इति स्थिते ॥ नश्वापदान्ते झले ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

न भ्य न भ्य नौ नयोः न ओः ॥ ८ सच नु भ्य भ्य न यो स मा ॥

दान्ते नास्ते ॥ राजा ॥ राजानौ ॥ राजानः ॥ अधाति तिविशेषा
शसि ॥ हे राजन् ॥ हे राजानौ ॥ हे राजानः ॥ राजानम् ॥ राजानौ
सादेः ॥ ते राजन् ॥ हे राजन् ॥ अभ्युक्ता ॥ सादेः ॥ त्तोः स्व निरुः म अल
ल्लोपः स्वे भ्यु क्ता ६ सादेः ॥ पोजो भवति ॥ राज्ञः ॥
रः ॥ राज्ञोः ॥ न कान अभाव सं योजो भवति ॥ इति नियमादज्ञात्वं
राज्ञा ॥ नोप स्वि पुनर्न संधिः ॥ इति नियमादज्ञात्वं
नभवति ॥ राजभ्याम् ॥ राजभिः ॥ राज्ञे ॥ राजभ्याम् ॥ रा
जभ्यः ॥ राज्ञः ॥ राजभ्याम् ॥ राजभ्यः ॥ राज्ञः ॥ राज्ञोः ॥
राज्ञाम् ॥ राज्ञि ॥ राजनि ॥ राज्ञोः ॥ राज्ञोः ॥ राजसु ॥ स
वेन ज्वन आत्मन स धर्मेल प्रभृतयः ॥ अभ्युक्ता
दि ति वि वो ष वाव द नो वा सि ॥ प ज्वन ॥ यज्वना ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नकारे जिरितात्तिचपचे १ नाम

कारस्य [illegible] न वा ति ॥ [illegible] ब व संयोगेऽपाव [illegible] लिप

वार्णः ॥ [illegible] ॥ [illegible] रत्यादि [illegible]

३३ पूषन्शब्दस्य शेषं [illegible] दीर्घस्यैवोपधे ॥ [illegible] लोपो वा वकारे व्यः ॥ [illegible] ॥ षकारमनकारान्तसंख्या ३३

[illegible] भवति ॥ पूषा ॥ पूषणौ ॥ पूषणः ॥ पूषणं ॥ पूषणौ ॥ पूष्णः ॥ पूष्णा ॥ पूषा ॥ पूषा

पूषभ्यां ० पूषभिः ॥ [illegible] लोपो वेति केचित् ० पूष्णि ० पूषणि ० पूषसु ० इत्यादि ० अर्य

मा ० अर्यमणौ ० अर्यमणः ० अर्यमणं ० अर्यमणौ ० अर्यमणः ० अर्यमणा ० अर्यमभ्यां

अर्यमभिः ० इत्यादि ० संख्याशब्दाः पंचनप्रभृतयो बहुवचनान्ता त्रिषु समरूपाः ० पंच

न्जस् इति स्थिते ० [illegible] ० षकारनकारान्ता संख्यायाः जश्शसोर्लुग्भवति ० लु

किसति तन्निमित्तं कार्यं न भवति ० प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणं ० [illegible] नलं [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

औसौ ॥ पथ्यादीनां टेनात्वं भवति सौ परे ॥ पन्थाः ॥ पन्थानौ ॥
पन्थानः ॥ हे पन्थाः ॥ हे पन्थानौ ॥ हे पन्थानः ॥ पन्थानम् ॥ पन्था
नौ ॥ पथः ॥ पथ्यादीनां टेर्लोपो भवति शसादौ स्वरे परे ॥
पथः ॥ पथा ॥ पथिभ्याम् ॥ पथिभिः ॥ इत्यादि ॥ एवं मथिन्
ऋभुक्षिन्शब्दौ ॥ दण्डिन्शब्दस्य भेदः ॥ इन्हन्शौ सौ ॥ इ
न्हन्पूषन्अर्यमन् इत्येतेषां शौ सौ चा धो परे उपधायो
दीर्घो भवति नान्यत्र ॥ दण्डी ॥ दण्डिनौ ॥ दण्डिनः ॥ हे दण्डि
न् ॥ हे दण्डिनौ ॥ हे दण्डिनः ॥ इत्यादि ॥ ब्रह्मन्शब्दस्य भेदः ॥
ब्रह्मा ॥ ब्रह्माणौ ॥ ब्रह्माणः ॥ हे ब्रह्मन् ॥ ब्रह्माणम् ॥ ब्रह्म
णौ ॥ शसादौ टाविशेषः ॥ अल्लोपो ॥ हन्तेर्घाताहे

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नेष्ठं ।।
कल्मे ।।
वसिष्ठो ।।
प्रतपूजापां ।।
स्वश्रूवधोः ।।
स्वभुजिश्च
पता ... मू
र्थे ।। न्यूनं वि
श्लेषे ।। प्लप्
कृषि ला
र्थे ।। शश्वत् पौ
नः पुन्यैनित्यं
त्नार्थे ।। पु
गपत् एककां
ले ।। भूयस्य
न स र्थे ।। नोहे
पुस्यानं मे ।।
हलहेधिविब
देवे ।। विलाव

पञ्चस्वसास्संबोधे तु संबोधने तेन पूर्वान्ते
स्यादेवहै यो ।। भिक्षवे स्वामी

।। [illegible] ।।

न्हहे जयि हे भो स्मान्न न्त्रसर्वदा विशेषपूर्वान्तु हे नेकपालो न‍ः पाहि सद्धौ
दावन्तदेवनः यादि भिक्ष ।। यवा ह स्हे स्वरभिर्य ग्गे नैने स्राव योधेन यो स्वे
शोहयि स्रो मे वन त्वा तु स्वचान्त्व पज्ञानार्थ धान्नु भियो गावन बेतसालो
सभीवते मेत त्स्वरूपं ख्यापति वा न्त्वज्ञाने तेमेक स्वापश्यति
वेव्हा विषमा ... नपूर्वौ त्रृथमांता स्यवयोनच्या देशे भेने वा
मेत स्वसप्वहे जेन हविस्तो आपतेसमाम् ।। वा मेति बा यादि वि
पातः ।। वा । जा । हा । स्वह । स्व । स्वस । नून । पृथक् । शश्वत् । युगपत् । भूय
स । नह । तेन । विना । नाना । स्वस्ति । स्वति । दोषा । नक्तं । मृषा । मिथ्या ।
सृषा । स्व्धा । स्वहा । स्वयस । त्वस । उच्चैस । नी ... चैस । शनैस ।।
र्मने ।। नाना अनेकार्थे ।। स्वस्तीति कल्याणे ।। अस्तीति सत्तायां ।। दोषेति रात्रौ ।। नक्तमिति रात्रौ ।।
मृषा मिथ्यार्थे ... अग्निनाता ... इति मनुष्याणांतन ... स्वधा ... ।। स्वर

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

55

इतरमात्स्मात्स्यलन्तरमात्
सम्बोधनम्

ऽवतिऽचपो वाक्यंऽरमिश्वत

भेमे

तेभ्यो वा न्तौ वस्नसौ तपोपिभ्यास ह्ये नामी स्यादेशाभवंति तेभ्ये कवचे नेनस
ते भे द्विवचने नेवा न्तौ बहुवचने न वस्नसौ॥ त्वा मा मा॥ श्व तास तितपोपि
छन्दस्म दोस्त्वा मा रतो भवतः॥ ॥श्रीशस्त्वा वतु मा पोह दत्ता ते भो पिशस्ते
सः॥ त्वा भो ते भो पि सह भि न्पातु वा मपि नौ विभुः॥१॥ सुखं वां नो ददात्वी
शः पतिर्वा मपि नौ हरिः सोऽव्याद्वो नः शिवं वो नो दद्यात्से व्योत्र वः स नः॥२॥
श्वन त्वादेशा अत्वादेशा नित्यं॥ धातासे नवभक्तोऽस्ति न स्मे ते ह जपे लभः॥
नादौ॥ वाक्यादौ पादादौ वर्तमानयोर्युष्मदस्मदोर्जैन्ने एकारस्थानं वाक्यर।
त्वां पातु वेदैन शेषैः संवेषोऽस्मान्लोकः सर्वदा वा॥ विशेषणपूर्वसंबोधने
नन पूर्वसंबोधनं च हित्वाऽन्यस्मात्संबोधनात्स्मत्पयोर्जैन्ने देवास्मान्पाहि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

शुक्रौ शुक्रे। यथा कथा चेत्यमनादेशः। यादप्यादि आः हे है भो अये एते संबोधने। वैहिं साम्प्रति योऽम्यपा
दपूर्वरो षु॥ विषुना नार्थे इति ना च संबोधने एकपदे इत्यस्मात् इत्यर्थे॥ पुत कुत्सा
या श्रौषट् वौषट् हविर्दाने

अथो अथ पश्चात् ऋकम् यथा तथा कथम् इत्थम् पादप्याद् अ
ह आदङु: आः हे है भो अये वैविषड् ते अत्र एकपदे
तावत् द्राक् मङ्क्षु पुत् आत् श्रौषट् वौषट् इत्यादि त
थादिर्विभक्त्यर्थे निपात्यते तस्मिन्निति तत्र एतस्मिन्नि
ति एतत्र अत्र यत्र कुत्र कुह क्व तस्मिन्काले तदा य
दा कदा सदा सर्वदा एकदा अन्यदा नैतप्रकारेण त
था यथा सर्वथा कथम् इत्थम् अस्मादिति इतः अतः
एकस्मादिति एकतः ततः यतः कुतः सर्वतः बहुतः सार्व
विभक्तिकस्तसित्येके आदितः मध्यतः अन्ततः पूर्वतः

स्वधा
ऽभमे
ष्टू पारअ
हमिति मांत
म अयमहं
कारे॥३५
भमिति
मे अहं
पुः अहंगो
नू स
मंयु: प्र
मौनि

अहइति
आश्चर्ये॥
आदङ: इति
भर्त्सनार्थे
अये इति नी
चसंबोधने
उपहासे इति
त्यागे॥ द्राक्
इति इवदर्थे
मङ्क्षु इति को
प र्थे॥
अ
रइती त्यर्थे

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अधरूसल्ये॥ निकृन्निन्दभर्त्सनयोः॥ अतवर्जने॥ आरात् दूरसमीपयोः॥ दिवा दिवसे॥ रात्रौ
निशि॥ सायमिति निशामूले॥ चिरमिति बहुकाले॥ मनाक् ईषदर्थे मात्र्ये॥ दोषं सुखे मौने च
तूष्णीमिति मौने॥ बहिस् अवसइमो बाह्ये॥ समयेति सामीपे मध्ये च॥ निकषेत्यन्तिके॥ अद्धेतिलहाव

अधक॥ धिक्॥ अतो॥ आयात्॥ दिवा॥ रात्रौ॥ सायं॥ चिरं॥ मनाक्
ईषत्॥ दोषं॥ तूष्णीं॥ बहिस्॥ अवस्॥ समया॥ निकषा॥ अद्धा॥ वन्
साम्रि॥ सना॥ सनत्॥ सनात्॥ तिरस्॥ अन्तरा॥ अन्तरेण॥
सहसा॥ अलं॥ वषट्॥ नमः॥ मिताङ्गसा॥ पुरा॥ मिथो॥ मिथस्
प्रायस्॥ मुहुस्॥ साकं॥ साकं॥ नमस्॥ हिरुक्॥ मा॥ माङ्॥
स्वर्॥ प्रातर्॥ पुनर्॥ सनुतर्॥ नू॥ यावत्॥ तावत्॥ स्वाहा॥ स्वधा॥
तथाहि॥ खलु॥ किल॥ सुष्टु॥ दुष्टु॥ आदह॥ उपसर्गस्वरविभक्तिप्र
तिरूपकाश्च॥ अवदत्तं॥ अहंपूः॥ हे॥ भो॥ अ॥ आ॥ इ॥ ई॥ उ॥ ऊ॥ ए॥ ऐ

१।२।४।१८। विहायसाविपदर्थे॥ पुरा पूर्वे॥ चिराय बहुकाले॥ मिथो मिथस्तरेतनहस्य
... भुहुसहनथे॥ साकं साई सम ... हतेसहार्थे॥ नमस्नमते॥ हिरु
... ... अन्तरिति मध्ये॥ प्रातर्
... इति
... मा माङ् एतौ निषेधे ... सन्नुतरन्तर्नधाने॥ यावत्
... पुनर् ... प्रथमे ... च॥ तावत् ... इति

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सरस्व० प्रक्रि० प०

मधु मद्यं मधुक्षौद्रं मधु पुष्परसो विदुः मधुर्दैत्यो मधुश्चैत्रो मधुर्दि-
पि मधुः स्मृतः ॥

ते इवं भवनीयापि यत्र न स्यात्तत्र दीर्घोऽसावसिद्धि-
स्तत्र सर्वत्र स्यात् यो गत्यर्थे नरा दत्तेऽलिङ्गात्तं
अन्यत्र भवत्यभ्यासेनाभिलिख्यते उव-
र्णो वत्वमापद्यते स्वरे परे मधु अत्र मध्व-
त्र मध्वत्र ऋवर्णो रत्वमापद्यते स्वरे परे पितृ
अर्थः पित्रर्थः ऌवर्णो लत्वमापद्यते
स्वरे परे ऌ अनुबन्धः लनुबन्धः एअ
एकारो अय् भवति स्वरे परे ने अनम् नयनम्

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible] २।१५

॥ सजूः। सजुषौ। सजुषः। हे सजूः। हे सजुषौ। हे सजुषः। सजूर्भ्याम्। सजूर्भिः। सजूःषु सजूष्षु ॥ १२५८ ॥

इत्यादि। सकारान्तः पुंस् शब्दः। पुंसोऽसुङ्। पुंस् शब्दस्यासुङ् स्यात् सर्वनामस्थाने परे। पुमस् इति स्थिते

ने। उगिदचाम्। सान्तमहतोः नोपधायाः दीर्घः। हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्। संयोगान्तस्य लोपः। पुमान्। पुमांसौ। पुमांसः।

पुमांसम्। पुमांसौ। पुंसः। पुंसा। पुंभ्याम्। पुंभिः। [illegible] ॥ [illegible]

स्यात् [illegible] वसुप्रत्ययान्तस्य सम्प्रसारणं भवति सुपि परे। वसोः संप्रसारणम्। संयोग

॥३७॥ योः सकारककारयोः लोपो भवति धातोर्न संयोगान्ते अपरे नामप्रत्यये परे च। पुंसु। [illegible]

द्वान्। विद्वांसौ। विद्वांसः। हे विद्वन्। हे विद्वांसौ। हे विद्वांसः। विद्वांसम्। विद्वांसौ। विदु

वसोः संप्रसारणम्। वसोर्वकारस्य उकारो भवति धातोरन्यस्य परे तद्धितप्रत्यये परे च। विदु

षः। विदुषा। [illegible]। विद्वद्भ्याम्। विद्वद्भिः। [illegible]नाम्। विद्वत्सु। सुवचस्

शब्दस्य अत्वसन्तस्य चाधातोरिति दीर्घः। सुवचाः। सुवचसौ। सुवचसः। सुवचः। सुवचसम्। सुवचसौ।

सुवचसः। सुवचसा। सुवचोभ्याम्। सुवचोभिः। [illegible]

उशनसम्। [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible] उशनसाम्। उशनसि [illegible]

अमासो ऽर्ङ्के। षट्। षड्। षट्। षड्। षड्भिः। षड्भ्यः। षड्भ्यः॥ सः। षकार नकारान्त
संख्यायाः परस्या मो नुडागमो भवति। षड्नाम् ऊन्तिष्यते। ...॥ संख्यासम्बन्धि
नोऽकार स्वराः भवन्ति नामिपरे। षण्णाम्। षट्सु॥ कविस्पदान्ते पदान्तास्त्र
ष्णाः॥ दोषः॥ दोषस् सजुष् आशिष् हविष् धनुष् प्रभृतीनां षकारस्य रेफो भव
ति रसिपदान्ते च। दोः। दोषौ। दोषः। दोषम्। दोषौ। [illegible]
दोषः। दोष्णः। दोषा। दोष्णा। दोषा। दोषभ्याम्। दोर्भ्याम्।
दोषभ्याम्। दोर्भ्याम्। दोषभिः। दोर्भिः॥ दोषे। दोष्णे।
दोषभ्यः। दोर्भ्यः। दोषभ्यः। दोर्भ्यः। दोषः। दोष्णः। दोषभ्याम्। दोर्भ्याम्।
दोषिः। दोषोः। दोष्णोः। दोषस्सु। दोष्षु। दोःषु। दोषाम्। दोष्णाम्। दो षि। दोषणि
सजुषादिषु पदान्ते पदान्तेऽचाद्यो

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मूभ्याम्। अमुष्मा अमुयोः। अमीषाम्। अमुष्मिन्। अमुयोः। अमीषु। सामान्येऽ
दसः कः स्यादितश्च॥ सामान्ये वाच्ये सति अदस् शब्दस्य कप्रत्ययो भवति। अमु
कः अमुकौ। अमुके। अमुकम्। ॐ इति हसान्ताः पुल्लिङ्गाः॥ ॐ अथ हसान्ताः
स्त्रीलिङ्गाः प्रदश्यन्ते॥ हकारान्तः उपानह् शब्दः। नहोधः। नहो हकारस्य धका
॥३७॥ देशो भवति रसे पदान्ते च। वावसाने दत्वं। उपानत्। उपानद्। उपानहौ। उपा
हः। हे उपानत्। हे उपानद्। हे उपानहौ। हे उपानहः। उपानहम्। उपानहौ। ॥३७॥
59 उपानहः। उपानहा। उपानद्भ्याम्। उपानद्भिः इत्यादि। वकारान्तो
दिव शब्दः। दिव औ। दिवो वकारस्य औकारादेशो भवति सोपरे। द्यौः।
दिवौ। दिवः। वा मि। दिवो वकारस्य उत्वं वा भवति अमि परे। द्याम्। दिवम्।
दिवौ दिवः। [illegible] [illegible] ... [illegible] चतुर
[illegible] ... [illegible] तस्यचनस्य॥ ॥ ॥ ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

उशनसो ऽधौ नान्तताऽदन्तता चास्य ॥ हे उशनन् ॥ हे उशन ॥ हे उशनः ॥ उ
शनोभ्याम् इत्यादि ॥ सकारान्तस्य अदस् शब्दस्य भेदः ॥ त्यदादेष्टेरः स्यादावि
ति सर्वत्राकारे कृते अद सि इति स्थिते ॥ सौ तः ॥ सौ परे अदसो दकारस्य सत्वं भव
ति ॥ सेरौ ॥ अदसः सेरौकारादेशो भवति ॥ असौ ॥ द्विवचने अद औ इति स्थिते ॥
मातङ् दस्यमः ॥ मादू ॥ उश्च ऊश्च उः ॥ अदसो मकारात्परस्य ह्रस्वस्य ह्रस्वोकारो भव
ति ॥ दीर्घस्य दीर्घः ॥ अमू । बहुवचने सर्वादित्वाज्जसी अद इ । अमे इति स्थिते ।
एत ईद्बहुत्वे । बहुत्वे सति अदस एकारस्य ईकारो भवति अमी । अमुम् अमू ।
अमून् । मलेडत्वे कृते । टा नाऽस्त्रियाम् । अमुना । द्विवचने । अम्दीत्यात्वं प्रत्वा
ऊकारः । अमूभ्याम् । अमीभिः । अमुष्मै । अमूभ्याम् । अमीभ्यः । अमुष्मात् । अ

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वतःस्त्रियां अकारान्तान्नाम्नस्त्रियां वर्तमानादाप्प्रत्ययो भवति पकारस्सित्सोपा
र्थः सवर्णे दीर्घः सहेति दीर्घे कृते स्त्रीलिङ्गे सर्वशब्दवद्रूपं नेयम् सर्वा सर्वे सर्वाः सर्वाम्
सर्वे सर्वाः सर्वाभ्यां सर्वाभिः सर्वस्यामित्यादि सा ते ताः या ये याः षत्वं एषा एते एताः द्वि
तीयाटौस्स्वेनादेशः द्विवचनादौ टौस्सु एने अ एतः स्त्रियाम् एनामित्यादि एवं
३८ का के काः इत्यादि इयम् स्त्रियां इदमशब्दस्य स्त्रियां मि यं भवति सि सहितस्य इयं इमे इ ३८
माः इमां इमे इमाः अनयोः अनया आभ्यां आभिः अस्यै आभ्यां आभ्यः अस्याः आ
भ्यां आभ्यः अस्याः अनयोः आसां अस्यां अनयोः आसु चकारान्तस्त्वचशब्दः चोः कु
रिति कुत्वम् त्वग् त्वक् त्वचौ त्वचः त्वचं त्वचौ त्वचः त्वचा त्वग्भ्याम् त्वग्भिरित्या
६० दि एवं वाच्‌वाचप्रमृतयः पकारान्तोऽपशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः अप् जस्
इति स्थिते जसं मतोऽजादिति दीर्घः आपः अपः मिदपौ अपादीनां भकारे परे द
त्वं भवति अद्भिः अद्भ्यः २॥ अपां० अप्सु धकारान्तो दिवशब्दः दिवां ० दिवर्
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

परतः स्त्रियां वर्तमानयोस्त्रि चतुरशब्दयोः तिसृ चतसृ इत्येतावादेशौ भवतः ॥ अका

श्री रश्च ॠकारस्य तृतीयादिस्वरे इत्यासन्न भवति तिस्रः चतस्रः तिसृभिः चतसृभिः ति

सृभ्यः चतसृभ्यः न नामि दीर्घः तिसृचतसृ इत्येतयोर्नामि दीर्घो न स्यात् ॥ छन्दसि

वा तिसृचतसृ इत्येतयोर्वा छन्दसि दीर्घो भवति नामिपरे तिसृणां चतसृणां ति

सृषु चतसृषु ध्वोर्विं हिंसे धातोरीकारोपधे रूपे दीर्घो भवति पुंफ वकारयोर्हस

परयोः गीः गिरौ गिरः गिरं गिरौ गिरः गिरा गीर्भ्यां गीर्भिः इत्यादि गीर्षु ॥ स्वं पुनरुदाद

पः धकारान्तः समिध् शब्दः वावसाने समित् समिद् समिधौ समिधः समिधं समिधौ स

मिधः ॥ समिधा । समिद्भ्यां । समि द्भिः ॥ इत्यादि समित्सु भकारान्तः ककुभ् शब्दः ॥

ककुप् ककुब् ककुभौ ककुभः । ककुभं ककुभौ ककुभः ककुभा हे ककुप् हे ककुब्

दकारान्तस्य यादृशः तेषां मयादेः तत्स्वाद ... सर्वेषां कारः पः इति सत्येषां

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वार्शब्दः नपुंसकत्वात्स्यमोर्लुक् वाः वारी वारि पुनरपि वाः वारी वारि अ
पम् इति विशेषणान्नुम्न भवति वारा वार्भ्याम् वार्भिः वारे वार्भ्याम्
वार्भ्यः वारः वार्भ्याम् वार्भ्यः वारः वारोः वाराम् वारि वारोः वार्षु हे वाः
हे वारी हे वारि चतुर्शब्दो नित्यं बहुवचनान्तः चत्वारि शौचे त्याम्
चत्वारि इत्यादि शेषं पुंवत् नकारान्तो अहन्शब्दः अन्हः सः अहन्
८० शब्दस्य सम्बुद्धौ भवति न संपदान्ते च रोर्विसर्गः अहः ईलो वेत्योः अ ८०
न्ही अहनी अहानि पुनरपि अहः अन्ही अहनी अहानि अन्हा अ
होभ्यां अहोभिः अन्हे अहोभ्यां अहोभ्यः अन्हः अहोभ्याम् अहोभ्यः
अन्हः अन्होः अन्हाम् अन्हि अहनि अन्होः अहस्सु अहःसु हे अ
हः हे अन्ही हे अहनी हे अहानि ब्रह्मन्शब्दस्य न संपदान्ते च नकारस्य लोपः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ह्यास्पृशोमृशाङ् स्यादीनां च से पदान्ते च कत्वं भवति दिक् दिग् दिशौ दिशः हे दि
क् हे दिग् हे दिशौ हे दिशः दिशं दिशौ दिशः दिशा [illegible] दिग्भ्यां दिग्भिः।
दिक्षु षकारान्तस्त्विषशब्दः त्विट् त्विड् त्विषौ त्विषः हे त्विट् हे त्विड् आशिषशब्द
स्य सकारान्तशब्दः तद्रूपाननेयं आशीः आशिषौ। आशिषः हे आशीः स्त्रीलिंगस्य
अदस्शब्दस्य सौ न विशेषः। द्विवचने टेत्वं लक्ष्यते। आवतः त्यदाद्यत्वम् विभक्ति
कार्यत्वं० पश्चादमादूत्वं ह्रस्वस्य ह्रस्वो कारः दीर्घस्य दीर्घः असौ अमू अमूः अ
मूं अमू अमूः अमुया अमूभ्यां अमूभिः अमुष्यै अमूभ्यां अमूभ्यः अमुष्याः अ
मूभ्यां अमूभ्यः अमुष्याः अमुयोः अमूषाम् अमुष्याम् अमुयोः अमूषु इति
हलन्ताः स्त्रीलिङ्गाः अथ हलन्ता नपुंसकलिङ्गाः प्रदर्श्यन्ते तेषु [illegible] वार

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

महती। महान्ति। सकारान्तः पयस् तेजस् प्रभृतयः। पयः। पयसी। पयांसि। अदस् शब्दस्य
मोर्दुत्वे कृते। सोर्विसर्गः। द्विवचने ढत्वे कृते मवोर्वे अदः। अमू। अमूनि। षोषपूर्व
ऽतः ॐ इति हसान्तानपुंसकलिङ्गाः॥ ॐ॥ अथ युष्मदस्मदोः स्वरूपं निरूप्यते। तयो
र्वाच्यलिङ्गत्वात्त्रिष्वपि लिङ्गेषु समानं रूपम्। त्वमहं सिना। युष्मदस्मदोः सि
हितयोः त्वमहमित्येतावादेशौ भवतः। यथासंख्येन। त्वम्। अहम्। युवावौ द्विवचने।
युष्मदस्मदोः द्विवचने परे युव आव इत्येतावादेशौ भवतः॥ आमौ। युष्मदस्मदोः
॥४१॥ परऔ आम् भवति। युवाम्। आवाम्। यूयं वयं जसा। जसासहितयोर्युष्मदस्म ॥४१॥
62 दोर्यूयं वयं इत्येतावादेशौ भवतः॥ यूयम्। वयम्। त्वन्मदेकत्वे। युष्मदस्म
दोः त्वत् मत् इत्येतावादेशौ भवतः॥ एकत्वे गम्यमाने। आम् शसो। युष्म
दस्मदोः शस आम् भवति अमि सकारे भकारे च परे॥ त्वाम्। माम्। युवाम्। आ
वाम्। न्यदादौ + +

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अस्न। अस्नरणि। अस्नानि। पुनरपि। अस्न। अस्नरणी। अस्नानि। अस्नरणा। अस्नभ्याम्। अस्नभिः।
अस्नसे। इत्यादि। एवं चर्मन्। अस्नन्। प्रभृतयः॥ नान्तादन्ता छन्दसि ङिस्यो वा
लोपः। छन्दस्यागमजानागमजयोः लोपालोपो भवतो यो। दीर्घत्वं न नियमे
परमे व्योमन्। सर्वा भूतानि। त्यदादीनां स्यमो चुकि कृते एत्वं न भवन्ति स्यादिवि
भक्ति विशेषणात्। द्विवचनादौ टेरेत्वे कृते सर्वशब्दवद्रूपं नेयम्। त्यत्। त्यद्। त्ये। त्या
नि। पुनरपि त्यत्। त्यद्। त्ये। त्यानि। तत्। तद्। ते। तानि। पुनरपि॥ तत्। तद्। ते। ता
नि। यत्। यद्। ये। यानि। पुनरपि यत्। यद्। ये। यानि। एतत्। एतद्। एते। एता
नि। पुनरपि। एतत्। एतद्। एते। एतानि। एनं। एने। एनानि। किं। के। कानि। ५३
तृतीयादौ पुंवत्। चकारान्तः प्रत्यच्छब्दः। प्रत्यक्। प्रत्यग्। प्रतीची। प्रत्यंचि। तका
रान्तो जगच्छब्दः। जगत्। जगद्। जगती। जगन्ति। सांमहत इति दीर्घः। महत्। महद्।

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

त्। एनदे३

युष्माकं। अस्माकम्। त्वयि। मयि। युवयोः। आवयोः ६

मा दत्वत°

अहं। युवाम्। आवाम्। यूयम्। वयम्। त्वाम्। माम्। युवाम्। आवाम्। युष्मान्। अस्मान्। त्व
या। मया। युवाभ्याम्। आवाभ्याम्। युष्माभिः। अस्माभिः। तुभ्यम्। म[ह्य]म्। युवाभ्याम्
आवाभ्याम्। युष्मभ्यम्। अस्मभ्यम्। त्वत्। मत्। युवाभ्याम्। आवाभ्याम्। युष्मत्। अ
स्मत्। तव। मम। युवयोः। आवयोः। युष्मासु। अस्मासु। अथानयोरादेशविशे
षविधिर्निरूप्यते। युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयाभिस्तेमेवांनौवस्नसौ।
॥६२॥ युष्मदस्मदोरमी आदेशाः पञ्चाक्षंख्ये न भवन्ति॥ कोऽर्थः। युष्मदस्मदोः षष्ठी ॥६२॥
चतुर्थीद्वितीयासहितयोः। तत्रैकवचनेन तेमे। द्विवचनेन वांनौ। बहुवचनेन वस्
62 नसौ भवतः। ५। तद्यथा। स्वामीतेसः समापातः स्वामीमेसांप्रतंगतः॥ नमस्तेभग
वन्भूयो देहि मे मोक्षमव्ययम्॥१॥ स्वामी वां सज्जनो ह्यौ चैदं दानौ दानयाचनाम्॥
राजा वां दास्यते दानं ज्ञानं नौ मधुसूदनः॥२॥ देवो वो भवतान्नित्यं विभुर्नरकान्नौ जनार्दनः॥५॥
स्वामी वो वल्लवानां राजा स्वामी नोऽसौ जनार्दनः॥३॥ नमो वो [illegible] ते नो [illegible] नं नो देप

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham.

रत्वे कृते शसि नि दीर्घत्वं शसो नो वक्तव्यः। युष्मान्। अस्मान्। त्वन्मदादेशौ कृते एकारः
एटाङ्योः॥ युष्मदस्मदोष्टे एत्वं भवति टाङीत्येतयोः परयोः। अपादेशः। त्वया। मया। युवा
भ्याम्। आवाभ्याम्। युष्माभिः। अस्माभिः। तुभ्यं मह्यं ङया॥ ङया सहितयोर्युष्मदस्म
दोस्तुभ्यं मह्यं इत्येतावादेशौ भवतः। तुभ्यम्। मह्यम्। युवाभ्याम्। आवाभ्याम्।
भ्यस भ्यम्॥ युष्मदस्मद्भ्यां परो भ्यस भ्यं भवति। शकारो भकारादित्वव्यावृत्त्य
र्थः तेनात्वैत्वे न भवतः। युष्मभ्यम्। अस्मभ्यम्। ङसिभ्यसोस्तु पंचम्याः॥ ङसिभ्यसो
स्तुर्भवति। शकारः सर्वादेशार्थः। त्वत्। मत्। युवाभ्याम्। आवाभ्याम्। युष्मत्।
अ स्मत्। तव मम ङसा॥ ङसा सहितयोर्युष्मदस्मदोस्तव मम इत्येतावादेशौ भवतः॥ त
व। मम। युवयोः। आवयोः। सामाकम्॥ युष्मदस्मदोः परस्य सामाकं भवति सर्वादि
त्वात्सुट्। युष्माकम्। अस्माकम्। त्वयि। मयि। युवयोः। आवयोः। युष्मासु। अस्मासु। त्वं

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

स्वस्ति। अस्ति। दोषा। नक्तं। मिषा। मिथ्या। अथस्। अथ। अथो। ह्यस्। श्वस्। उ
च्चैस्। नीचैस्। स्वर्। अंतर्। प्रातर्। पुनर्। भूयस्। अहो। स्वित्। सहं। ऋते। अं
तरा। नमस्। अलं। हंत। अ। मा। नो। ना। प्रतिषेधे। किल। खलु। वै। आरात्।
६४ दूरात्। भृशं। पत्। तत्। स्वरादश्च। इत्येवमादिगणो निपातसंज्ञको भवति॥ ४६
तत्रादिविभक्त्यर्थे निपात्यते॥ तस्मिन्निति तत्र॥ यस्मिन्निति यत्र॥ कस्मि
न्निति कुत्र। कुह। क्व॥ तस्मिन्काले तदा॥ यस्मिन्काले यदा॥ कस्मिन्काले क
दा॥ तेन प्रकारेण तथा॥ केन प्रकारेण कथं॥ अनेन प्रकारेण इत्थं॥ त
स्मादिति ततः॥ यस्मादिति यतः॥ कस्मादिति कुतः॥ सार्वविभक्तिकस्तसित्ये
वे। पूर्वस्मिन्निति पुरः पुरस्तात्॥ अधरस्मिन्निति अधः अधस्तात्॥ परस्मिन्नि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सानंदा न्वः प्रपश्यामेऽश्यपा मोनंस्तु ङः रविनः ॥४॥ त्वामामा ॥ अमार्ति हितपेर्युष्म
दस्मदोः त्वाम्माऽ इत्येतावादेशौ भवतः ॥ पश्यामि त्वां मदालोकं पश्य मां मदप्रे
क्षकम् ॥५॥ अनादौ ॥ पादादौ वर्तमानयोर्युष्मदस्मदोर्नैते आदेशा भवंति ॥
तवपेशात्र वोराजन् ममतैपलिशाचवः ॥ तवापि आशीया निस्युर्ममापि आशी
तान्यपि ॥६॥ रुद्रो विश्वेश्वरो देवो युष्माकं कुलदेवता ॥ स एव भगवान्नाथ्यष्म
स्माकं पापनाशकः ॥७॥ सम्बोधनपदादेते न भवंति वसादयः ॥ हे रामतवेद
सौसिते रामत्तुभ्यंनमः ॥८॥ पातु वो नरसिंहस्य नखलांगलकोटयः ॥ हिरण्य
कशिपोर्वक्षः क्षेत्रासृक्कर्दमारुणाः ॥ चादिभिश्च ॥ चादिभियोगे नैते आ
देशा भवंति ॥ तवममचसमागमस्तदास्ति ॥ चादिर्निपातः ॥ चादिर्गणो निपात
संज्ञको भवति ॥ च । वा । ह । अह । एव । एवं । नूनं । पश्चात् । विना । नाना । स्वस्ति । रा ।

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सदृशं त्रिषु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु ॥ वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययं ॥
उक्तानि लिंगान्यव्ययानि ॥ ० ॥ अथ नाम्नां लिंगविशेषविज्ञापयिषया
स्त्रीप्रत्ययाः प्रस्तूयंते ॥ आबतः स्त्रियां ॥ जाया । माया । मेधा । श्रद्धा । धारा ।
इत्यादि ॥ अजाद्यापवक्तव्यः ॥ अजा । एडका । कोकिला ॥ बाला ॥ वत्सा ।
मूद्रा ॥ गणिकाप्रभृतयः ॥ काप्यतः ॥ स्त्रियां काप्यपि परेपूर्वस्याकारस्य
इकारो भवति ॥ कारिका ॥ पाचिका ॥ पाठिका ॥ वर्ति भागुरिनल्लोपमवा
प्योरुपसर्गयोः ॥ आपं चैव हलन्तानां यथावाचा निशा दिशा ॥ १ ॥ अवगा
हं । वगाहं ॥ अपिधानम् ॥ पिधानं ॥ हस्वो वा ॥ स्त्रियां काप्यपि परे तदादेश
पूर्वस्य ह्रस्वो वा भवति ॥ वेणिका ॥ वेणीका ॥ नदिका ॥ नदीका ॥ अप्रत्यासे
नता ॥ अप्रत्यासीनता ॥ नौकादौ न भवति ॥ ना स्व लक्षणादेव

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अनित्यापन्नं अप्रत्यासाञ्च वर्गयोर्वे वेणीका ॥ वेणीकार
सौ अप्रत्यासमरा य सीतरा

का

तिपरेण॥ आहिश्च दूरे॥ दक्षिणादाहिञ्चसंति चा राज्ञालाः॥ किमः सामान्ये चिदादिः॥ क
श्चित्॥ केनचित्॥ क्वापि चित्॥ क्वचन॥ तदधीन [illegible] पोर्णसात्॥ राज्ञोधीनं॥
राजसात्॥ सर्वं भस्मं भस्मसात्॥ उरीउररी अंगीकरणे॥ उरी कृत्य॥ उररीकृ
त्य॥ सचादिः काले निपात्यते॥ समानेऽन्हि सद्य॥ अद्य॥ सपदि॥ अधुना॥
इदानीं॥ सांप्रति॥ सांप्रतं॥ पूर्वेद्युः॥ परेद्युः॥ यर्हि॥ तर्हि॥ प्रादिरुपसर्गसंज्ञ
कः॥ प्र। परा। अप। सम। अनु। अव। निर्। दुर्। वि। आङ्। नि। अधि। अपि। अति।
सु। उत। अभि। प्रति। परि। उप। अत। अंतर। आविर। अप। प्रादिगण। उपस
र्गसंज्ञकः॥ प्राग्धातोः॥ उपसर्गो धातोः प्राक् प्रयोक्तव्याः॥ तदव्ययं॥ तदिदं चा
दिशब्दरूपं अव्ययसंज्ञं भवति॥ अव्ययाद्विभक्तेर्लुक्॥ अव्ययात्परस्य विभ
क्तेर्लुग्भवति॥ तच्छब्दनिर्देशे॥ अव्ययानां नलिंगादि निय[illegible] स्ति॥ उक्तं

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

क्षत्रियपत्नी । अर्याणी । अर्या । क्षत्रियाणी । क्षत्रिया । हिमारण्ययोर्म-
त्त्वे । महत् हिमं हिमानी । महत् अरण्यं अरण्यानी । समाहारे गुणप्रवृ-
त्ती । त्रयी । पंचागी च । अदन्तात् स्त्रियामीप्रत्ययो भवति । पञ्चग्रा-
मी । जातेरयोपधात् । जातिवाचिनो ऽयकारोपधाद् अकारान्तात् स्त्रि-
यामीप्रत्ययो भवति । मही । बीहंही । कुक्कुटी । शालरणी । अयकारोपध-
॥८४॥ ग्रहणात् । क्षत्रिया । वैश्या । नरयो [illegible] । नारी । प्रथमवयोवा-
चिनः अकाराद् ईप्रत्ययो [illegible] पः । कुमारी । किशोरी । कलभी । प्रथ-
मवयोग्रहणात् । वृद्धा । स्थविरा । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।
[illegible] अकारान्ताद् स्त्रियामीप्रत्ययो भवति । सुमङ्गली । [illegible]
[illegible] मातामही । [illegible] । [illegible] । [illegible]

CC-0 Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

66

त्रादीप्। नकारात् ऋकारान्ताद्दशान्ताच्च स्त्रियामीप्प्रत्ययो भवति। दण्डिनी। का
पालिनी [illegible] नी। ष्यपराज्ञो लोपो वक्तव्यः। राज्ञी। शुनी। कर्त्री। अकारान्ता
[illegible] दीर्न भवति। पत्यलोपः। स्वक्षमावक्ष्यो ओपो भवति लोपश्च
स्वपरे। आपपरावी। ऐन्द्री। [illegible] द्वितः। षकार टकार ढकार अकारानुब
धात् स्त्रियामीप्प्रत्ययो भवति। ष·नर्तकी। ट·कुरुचरी। ढ·गोमती। अप
योरान्नमम्। अप्प्रत्ययपप्रत्ययसंबन्धिन अकारात्परस्य धातुर्नुम्
नित्यमिकार इत्येवपरे। अ·पचन्ती। पठन्ती [illegible] नदादेः। नदादेर्ग
णात् स्त्रियामीप्प्रत्ययो भवति। नदी। गौरी। गौतमी। इन्द्रादेरानीप्। इ
न्द्रादेर्गणात् स्त्रियामीप्प्रत्ययो भवति। इन्द्राणी। भवानी। रुद्राणी। मा
तुलोपाध्याययोर्वा। मातुलानी। मातुली। उपाध्यायानी। उपाध्यायी। [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

विभक्त्यर्थो निरूप्यते॥ लिंगार्थे प्रथमा॥ कालप्रत्ययपादानि विना नर्थवद्ध्रुवं
पलिंगं तस्यैवार्थे वर्तमानान्नाम्नः प्रथमा विभक्तिर्भवति॥ लिंगादयोऽपि प्रथमार्था इति
केचित्॥ कर्ता कर्म च करणं च संप्रदानं तथैव च॥ अपादानाधिकरणमित्याहुः
कारकाणि षट्॥ तत्र संबोधने ति॥ तर्हि त्रिवृत्तराजन्ते राजा गोपाल कुमारी शोभते॥ वो
भज्यते भवं भूपालः प्राणास्त्वं नामरुद्गणौ॥१॥ संति संतः क्षिपंतः कुमाराः शोभन्ते
स्वयं ते रूपं तै जनानां का॥ जेगीयंते च गीतज्ञाः भर्भ्रियंते तु जा जितः॥ आमंत्र
णे च॥ आमन्त्रणेऽपि प्रथमा दृष्टा कारकार्थे नाम्नः विभक्तिर्भवति॥ मासस्मद्य जगो लिंग
प्रसीद प्रकृत्यैश्वर्य॥ कुमारी स्वैन मासाधां दोम ध्वं भोजपाविन्नः॥३॥ भोसः॥
भोस्मगोस्स मन्त्रोस्य रस्ये तेम्यां दानिपास्यंते ध्विविबचे॥ क्षेत्रस्य भोज्ञानास्य
गोस्तु भ्यं नमोऽस्तु ते॥ अभीष्व भोम्मनापान्तधां तपांक्षोः सुवक्षमाम॥ शोभाः कार्ये

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

67

धो२

नादन्तेनीपूर्वावक्तव्यः ॥ अंगुलिः । अंगुली । आजिः । आजी । धूलिः । धूली ।
अक्तोचितिविशेषणात् ॥ कृतिः । मतिः । भूतिः । ईश्चमन्वादेः ॥ मन्वादेर्गणात्स्त्रियां
नीप्प्रत्ययो भवति ॥ ईकारादे [illegible] मनायी ॥ चकारान्मनोर्नौवा ॥ मनावी ॥ मनुः ॥
पत्न्यादयः शब्दा निपात्यंते ॥ पत्नी । अन्तर्वत्नी । सखी । अशिश्वी । अर्द्धजरती ॥ प्राची ॥
प्रतीची ॥ दामशब्दो नित्यंच तु वनांतः पुल्लिंगः [illegible] दामानौ । दामैः ॥ दामभ्यः ॥
दामभ्यः ॥ दामानाम् ॥ दामसु ॥ वोगुणात् ॥ उकारांतादुणवाचिनो वा ङीप्प्र
त्ययो भवति ॥ पट्वी । पटुः । मृद्वी । मृदुः ॥ अण्वी । अणुः ॥ बह्वी । बहुः । तन्वी ॥ तनुः ॥
इत्यादि ॥ उतश्च ॥ उकारांतादूङ्प्रत्ययो भवति ॥ पङ्गूः ॥ वामोरूः ॥ यूनस्तिः ॥ यु
वन्शब्दात्तिप्रत्ययो भवति ॥ युवतिः ॥ इभ्यो नाम त्वी स्यादपः ॥ आवंतादापइ
ति से नेपः ॥ ईयंतात् से पाठे नेप इति से नेपः ॥ पूर्ववद्रूपं नेयं ॥ ० ॥ इति स्त्रीप्रत्यय पा० ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

धात्वैर्क्रियाश्रयसाधनेच ॥ कर्त्तुर्निप्रधाने क्रियासिद्ध्युपकारके करणेऽर्थेत्रि
तीया [illegible] ति ॥ [illegible] [illegible] शवशीर्षक [illegible] कनाजेस्या
विद्वीरोपि विना नमैपृष्ठ्यलेपनः १ दानपात्रे संप्रदानकारके चतुर्थी १ ॥ वेदविदे
४७ गां ददाति ॥ छात्राय कन्यां ददाति ॥ दानपात्रे किं ॥ द[illegible]दाति दरवाऽप्रयोग ही
पतेर्नचाति भक्त्यानचेदा नाकाम्यया ॥ प्रदीपते वासनया सूपा [illegible]त सं
प्रदानकपि तुं [illegible] नीन्द्रे: ॥१॥ ना[illegible]ज्ञो दरवां ददाति ॥ रजकस्य वस्त्रं ददाति ॥
विश्लेषो वधौ पंचमी ॥ विश्लेषो विभाग [illegible] पोऽवधिश्चलनपा प्यचलनपा
वाविवक्षि । तस्मात्रापादाने पंचमी ॥ धावतोऽश्वात्पतति ॥ भ्रमतोऽवतनति
गंगा ॥ स्वं वै षष्ठी ॥ [illegible] सप्रत्युयो ज्ञेयः [illegible] त्प्रपूजनं ॥ गुरूणां वचनंप
थ्यंकवी तां [illegible] [illegible] पापि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वह्नचः१

वृद्धानो

कर्मसाधा नयोदीनपाञ्जै विश्लेषाविधौसंवंधपामभावयोः॥ कार्य्येकर्मकानके
उपाधेश्राप्येसंस्कार्य्येविकार्य्येचशेषाविभक्तयोद्वितीयाधारर्ध्ययैभमयंति॥प
वृत्तोभाविलद्वत्याच॥पत्निकनेवप्राप्यतेनदप्यं॥पत्रग्याध्यानंमेनूपकर्षावा
त्रिपतेतत्संस्कार्य्य १ कटंकरोतिफानु कोनूपप्रमपतिचुन्द्रपः॥ताज्यंप्राप्नोतिजरि
कः॥माम्संसनोतिसोमपाः १ श्राभिसर्वतसोः कार्याधिगुपर्य्यादिषुत्रिषु॥द्वितीया

द्वित्रिवृत्तेः२

मेडितांतेषुततो न्यत्रापिदृश्यते २ श्राभितोग्रामंनदीवहति॥सर्वतोमामंत
नवोद्दश्यंते॥धिग्देवदत्तं॥उपर्युपरिपुरोहितं पाचकापतंति॥ग्रोऽधः
पर्वतंसमितोगच्छंति॥एनमध्यभिपर्वतंमगागच्छंति॥समयाग्रामंशत्रु
हितः॥निकषाग्रामंफलंप्राप्तं॥कालाध्वनोर्नैरंतर्य्ये द्वितीया॥मासमधीते
कोशंपर्वतः॥अन्यथामासस्यद्विरधीते॥कोशस्यैकदेशेपर्वतः॥कर्त्तृविप्र

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पर्वतस्यसमीपदर ३

स्वाहास्वधालंवषड्योगे चतुर्थी ॥ नमो नारायणाय । स्वस्तिराज्ञे । सोमाय
स्वाहा । पितृभ्यः स्वधा । अलं मल्लो मल्लाय । वषडिन्द्राय ॥ अतेऽन्यादियोगे पं
मी । अते ज्ञानान्न मुक्तिः । अन्यो रामाद्विहीनः ॥ निर्द्धारणे षष्ठी । निर्द्धारणं जा
त्यादिना जातिप्रमुखेण समुदायात् पृथक्करणं तत्र षष्ठी । क्षोणीपरायणां मनुष्याणां ब्राह्मण
कः श्रेष्ठः । गवां कृष्णा गौः संपन्नक्षीरा । एतेषां वा अयं श्रेष्ठतमः ॥ स्वामा
॥६८॥ दियोगे षष्ठी सप्तम्यौ । गोषु स्वामी गवां स्वामी ॥ कर्तृकर्मणोः कृतो द्वौ षष्ठी
कर्त्तरि कर्मणि च षष्ठी विभक्तिर्भवति । क्तादिवर्जिते कृदन्ते शब्दे प्रयुज्यमा
ने ॥ व्यासस्य कृतिः । भारतस्य श्रवणं ॥ स्मरतेः कर्मणि च षष्ठी । स्मरतेर्धा
तोः प्रयुज्यमाने कर्मणि षष्ठी विभक्तिर्भवति । मातुः स्मरति । मातरं स्मरति
एते वा कोऽर्थः [illegible] हेतौ तृतीया [illegible] तत्त्विपः व सोः [illegible]
[illegible]

69

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible] इत्यर्थः ३ [illegible] निमित्तं ... इत्यर्थः ४ [illegible] अभिव्याप्यविद्यते इत्यर्थः ३ [illegible] विषये वर्तते इत्यर्थः ३

सबन्धः [illegible] स्मृतिस्तु मे [illegible] २ आधारे सप्तमी। आधारोऽधिकरणं। षड्विधमधिक
रणम्। औपश्लेषिकं सामीपिकमभिव्यापकं वैषयिकं नैमित्तिकमौपचारिकं चेति
कटे शेते कुमारो गंगायां घोषः गोषु शेरते। तिलेषु विद्यते तैलं [illegible] मामतं पर १ ग्रु
रुसन्निहिते धीरो गुरौ [illegible] कारणं [illegible]। भावे क्रियालक्षणम्। तत्रापि सप्तमी
वर्षति देवे चोर आयातः। [illegible] पतितो [illegible]। विनार्थसहनमःश्र
ने निर्धारणे [illegible] इत्यादि। एतेष्वपि योगे द्वितीया चा विभक्तयो भवन्ति
विनादियोगे द्वितीया। विना पापं सर्वं फलति। अन्तरेण [illegible]
जी। [illegible] वितेन अन्तरा त्वां मां मधुरिपुः। सहसहशब्दौ [illegible] समयोगे तृतीया।
सह शिष्येण आगतो गुरुः। सहशब्दे [illegible]। शाकं न [illegible]
[illegible] निमित्तः साधुः। [illegible] नमश्चन्द्रशेखराय [illegible] नमः [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible] इत्यर्थः ५ [illegible] उपचारात् प्रवर्तते इत्यर्थः ६ [illegible] कृपायां [illegible] इत्यर्थः [illegible]

कोपश्चाक्रूराय क्रुध्यति। मित्राय द्रुह्यति। गुरवे ईर्ष्यति। असूयति। ल्यप्लोपे कर्मण्यधिकरणे च पं
चमी च वक्तव्या॥ हर्म्यात्प्रेक्षते। हर्म्यमारुह्य प्रेक्षत इत्यर्थः। आसनात्प्रेक्षते। आसने उपवि
श्य प्रेक्षत इत्यर्थः॥ निमित्तात्कर्मयोगे सप्तमी वक्तव्या॥ चर्मणि द्वीपिनं हन्ति दन्तयोर्हन्ति
कुञ्जरम्॥ केशेषु चमरीं हन्ति सीम्नि पुष्कलको हतः। विषये च। तर्के चतुरः। षष्ठीसप्त
म्यौ चानादरे॥ बहूनां क्रोशतां गतश्चौरः। बहुष्व साधुष्व चदत्स्वपि स्वपमाप्यो याति सा
धुमार्गेण॥ बहुषु साधुषु निवारयत्स्वपि स्वपमनाप्यो याति साधुमार्गेण। मातापि
॥ ६९ ॥ त्रोः रुदतोः प्रव्रजति पुत्रः। अन्योक्ते प्रथमा॥ यदि देवदत्तादिभिरन्येनाख्यातेन कृत
70 चोक्तं भवति तदा प्रथमा प्रयोक्तव्या॥ घटः क्रियते। पटः कार्यः॥ छन्दसि स्यादिः
सर्वत्र। दध्ना जुहोति। पुनन्तु ब्रह्मराजास्तुतिः। अजनी विरेजुः ॥ १ ॥ इति कारकप्रक्रिया॥
अथ पार्थवादिर्भक्तिविशिष्टानां पदानां समासो निरूप्यते। समासश्चान्वयेनाम्नाम्॥
नाम्नाम् [illegible] मासे [illegible] पदानां समासः तेनाभाष्यास्तु रूपस्य स्या

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पंचमी च वक्तव्या॥ अनित्यः शब्दः कृतकत्वेन कृतकत्वात्। भयहेतौ पंचमी। चौराद्बिभेति
पापात्त्रस्यति। विद्युत्पाताच्चकितः॥ षष्ठी हेतुप्रयोगे॥ कस्य हेतोरियं कन्या॥
अन्नस्य हेतोर्वसति भिक्षुकः॥ इत्थंभावे तृतीया॥ अन्यस्यान्यत्रान्योपचारो वा व
र्त्तमानः इत्थंभावः॥ शिष्यं पुत्रेणापश्यति॥ संसारमसारेणापश्यति॥
येनाङ्गविकारः॥ येनाङ्गेन अङ्गिनो विकारो लक्ष्यते तस्मादङ्गात्तृतीया वि
भक्तिर्भवति। अक्ष्णा काणः॥ पादेन खञ्जः॥ शिरसा खल्वाटः॥ जनिकर्तुः प्रकृ
तिः॥ जायमानस्य कार्यस्य उपादानमपादानसंज्ञं स्यात्। तत्रापादाने पं
चमी॥ यस्मात्प्रजाः प्रजायन्ते तद्ब्रह्मेति विदुर्बुधाः॥ आङादियोगे पंचमी॥
आपाटलिपुत्राद्वृष्टो देवः॥ नार्थे चतुर्थी वक्तव्या॥ संपदाय श्रुतं धनेन
तोऽधर्माय संपन्नम्॥ धर्मो मोक्षाय मेधावी धनं दानाय भुक्तये॥ कृष्णादि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सा॰ स्व॰ श्रीकृष्णाय नमः॥

या १

सादेशे संप्रहरणाभिकाऽऽकोवौ वचनौ॥ यथा सादृश्ये॥ यैः सादृश्ये किं पदार्थः
स्यान्न इत्यव्ययसमासो न स्यात्॥ यथाशक्तौ सादृश्ये वर्त्तमानस्य समस्यते॥ शक्तिम
नतिक्रम्य योग्यतीति यथाशक्ति॥ अतो मन्ततः॥ अकारान्तादव्ययीभावात्परस्य वि
भक्तेरम् भवति॥ अतेवर्जयित्वा॥ कुम्भस्य समीपं वर्त्तते॥ उपकुम्भम्॥ उपकुम्भं
देहास्व॥ उपकुम्भं पश्य॥ उपकुम्भेन कृतम्॥ उपकुम्भं कृतम्॥ अनत इति
॥५०॥ विशेषणात्पंचम्या अम् न भवति॥ उपकुम्भादानय॥ वा तृतीयाः॥ टाङीत्ये ॥५०॥
तयोः परयोर्वा अम् भवति॥ उपकुम्भेति धेहि॥ उपकुम्भे निधेहि॥ अव्ययस्या
र्थे यावति यौ॥ अव्ययार्थे यावच्छब्दे प्रयुज्यमाने योऽव्ययः सोऽव्ययीभा
वसंज्ञकः समासो भवति॥ यावज्जन्ममन्त्रारी संभवंति॥ तावतो ब्राह्मणान्ना
मन्त्रयस्व यावदमत्रम्॥ मक्षिकाणामभावो निर्मक्षिकं वर्त्तते॥ ॐ इत्यव्य
यीभावः॥ ॐ अथादौ तत्पुरुषः॥ द्वितीयाघन्ते पूर्वपदे सतियोऽव्ययस्तत्पु
रुषसंज्ञकः समासो भवति॥ ... प्राप्तौ॥ ... जीवनं दासोऽधिजनम्॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

व्रीहिः कर्मधारयो द्विगुश्चेति ॥ तत्र पूर्वपदप्रधानो ऽव्ययीभावः ॥ द्विगुतत्पुरुषौ
परपदप्रधानौ ॥ द्वन्द्वकर्मधारयौ उभयपदप्रधानौ ॥ बहुव्रीहिरन्यपदप्र
धानः ॥ तस्य क्रियाभिसंबन्धादुभयपदप्रधानो बहुव्रीहिः ॥ ऐकपद्यमैकस्वर्यमेक
विभक्तिकत्वं च समासप्रयोजनं ॥ अधिहरि इति स्थिते ॥ हरिशब्दस्य द्वितीयैक
वचनेऽम् ॥ हरिमधिकृत्य प्रवर्तत इति विग्रहे ॥ अव्ययपूर्वो ऽर्थसमर्थकः पद
समुदायो विग्रहो वाक्यमिति पाठवत् ॥ तेते समासे ऽव्ययस्य पूर्वनिपातो वक्त
व्यः ॥ पूर्वेऽव्यये ऽव्ययीभावः ॥ अव्यये पूर्वपदे सति यो ऽत्यपः स अव्ययीभाव
संज्ञकः समासो भवति ॥ इति समाससंज्ञा याम् ॥ समासप्रत्ययः ॥ समासेऽन्तस
मापो विभक्तेः पूर्वपदे च परे लुग्भवति ॥ इत्यमो लुक् ॥ नामसंज्ञायां स्यादिविभक्ति
॥ अधिहरि इति स्थिते ॥ स नपुंसकं ॥ सो ऽव्ययीभावो नपुंसकलिंगो भवति ॥ नपुंस
काद्ध्रस्वत्वम् ॥ अव्ययीभावात् ॥ अव्ययीभावात्परस्य विभक्तेर्लुग्भवति ॥ अधि
हरि इत्येकार्थे ॥ नावमतिक्रान्तमतिकुल्लम् ॥ नावमतिक्रान्तमतिकुल्लम् ॥ ह

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वपसंबंधे ऽन्याव्ययेसमासोनास्तिपरस्परमसंबंधात् ॥ इतरेतरयोगेद्वंद्वसमाहारेच
वार्थेद्वंद्वसमासोभवति ॥ द्वंद्वे ऽल्पस्वरप्रधानेकारोकारान्तानांपूर्वनिपातोव
क्तव्यः ॥ पटुश्चगुप्तश्चपटुगुप्तौ ॥ अकारान्तकार्थीनामप्रयोगः ॥ चकारबहुत्वाद्द्वं
द्वः सचासौकर्मधारयः ॥ येनयस्यबहुव्रीहिः शेषस्तत्पुरुषास्समता ॥ १ ॥ अग्निश्चम
रुच्चअग्निमरुतौ ॥ भोक्ताचभोज्यश्चभोक्तृभोज्यौ ॥ वधश्चरथश्चदिरश्च
दितौ ॥ देवताद्वंद्वेपूर्वपदस्यदीर्घोवक्तव्यः ॥ अग्निश्चसोमश्चअग्नीषोमौ
॥ इन्द्रश्चबृहस्पतिश्चइन्द्राबृहस्पती ॥ अग्न्यादेः सोमादीनांसस्यषत्वंवक्तव्यं
॥ इतरेतरयोगेद्विवचनम् ॥ समाहारेचैकवचनंवक्तव्यः ॥ शशाश्चकुशाश्च
पलाशाश्चशशकुशपलाशम् ॥ शशकुशपलाशाः ॥ अन्यादीनांविभक्तिलो
पेपूर्वपदस्यसमासगतेवक्तव्यः ॥ अन्यश्चअन्यश्चअन्योन्यम् ॥ एकवचने
विग्रहे ॥ एकत्वेनविग्रहेद्वंद्वेनपुंसकलिंगेभवतः ॥ ८ ॥ इतिद्वंद्वः ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

72

पूर्वापरादयुपूर्वादौ ॥ ककैभ्योभयं ककभयम् ॥ नञः पुरुषः राजपुरुषः ॥ अक्षेषु
शौण्डः अक्षशौण्डः ॥ क्वचिदसाधं तस्मपरत्वम् ॥ अग्नेना आहितः आहिताग्निः ॥
पूर्वं भूतो भूतपूर्वः ॥ समासे क्वचिद्दैरूपघोषाद्यहेतुः ॥ शवाराणां वसांशनवसाम् ॥ अ
श्वासांचनं श्वासवशाम् ॥ कैचिन्ता ॥ त्रिनयनः ॥ पानस्य वा ॥ स्नापाः पानेभ्यः पा
णाम् ॥ नञि ॥ नञिपूर्वपदे सति लोपः स्यात् पुरुषसंज्ञक समासे भवति ॥ न
॥ समासे सति नञो अकारादेशो भवति ॥ न ब्राह्मणो अब्राह्मणः ॥ अनस्वरे ॥ समा
से सति नञो नादेशो भवति स्वरे परे ॥ नास्ति तारको । नेदन्ते । नकुलं । वादिवर्जं ॥ अ
श्वादन्यो ऽनश्वः ॥ धर्मेणाविरुद्धो ऽधर्मः ॥ अहरा न प्रभावो ऽनहराम् ॥ तद न
तद्धितोऽज्ञत स्या शेषु नञ प्रवर्तन्ते ॥ ❀ इति तत्पुरुषः ॥ ❀ चार्थे द्वन्द्वः ॥ समुच्चयान्वा
चयेतरेतरयोग समाहाराश्चार्थाः ॥ तत्र स्वतंत्रं च भजस्वेति ॥ प्रत्येकमेकक्रिया
भिः संबंधः समुच्चये समासो नास्ति ॥ वटो भिक्षामट गां चानयेति ॥ अन्यतरस्य क्रिया

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सारस्वत नाम० एकार्थे निष्ठत्वे सति एकविभक्तिपर्यायत्वं समानाधिकरणत्वं ३ पृ: ४

सुष्ठु प्रजा यस्य स सुप्रजाः। दुर्मेधाः। धर्मादन्। सुधर्मा। रूपवती भार्या यस्य स रूपवद्भा
र्यः। अन्यार्थे। स्त्रीप्रत्ययान्तस्यान्यार्थे वर्त्तमानस्य ह्रस्वो भवति। पुम्वद्वा। समा
से सति समानाधिकरणे पूर्वपदस्य उक्तपुंस्कस्य स्त्रीलिंगस्य पुम्वद्भावो वा भव
ति। पुम्वद्भावाद्दीर्घस्य निवृत्तिः। वाग्ग्रहणात्कल्याणीप्रियः ह्रस्वो न भवति॥ गोः
गोशब्दस्य अन्यार्थे वर्त्तमानस्य ह्रस्वो भवति। पंच गावो यस्य स पंचगुः॥ संख्या
॥पद्॥ सुव्याघ्रादिपूर्वस्य पादशब्दस्यान्त्यलोपो वक्तव्यः। सहस्रं पादा यस्य स सहस्रपात्॥ ॥पद्॥
शोभनौ पादौ यस्य स सुपात्। व्याघ्रस्य पादाविव पादौ यस्य स व्याघ्रपात्। द्विपात्।
73 शसादौ स्वरे परे पादस्य पद्वक्तव्यः॥ द्विपदः। द्विपदा। द्विपाद्भ्यामित्यादि। टाड्
काः। समासे ति ट ड् का इत्येते प्रत्यया भवंति॥ नो वा॥ नान्तस्य परस्य टः स्त्रोपि
भवति स्वरे यकारे च परे॥ वाग्ग्रहणात् क्वचित् न भवति। उपमा... ओपमन्त्र... अन्ते
मध्यंम धान्तः। कवी ना राजा कविराजः। स्त्रीरोऽनुबंध ईवर्थः ... कविराज्ञी। राज्ञी

सउ

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

संख्यापूर्वो द्विगुः। संख्यापूर्वः समाहारार्थः समासो द्विगुर्निगद्यते॥ समाहारे तद्धितार्थे द्विगुः। समाहारेऽर्थे द्विगुस्समासो भवति ततोऽकारान्तादीप्प्रत्ययो भवति। दशानां ग्रामाणां समाहारः दशग्रामी॥ पंचाग्नयः समाहृता इति पंचाग्नि॥ पंचानां गवां समाहारः पंचगु। नपुंसके कादुल्लले। त्रिफलेति सूत्रिः। पात्रादौ नामौ प्रतिषेधो वक्तव्यः॥ पंचपात्रम्॥ त्रिभुवनम्॥ इति द्विगुः॥ शेषः बहुव्रीहिरन्यार्थे॥ अन्यपदार्थप्रधानेसति योऽन्यपदः स बहुव्रीहिसंज्ञकस्समासो भवति॥ बहुधनं यस्य स बहुधनः। आरूढं वानरं यस्य स आरूढवानरः॥ तस्य प्रधानस्यैकदेशो विशेषणं तयापत्र विज्ञायते सतद्गुणसंविज्ञानो बहुव्रीहिः। लम्बोकर्णोयस्य स लम्बकर्णः॥ बहुव्रीहो विशेषणसप्तम्यन्तयोः पूर्वनिपातो वक्तव्यः॥ चक्रपाण्यादेर्न। चक्रं पाणौ यस्य स चक्रपाणिः॥ प्रज्ञामेधयोः स्रग्वक्तव्यः॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

समासेसलिसलादीनांमादिर्भवति॥सर्वनाम्नां:पुत्र:॥सहेश्व चतीतिस
सध्र्यङ्॥सम्यक् अंचतीतिसम्यङ्॥सहसंतिरसोसध्रिसमितितिरश्चः॥
तिरोऽंचतीतितिर्यङ्॥कोःकत्॥कुशब्दस्यकत्स्यादति॥कदन्नम्॥ई
षदर्थेकदादिः॥कुशब्दस्येषदर्थेगम्यमानेकाकवकेत्तुइस्येतेआदेशा
५३ भवंति॥कदुष्णं॥कोष्णम्॥कवोष्णम्॥कापथयास्॥पुरुषेवा॥कापुरु ५३
षः॥कुपुरुषः॥षष्ठतत्स्वंदंतदेवोसपदेषु उत्तरपदादेषु त्वंदलात्पद
तो॥ष्ठद्नासमसे षोडन्॥ ... ॥षट्चद्भ्यचषोडशाषो
डा॥बृहतांपतिः बृहस्पतिः॥बृहतेबैत्वंसमानाधिकरणे॥महेश्वरः॥
श्रामहिः॥दिवोद्यावादेशः॥मध्ये कवित॥केचित्समासेतद्धितेकृदंते
विभ नोऽत्राववति॥तेपूर्वत्तातोकाशकाः॥ भ्रयोति॥उन्मी

वा२ २ भटचदशाच

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वाङ्च मनश्च वाङ्मनसे ॥ दक्षिणस्यां दिशि यस्याः दक्षिणापथः ॥ अहश्च रा
त्रिश्च अहोरात्रः ॥ द्वौ वा त्रयो वा द्वित्राः ॥ पंच वा षट् वा पंचषाः ॥ बहवो नाना जाने
यस्मिन् नगर्यां सा बहुनाना जानगरी ॥ इत्याद्युदाहृतयो पेक्षते ॥ स्त्रावतेः त्रिपाभि
स्माप्तु ॥ बहवः केर्लो न पुष्यसवतु कर्तृकोपगः ॥ ॥ इति बहुव्रीहिः ॥ ॥
कर्मधारयस्तत्पुरुषार्थे ॥ पदद्वये तुल्यार्थे एकार्थनिष्ठत्वे समानिक र्मधार
यसंज्ञकः समासो भवति ॥ कर्मधारये पूर्वपदस्य पुंवत् ॥ नीलं च तदुत्प
लं च नीलोत्पलं ॥ नरसिंहो लताचवनेलता ॥ पुमांश्चासौ कोकिलश्च पुं
स्कोकिलः ॥ पुंसः खपे संयोगांतलोपो वक्तव्यः ॥ जातिस्वरूपे तासमासः ॥
प्राग्देशपरगीस्थ नान्मश्च क्लेदे तत्समहृसमासो भवति स च समासस्तत्पुरुषः ॥
प्रकर्षेण वादः प्रवादः ॥ कुंभं करोतीति कुंभकारः ॥ सहादिः सादिः ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ते स समासस्तत्पुरुषो भवति ॥ अविग्रहो नित्यसमासः ॥ अस्वस्वपद
विग्रहोपि ॥ दाक्षिणाशाभिः ॥ सप्तग्रामः ॥ ० ॥ इति समासप्रक्रिया ॥ ० ॥ अ
थ तद्धितो निरूप्यते ॥ अपत्येऽण् वा ॥ नाम्नोऽपत्येऽर्थेऽण् प्रत्ययो भवति ॥
५४ उपगोरपत्यमिति वाक्ये ॥ उपगो अण् इति स्थिते ॥ समासप्रत्ययोर्वि ५४
तिषष्ठीलुक् ॥ आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः ॥ स्वराणां मध्ये य आदि
स्वरस्तस्य वृद्धिर्भवति ञिति णिति च तद्धिते परे ॥ उकारस्यौकारो वृ
५१ द्धिः ॥ वौ ऽव् ॥ उकारस्यौकारस्य च अव् भवति यकारे स्वरे च परे ॥
औपगवः ॥ ना शिवः ॥ शिवादिभ्यश्चेति वक्तव्यः ॥ शैवः ॥ दैवः ॥ अनु
शा ॥ मातृशब्दस्य ऋकारस्य उर् भवति सङ्ख्यापूर्वे ॥ षण्णां मातॄणाम
पत्यं षाण्मातुरः ॥ द्वैमातुरः ॥ अत इञ् ॥ अकारान्तान्नाम्नोऽपत्ये इञ् वि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

लोमा ॥ हृदिस्पृक् ॥ कण्ठेकालः ॥ वाचोयुक्तिः ॥ दिशोदण्डः ॥ पश्यतोहरः
॥ इत्यादि ॥ समानाधिकरणे शाकपार्थिवादीनां [illegible] पदलोपो वक्तव्यः ॥ [illegible]
[illegible] शाकप्रियः ॥ शाकप्रियः पार्थिवः शाकपार्थिवः ॥ दे
वपूजको ब्राह्मणो [illegible] देवब्राह्मणः ॥ आदेश्च द्वंद्वे ॥ द्वंद्वे समासे कादि
पदस्य लोपो भवति ॥ माता च पिता च पितरौ ॥ श्वश्रूश्च श्वशुरश्च श्वशुरौ
॥ दुहिता च पुत्रश्च पुत्रौ ॥ अन्तं द्वंद्वे पूर्वपदस्यान्तं वा ॥ मातापितरौ ॥ द्वंद्वे त
थैकत्वं वा वक्तव्यं ॥ वर्णाश्च आश्रमाश्च इतरे च वर्णाश्रमेतरे ॥ वर्णाश्रमेत
राः ॥ वैपथिके गतो बहुव्रीहौ मध्यमपदलोपश्च ॥ कुम्भदस्य [illegible] गन्धोपस्य
त कुम्भदगन्धिः ॥ गन्धस्यादेशिः ॥ हंसस्य गमनमिव गमनं यस्याः सा हंसगमना
दिक्संख्ये संज्ञायाम् ॥ दिक्संख्याभ्यां संज्ञायां विषये पश्चात् समस्य
[illegible] तिपूर्वपद
स्य [illegible] वा ५

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

76

इन्द्रो देवताऽस्येति ऐन्द्रं हविः॥ सोमो देवताऽस्येति सौम्यं॥ देवताद्यमिदं दैवतं
वस्त्रं॥ कश्चिद्दूपेः॥ पूर्वोत्तरपदादेः स्वनयोः कश्चिद्वृद्धिर्भवति॥ आग्निमारुतं
कर्म॥ सौमपौष्णं॥ सौमारुद्रं॥ अनभावेद्वयावनत्वयः॥ स्मितो यां॥ उत्कारः प्रसपाविध
पांतरे शिनि वा भवंति॥ अजो गोपि स्यासोऽजगः शिवः तस्य दं भतः आजगवं
नगवं वा॥ कुमदं गावइव कं जोपस्य स कुमदगं भिः तस्यापत्यं स्त्री कौमदगंधा ॥
५५ श्वशुरनस्यापं श्वासुर्यो ज्यामः॥ विद्दोविदं वै हवं॥ गोविदं गव्यम्॥ कुरस्येदं
कुरुस्यं॥ तवइदं त्वदीयं॥ मपइदं मदीयं॥ चेतनस्य लोपः॥ यतन्शब्दस्य च
कारस्य ओपो भवति राव प्रत्यये शीपप्रत्यये च परे॥ तुर्य्यः॥ तनीयः॥ अत्मस
दुधे॥ अन्यशब्दस्य दुगागमो भवति॥ अत्यस्य इदं अन्यदीयं॥ अर्द्धजयती
यं॥ कावका किंपापुत्रे॥ कारकादयो तेप्रत्ययो भवंति किंपापत्रे कर्त्तविक

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

इभ्यो परस्मात् नभकुत्नजनांदीर्घः पविभंपकानादिसूत्र आदि ... स्यात्

इयंस्य द ... ईत्यस्य वृद्धिस्तस्मादागतः २

शार्ङ्गादयत्येऽर्थे इञ्प्रत्ययो भवति ॥ यस्येति लोपः ॥ दैवदत्तिः ॥ औपगविः ॥ बाह्वादे

श्चेति वक्तव्यः ॥ बाहविः ॥ औपबाहविः ॥ [illegible] ॥ राधाय नैरो [illegible] पा

गोर्गी [illegible] स्त्रीपितृ [illegible] स्रादेः ॥ गर्गादेर्नडादेयञ्चादेः स्त्रीलिंगाभिलव्वता

देश्च राप आपरा [illegible] रत्तिपड् [illegible] प्रत्यया भवंति अपत्येऽर्थे ॥ गार्ग्य

वात्स्यः ॥ नागपराः ॥ [illegible] ॥ आ[illegible]पराः ॥ आत्रेयः ॥ कापेयः ॥ गा

[illegible]पः ॥ माहेयः ॥ पैतृष्वस्रीयः ॥ मातृष्वस्रीयः ॥ [illegible] स्त्रीलिंगाद्दापि

भैमः ॥ [illegible] बहुत्वे [illegible] ॥ अपत्येऽर्थे उत्पन्नस्य प्रत्ययस्य [illegible] न

षिविषये प्रत्ययस्य लुग्भवति बहुत्वे सति ॥ गर्गाः ॥ वत्साः ॥ अत्रयः ॥ विदे

हाः ॥ देवतेदमर्थे ॥ देवतार्थे इदमर्थे [illegible] प्रत्यया भवंति

पितृस्वसा पितृष्वसा [illegible] ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Shareda Peetham

मातृपितृ [illegible] स्वसा मातृष्वसा [illegible] प ८

ममेदं तवत्वं ममत्वं चंद्रेश्वरात्तस्य

मामकम्॥ तावकीनः॥ मामकीनः॥ युष्मदोऽस्मदोर्वा अणि यौष्माकः॥ यौ

ष्माकीनः॥ अस्मदोऽस्माकं वा। अणि आस्माकः॥ आस्माकीनः॥ तेन तुल्यं॥

तेन तुल्यमिवार्थे वत्प्रत्ययो भवति॥ चंद्रवन्मुखं॥ वटवद्दृढम्॥ पटवत्कोम

लम्॥ भावे त्वतलौ॥ शब्दस्य प्रवृत्तिनिमित्तं भावस्तस्मिन्भावे त्वतलौ प्रत्ययौ भ

वतः प्रत्ययौ भवतः॥ ब्राह्मणस्य भावः ब्राह्मणता॥ तलन्तः स्त्रीलिंगः स्यात्॥ त्व

न्तं परं नपुंसकं॥ ब्राह्मणस्य भावो ब्राह्मणत्वं ब्राह्मण्यं॥ समानस्य भावः [illegible]॥

[illegible]ता॥ जनता॥ सौमनस्यं॥ सौभाग्यं॥ वैदुष्यं॥ कर्मण्यपि ष्यञ्॥ ब्रा

ह्मणस्य कर्म ब्राह्मण्यम्॥ राज्ञः इदं कर्म राज्यम्॥ [illegible]॥ लोके [illegible]॥

॥ लोहितादिभ्य इमन्॥ लोहितादेर्भावेऽर्थे इमन्प्रत्ययो भवति॥ [illegible]॥

लोहितिमा॥ [illegible]मा॥ महिमा॥ [illegible]मा॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible] कान्तस्य

[illegible] किं [illegible]मा॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

५६

५२

प्रवृत्तं ज्ञानी नोव्यासः

मीति चाभिधेयेनाख्ये॥ कुंकुमेन च रंजितः कौसुंभ॥ मधुना यांत्र आगतः तत्रयायो
माषा मुद्गः॥ ज्ञात प्रेमसैव्याप्यः॥ भवं वृहती तिर्यक्॥ यौवनेयः॥ केने पेकाः॥ क
ई तइ पइ कइ स्पेतेषु स्वपाभवंति भवाघ धेषु॥ शिल्वे वैषांवै कालिकं॥ कवराटैम
वैः कावराटकः कवराटको वा॥ ज्ञात प्रादागतः तत्रयानो वा ज्ञात्रीयाः॥ सभ्रौविम
वः॥ सभ्रौवीनः॥ तिर्यग्विमवः॥ तिरश्चीनः॥ पक्षोपस्थ॥ कस्यापांभवः कौलीन
॥ पौषीनः॥ चौत्रः॥ दौङ्गीपः॥ प्राक्रिपं॥ इन्दिपाम्॥ स्याद्विकः॥ शाद्विकः॥ वै
दैभवो वैदकी॥ स्ततनो॥ किमादेन याद्वैर्भवाघर्थे स्वते नौपुत्स्यपौभवतः॥ कुत्र
भवः कुत्स्यः॥ कुतस्त्यः॥ तत्रत्यः॥ अप्यतनः॥ ह्यस्तनः॥ स्वपातनः॥ स्वापेय्यपि
उत्ताः प्रत्यपाः स्वापेयं पिभवंति॥ देवदत्त एव देवदत्तकः॥ वत्स्यायस्ववरा
स्वालठवरायि॥ चोचरएव चौवरः॥ अगी तायोर्व्वदत्तदोत्तय काहिः॥ तावकम्॥

अगीतायोः पलायो र्व्व ... मवर्ता भवक पुत्रा का कास्मा कइत्यं तेम

अद्दैर्दीर्घ्नोनि ५

तेअइदं १.

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कुत्सितं [illegible] त्रः४

ईयान्॥ ठ दादेभिरः॥ ठे दिरः॥ उद्दन्तिरः॥ श्री लक्ष्मदंतादुरः॥ दंतुरः॥ ऊषुषुदेर्लः॥ श्र
कालः॥ दयालुः॥ कृपालुः॥ अस्मायामेधास्रजो विनिः॥ तपस्वी॥
मायावी॥ मेधावी॥ स्रग्वी॥ वाचो ग्मिनिः॥ वाग्मी॥ आलाटचौ कुत्सितभाषिणि
॥ वाचालः॥ वाचाटः॥ ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः॥ ईषदसमाप्तः पटुः प
टुकल्पः सर्वज्ञकल्पः॥ पटुदेश्यः पटुदेशीयः॥ कविदेश्यः कविदेशीयः॥ प्रशंसा
यां रूपप्॥ प्रशस्तो वैयाकरणो वैयाकरणरूपः॥ पाशप्॥ कुत्सायां॥ कुत्सितो वैया
करणो वैयाकरणपाशः॥ भूतपूर्वे चरट्॥ पूर्वं दृष्टो दृष्टचरः॥ प्राचुर्ये विकारप्र
धानत्वादिषु मयट्॥ अन्नमयो यज्ञः॥ मृण्मयो घटः॥ स्त्रीमयो जाल्मः॥ अमृतमय
[illegible]॥ तदधीते वेद वेत्य वा णः॥ व्याकरणमधीते वेद वा वैयाकरणाः॥
शोभनो अश्वः स्वश्वः स्वं वेदे नि सौ वश्वः॥ न य्वाभ्यां पुर्वं न॥ न य्वोभ्यां न य्वो
व्यो नपो [illegible] स्वस्य वस्यापत्यं [illegible] भवति॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

५९

ऽेको भवति इमन्तादेष्व स्वपूपत्वे ॥ पृथिमा ॥ बहोर्लोपो भू च बहोः ॥ बहोरुत्तरेषामि
मनादीनामिकारस्य लोपो भवति बहोः स्थाने भू आदेशः भूमा ॥ मत्वर्थे मतुः ॥ ता
म्रो मतुप् स्यप्रो भव[illegible] अस्यास्मिन्नस्तीति मत्वर्थे ॥ उकारो ऽम विद्यानोर्वा ॥ गोम
न् ॥ श्रीमान् ॥ जोऽमन्त्री ॥ श्रीमती ॥ अङ्कौच तत्व थे ॥ लाम्नअङ्कौ पुंस्त्वेपो भव
तः मत्वर्थे ॥ वैजयंतः ॥ पस्यलोपः ॥ माणिक्यः ॥ मो लोप वा बलिनौ ॥ मकारान्ता न्न
न्तावोपधाद नशीला दवतोपि वाछलिनौ प्रत्ययौ भवतः अस्त्यर्थे ॥ मालिवि
घंते पस्य सप्तम्यां ॥ धनमस्यास्तीति धनी ॥ दण्डवती मतिः ॥ किम्स्वान् ॥ तपी
तरिताभ्यस्व ॥ तडित्वान् ॥ मरुत्वान् ॥ एता किंपरत्नयः पचिमारो वतुः ॥ किमः किम्यं
स्व ॥ किमः किमादेशो भवति वकारस्य पकारः ॥ किंप्रमाणमस्येति किमान् ॥ एतदो
वा ॥ एतदो ठेवात्वं भवति वतौ परे ॥ यावान् ॥ तावान् ॥ आईश्वैतदोवा ॥ एतावान् ॥
यत्तदादेवेदपां गा
नैरावतोपः २

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

९५

79

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

...पंचमः ॥ अष्टमः ॥ नवमः ॥ दशमः ॥ एकादशादेर्डट् ॥ एकादशः ॥ द्वादशः ॥ त्रयो
दशः ॥ त्रयोदशः ॥ विंशत्यादेस्तमट् ॥ विंशतितमः ॥ विंशतेस्तिलोपो भवति ॥ विंशः ॥ त्रिं
शत्तमः ॥ त्रिंशः ॥ शतादेर्नित्यं ॥ शततमः ॥ संख्यायाः प्रकारे धा ॥ द्विधा ॥ त्रि
धा ॥ चतुर्धा ॥ एधाच्च ॥ द्वेधा ॥ त्रेधा ॥ द्वैधं ॥ त्रैधं ॥ क्रियाया आवृत्तौ कृत्वस्
॥ पंचकृत्वः ॥ षट्कृत्वः ॥ द्वित्रिभ्यां सुच् ॥ द्विः ॥ त्रिः ॥ बह्वादेः शस् ॥ शक्ति
बह्वल्पार्थस्य पुंवत् ॥ बह्वीभ्यो देहि बहुशः ॥ अल्पाभ्यो देहि अल्पशः ॥ तयप्
दोः संख्यायाः ॥ द्वितयं ॥ त्रितयं ॥ द्वयं ॥ त्रयं ॥ द्वयी ॥ त्रयी ॥ उभयी ॥ द्वीपेभ्यः ...
... ॥ पौष्णं ॥ शेषाः निपात्याः कल्पादयः ॥ का संख्या येषां ते
कति ॥ यत्तदो डति ॥ यति ॥ तति ॥ ❀ ॥ इति श्रीमदनुभूतिस्वरूपाचार्य
विरचितायां तद्धितप्रक्रिया समाप्ता ॥ ❀ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पदान्ता इत्यनुवर्त्तते ... सी स्यादौ न ८

५

दूरादाह्वाने टेः प्लुतः॥ दूरात्संबोधने पदस्यान्त्यस्य टेः प्लुतः स्यात्॥ प्लुतः॥ प्लुतः संधिं न
प्राप्नोति॥ एहि देवदत्त ३ अत्राधीष्व॥ हे इन्द्र ३ एहि॥ हे राम ३ पुत्रो वा॥ हे अम्ब ३॥ हा अम्ब॥
हा पुत्र॥ हे ३ ईशाः॥ हईशाः॥ हपीशाः॥ सप्तम्यर्थे ई ३ ... न संधिं याति॥ वा तप्रमी
आसेः॥ पपीइदम्॥ पपी एषः॥ इतो वा उत्रः॥ ऊ इति॥ वितु॥ अप्लुतवदिति॥ दे
वदत्तेति॥ गुरोरनृतोऽनन्त्यस्याप्येकैकस्य प्राचाम्॥ प्लुतः दे ३ वदत्त॥ देव ३ दत्त॥ दे
वदत्त ३॥ देवदत्त॥ गुरोः किम्॥ वक्तारादेकानवस्थामावृत्तु॥ अनृतः किं॥ ...
स्म॥ [illegible]॥ इति स्वरसंधिः॥ [illegible]॥ चपाबेजवाः॥ पदान्ते वर्तमानो स्वप ...
वेत्यत्र बेपरे॥ षड्त्र॥ वाग्पत्य॥ अबेजमावा॥ पदान्ते वर्तमानाः स्वपा ...
परे मावा भवन्ति॥ षराम्म॥ षड्लता॥ वाङ्मधुरा॥ वाग्मधुरा॥ प्रत्यये परे नमे
जवस्यापि नित्यम्॥ तन्मयम्॥ चिन्मयम्॥ चपाद्धशः॥ चपाद्धत्तवस्यपराका
नस्य घोवामवति अ बेपरे॥ वाग्घूरः॥ वाक्शूरः॥ अबे किम्॥ वाक् श्योतति॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

चपादिति किं प्रशान्तरोऽन्तरशः॥ वाक् साघुः २

८०

इत्ववर्त्तमानः संधिं नप्राप्नोति॥ अ॰ ओ॰ अत्र॥ पटूअत्र॥ मालिअत्र नपा॥ व
चेत इमौ॥ औ निपातः॥ स्वरे निपातः संधिं नप्राप्नोति॥ अ अपेहि॥ इ इंद्र
पश्य॥ उ उत्तिष्ठ॥ आ एवं मन्यसे॥ ओदंतो निपातस्व॥ अहो ईशाः॥ अहो
आगताः॥ ओदंतो धौ वेतौ॥ विष्णो इति॥ विष्णविति॥ विष्ण इति॥ ध्रु॥
नसवर्णे स्वरे समासे पदान्ते पाह्रस्वः॥ चक्रि अत्र॥ चक्र्यत्र॥ मधु स्तत
मधेतन॥ कर्त्तृ इदम्॥ कर्त्तिदम्॥ पदान्ते किम्॥ जौ धौ॥ ह्रस्व पा
नसासवर्णे न संधिः॥ समासे तु ह्रस्वपे न॥ पदान्ता नांत मां तौ ॥ तत्र ति
पाह्रस्वः॥ ब्रह्म ऋषिः॥ ब्रह्मर्षिः॥ दधि॰ ऋषिः॥ दध्यृषिः॥ मधु अकार
मधुकारः॥ होतृ अकारः॥ होतृकारः॥ होतृकारः॥ होतृकारः॥ प
दान्तानामिति किम्॥ औचित्॥ अपा॥ ओ वा स्वरे॥ किमु उक्तम्॥ किम्वुक्तम्॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वर्णस्यासिद्धत्वाद्वा तु स्यात्॥

पदस्येति किं हन्ति जङ्घ्नि किं तच्छीकतो घ्नतः इति किं भवान्करोति ३

स्य लकारे परे यकारो भवति॥ तल्लुनाति॥ भवांल्लिखति॥ अनुनासिकान्ननुना
सिकश्चेन द्विधा प्रवृत्तः तत्र नकारस्य अनुनासिको लकारः॥ उदः स्थास्तंभोः
सलोपः॥ उत्थानम्॥ उत्तम्भनम्॥ नः सक्छते॥ नान्तस्य पदस्यावपरे छते
सगागमो भवति॥ राजंश्छित्रम्॥ भवांश्छनोति॥ अवपर इति किं॥ सन्त्सरुः
न प्रशान्तः॥ प्रशान्ततनोति॥ शि तुग्वा॥ नान्तस्य पदस्यावपरे शे वा तगागमो
भवति॥ भवान्त्शूरः॥ भवाञ्छूरः॥ भवाञ्शूरः॥ अवपर इति किं॥ भवाञ्श्चो
तति॥ ङ्णनो ह्रस्वाद्द्विः स्वरे॥ ङकारणकारनकारा ह्रस्वादुत्तरा द्विर्भवन्ति स्वरे परे
पदान्ते च॥ प्रत्यङ्ङुदयम्॥ सुगण्णिह॥ राजन्निह॥ छः॥ ह्रस्वादुत्तरश्छकारो द्विर्भ
वति॥ वृक्षच्छाया॥ तवच्छत्रम्॥ दीर्घात्॥ ह्रीच्छति॥ पदान्ताद्वा दीर्घा
दुत्तरश्छकारो द्विर्भवति॥ लक्ष्मीच्छाया॥ लक्ष्मीछाया॥ आङ्माङ्भ्यां नित्यम्॥ आच्छादयति॥ माच्छिदत्
ह्रस्वादि तिं पाङ् ... इति निपातस्य ...

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarayu Trust and Sharada Peetham

यथादित:क्ष भगवन् हृ्ये हकारस्य किं त सत्वं शादिति किं पाञ्चाप चीति किं त टीका

होमनमाः॥ चपौ डुत्तमस्य हकारस्य क्रमावाभवंति॥ यद्वर्गैतनपसवर्गैर्च
तुर्थो भवति॥ लब्धुविः॥ लद्‌हविः॥ वाग्भविः॥ वाग्हविः॥ अग्भानः॥ अग्हानः॥
सुःस्तुभिःस्तुः॥ सकारतवर्गयोःशकारचवर्गाभ्यां योगे शकारचवर्गौ भवतः
सञ्चयाससाप्त्यपथ्यात्क भमितिवा च मन्॥ कृष्णवत्ति॥ कृष्णहनः॥ तच्चि त्रमात्
त च्चादुपति॥ जगत्॥ शकारोऽदुत्तमस्य तवर्गस्य चत्वं नभवति॥ विश्नः॥ प्र
श्नः॥ षुभिःष्टुः॥ सकारतवर्गयोःषकारटवर्गाभ्यां योगे षकारटवर्गौ भ
वतः॥ कृष्णष्ठः॥ कष्टीकते॥ तट्टीकते॥ नत्वा॥ षकारोऽपदान्ते तवर्गस्य ष्टुत्वं न
भवति॥ भवान्षष्ठः॥ सन्षष्ठः॥ येन्नपात्॥ पदान्ते वर्जमानात्‌टवर्गात्पर
स्य सौ घुत्वं नभवति॥ षराननः॥ षडनरः॥ मत्सोदलितालवति नगा
र्न॥ षसंपल्लि॥ वसगर्पः॥ सपान॥ विदस्ता॥ पत्मा॥ तोर्लिः॥ तवर्ग

गस्मात वाकेन्द शापूर्ण मध्यां हान: प चौतितिकिं सर्पिष्ठ नं ३

Dr. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

क्लांभ्रसोंते पदान्तेम्भ्रःजसः स्यात् ॥कुक्दुकोपे: सिद्धलाजस्वच्छ ३

॥७॥ द्वितीयोवा॥ अप्सरः॥ अप्सरः॥ नपदान्ते॥ नत्साधुः॥ कुक्दुक्वर्जितस्यविभ
क्तौन॥ भवतु॥ रुनान्तस्यवाधुट्॥ षट्सन्तः॥ षट्त्सन्तः॥ सन्सः॥ सन्त्सः॥
शसेङ्णोः कुक्दुकौवा॥ प्राङ् खष्ठः॥ प्राङ् क्षष्ठः॥ प्राङ् षष्ठः॥ सुगण्ठ साधुः॥
सुगण्ट्साधुः॥ सुगण्साधुः॥ पकारेपरेन्ह न्नका ... रस्यन्सवा॥ सोर्विसर्गः॥
सफान्तरेफपोर्विसर्गो भवत्यधातोन्तसेपदान्तेच ... धातोस्तुपदान्तेन तुनसे॥ कु
ष्वोः क् पौवा॥ कचर्गेपवर्गेचपरेविसर्गः कं पौवा भवतः॥ नृः पाहि॥ नृः पा
हि॥ नृस्पाहि॥ ॥इतिहससंधिः॥ ॥विसर्जनीयस्य सः॥ खसेपरे॥ कस्त्रोति॥
शासपरेखजपेविसर्जनीयस्यविसर्गेरवैकः॥ सर्तुः॥ द्वेजाधनः॥ जोभराः॥ शसे
वा॥ कश्शूरः॥ कः शूरः॥ कष्षराठः॥ कः षराठः॥ कस्साधुः॥ कः साधुः॥ खपपरेशा
सेविसर्गलोपोवा॥ हरिस्फुरति॥ हरिस्स्फुरति॥ हरिः स्फुरति॥ यत्रोविसर्गसत्वे
चवेन्दूप्यं॥ कुप्वोः कः पौवा॥ कः करोति॥ कः करोति॥ कः पचति कः पचति॥ वाचस्प ॥७॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

द्विः त्रिः चतुरितिकवर्णे ... विसर्गस्यपो॥
अव्ययानांभत्त्वाजे इतिलोपः ... अन्यत्र सत्वा:

॥७॥ ... प्रत्यय ... अतोवा ... लोपः

82

महान्तावं भवान् हसति ... फलं नास्ति हसे इति किं पदान्ते किं गम्यते ३ कुण्ठितशोके भ्यादिः

पुंसोऽवपये खपे संयोगान्तस्य लोपो न ॥ पुंस्कोकिलः ॥ पुंस्पुत्रः ॥ अवपये किं ॥ पुं
क्षीरं ॥ खपे किं ॥ पुन्दाशः ॥ स्यातां वा ॥ पुंस्यानं ॥ पुंस्यां नम्रः ॥ मोऽनुस्वारः ॥ म
कारस्यानुस्वारो भवति ॥ हसे पये पदान्ते च ॥ तं हसति ॥ पदं वृथा ॥ नश्चापदान्ते
झसे ॥ नस्य मस्य चापदान्ते वर्त्तमानस्यानुस्वारो भवति झसे हकारे च परे ॥ यशांसि ॥ पुंभ्यां ॥ स्वनङ्ग्धि ॥ यमा पये स्वे अनुस्वारस्य यमा भवंति पये परे ॥ अस्य पय
स्य सवर्णः ॥ ... ॥ अङ्कितः ॥ अञ्चितः ॥ कुण्ठितः ॥ गुम्फितः ॥ वापदान्ते ॥ पदान्ते व
र्त्तमानस्यानुस्वारस्य यमा वा भवन्ति पये परे ॥ त्वङ्करोषि ॥ त्वं करोषि ॥ तन्ननो
ति ॥ तं ननोति ॥ सय्यन्ता ॥ सं यन्ता ॥ सव्वत्सरः ॥ संवत्सरः ॥ यल्लोकं ॥ यं लोकं ॥
क्विबन्ते राजतौ परे समो मस्य म एव स्यात् ॥ सम्राट् ॥ यवल परे हकारे मस्य
यवला वा ॥ किंह्यः ॥ किय्ह्यः ॥ किंह्वलयति ॥ किव्ह्वलयति ॥ किंह्लादयति ॥
किल्ह्लादयति ॥ किंह्मलयति ॥ किम्ह्मलयति ॥ किंह्नुते ॥ किन्ह्नुते ॥ आसे च मस्य

अपदान्ते इति किं ... न्यास

CC-0: Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

समः किंइदंना ३८३ मूलं

इह ... पादस्य ... इति ... अविशेषो ... [illegible]

॥८॥

रात्परस्य विसर्गस्य उकारो भवति हवे परे॥ देवो याति॥ मनोरथः॥ आदवे
लोपश्च॥ अवर्णात्परस्य विसर्गस्य लोपश्च भवति वे परे॥ देवा अत्र॥ बाला या
ताः॥ स्वरे परत्वं वा॥ देवा इह॥ देवा पिह॥ भोसः॥ भोस भगो स अघो स इत्येत
स्य विसर्गस्य लोपश्च भवति वे परे॥ भो हरे॥ भो गो नमस्ते॥ अघो याहि॥ स्व
रे परत्वं वा॥ भोरहि॥ भो येहि॥ भगो इह॥ भगो पिह॥ अघो अपंगच्छ॥ अ
घोपपगच्छ॥ नामिनोरः॥ नामिनः परस्य विसर्गस्य रेफो भवति वे परे॥
अग्निरत्र॥ पटुर्वक्ता॥ रेफप्रकृतिकस्य स्वे परे वा रेफः॥ गीर्पतिः॥ गीः
पतिः॥ अहर्पतिः॥ अहःपतिः॥ रः॥ रेफप्रकृतिकस्य विसर्गस्य रेफो भव
त्य वे परे॥ प्रातरत्र॥ भ्रातर्गतः॥ रि लोपो दीर्घश्च॥ रेफस्य रेफे परे लोपो भव
ति पूर्वस्य च दीर्घः॥ पुना रमते॥ हरी राजते॥ भानू रम्यः॥ सैषाद्धसे॥ स शब्दा
देषशब्दाच्च परस्य विसर्गस्य लोपो भवति हसे परे॥ स चरति॥ एष हसति॥ [illegible]
[illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

स्वादयो निपातनात् सिध्यन्ति॥ वाचस्पतिः॥ बृहस्पतिः॥ तस्करः॥ कौस्तुभः॥ कान
कान्॥ कांस्कान्॥ भास्करः॥ पयस्पाशम्॥ पयस्कल्पम्॥ पयस्काम्यति॥
सर्पिष्पाशम्॥ सर्पिष्कल्पम्॥ सर्पिष्काम्यति॥ नमस्करोति॥ पुरस्कर्ता॥ नि
ष्प्रुहम्॥ आशिष्पुतम्॥ तिरस्कर्ता॥ द्विष्करोति॥ द्विः करोति॥ त्रिष्करोति॥
त्रिः करोति॥ चतुष्कपालम्॥ चतुः कपालम्॥ सर्पिष्करोति॥ सर्पिः क
रोति॥ धनुष्करोति॥ धनुः करोति॥ सर्पिष्कुण्डिका॥ अयस्कारः॥ अयःकारः॥
अयस्कामः॥ अयस्कंसः॥ अयस्कुम्भः॥ अयस्पात्रम्॥ अयःसहिताः कुशाः॥ अ
यस्कुशाः॥ अयस्कर्णी॥ अधस्पदम्॥ शिरस्पदम्॥ आकृतिगणोऽयम्॥ रोरा
त्रिषु॥ अन्तो विसर्गस्य पदान्ते रो भवति॥ न तु रात्र्यादिषु॥ अहर्गणः॥ अहन
हः॥ रात्र्यादिषु तु॥ अहोरात्रः॥ अहोरूपम्॥ अहोरथन्तरम्॥ अतोऽत्युः॥ अका
रात्परस्य विसर्गस्य उकारो भवति॥ अतिपवनतः॥ कोऽर्थः॥ देवः॥ अका

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अतः किं हवि यत्र तपरकिं देवास्त २
अतीति तपरः किं देवा आगताः विसर्गस्य ति किं रामन तु २

अतः किं इतिभ्यः तपरः किं तत् ताभ्यः स्मीति किं देया नां । अतः किं ते देः तपरः कालात्
आदेशस्य पानस्य पाद्धि हतं तस्य स्यादे ...

अकारात्परस्याङ्ग इन भवति ॥ देवेन ॥ सुपि दि ॥ अकारान्तस्यात्वं भवति भकारादौ स्यादौ ॥
देवाभ्याम् ॥ ङेयः ॥ अकारात्परस्य ङेसो भकारस्याकारादेशो भवति ॥ अस्य ॥
ऽऽऽ ॥ देवै ॥ ङेयकं ॥ अकारात्परस्य ङे इत्येतस्याग आगमो भवति ॥ देवाय ॥ देवाभ्यां
ङस्सि बहुत्वे ॥ अकारान्तस्यैत्वं भवति भकारादौ स्यादौ बहुत्वे सति ॥ देवेभ्यः ॥ ङसि
नात् ॥ अकारान्तात्परस्य ङसिरत् भवति ॥ देवात् ॥ देवाभ्याम् ॥ देवेभ्यः ॥ ङस्स्यः ॥ अकारा
त्परस्य ङसः स्यो भवति ॥ देवस्य ॥ ओसि ॥ अकारान्तस्यैत्वं भवति ओसि परे ॥ देवयोः ॥ नु
डामः ॥ समानान्तस्य यस्यामो नुडागमो भवति ॥ पुंसि तु ह्रस्वादेव ॥ नामि ॥ नामि परे पूर्व
स्य स्वरस्य दीर्घः ॥ देवानाम् ॥ देवयोः ॥ ङिलात्परः सः कृतस्य ॥ कथञ्जादिलाच्च प्रत्या
हारादुत्तरस्य केनापि सूत्रेणाकृतस्य सकारस्य षकारादेशो भवति ॥ अनोस्यित
स्पन ॥ देवेषु ॥ सिर्द्धिः ॥ आमन्त्रणेऽर्थे विहितः सिः सिद्धिसंज्ञो भवति ॥ समानाद्वेर्लो
पो धातोः ॥ ह्रस्वात्समानादेदोत्परस्य सिद्धेर्लोपो भवत्यधातोः ॥ आमिगुणा
नामी ...
पोयमासि ... त्परस्य तत्प्रति सन्निपातः सन्निपातलक्षणो विधिरनिमित्तं तद्वि
घातस्य ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सशं वाद्विसर्गस्य लोपः स्यचेल्लोपे स्यचेपादपूरणं चेत् ॥ सैष दाशरथी रामः सैष
राजा युधिष्ठिरः ॥ सैष कर्णो महात्यागी सैष भीमो महाबलः ॥ ॥ इति विसर्गसंधिः ॥

॥ अथ विभक्तिर्नाम ॥ विभक्तिर्नहि तं धातुवर्जितमर्थवत् तद्रूपं नाम उच्यते ॥ तस्मा
त् ॥ सि० औ० जस्० अम्० औ० शस्० टा० भ्याम् भिस्० ङे० भ्यां० भ्यस्० ङसि०
भ्यां० भ्यस्० ङस्० ओस्० आम्० ङि० ओस्० सुप्० ॥ तान्येतान्यादयः सप्तवि
भक्तयो भवन्ति ॥ एकत्वद्वित्वबहुत्वेषु ॥ एकवचनद्विवचनबहुवचनानि ॥ स्वौ वि
सर्गः ॥ देवः ॥ देवौ ॥ जकारो जसीति विशेषणार्थः ॥ देवाः ॥ अमशसोरस्य ॥ समा
नादुत्तरयोरमशसोरकारस्य लोपो भवति धातोः ॥ देवम् ॥ देवौ ॥ शकारः शसीति
विशेषणार्थः ॥ सोनः पुंसः ॥ पुल्लिङ्गात् समानात्परस्य शसः सकारस्य नकारा
देशो भवति न त्वामशसोरित्याद्यो ॥ एसि ॥ शसि परे पूर्वस्य स्वरस्य दीर्घः परादे
शश्च भवति न लपरौ मात्र ॥ देवान् ॥ टकारष्टेरेति विशेषणार्थः ॥ टेन ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

...ति पूर्वो व्यवस्था ... दक्षिणा ... सपत्नी ... दक्षिणस्या ... व्यवस्था
अस्त्येवेति भावः अ संज्ञापां कि ...

10 नः स्युडागमो भवति ॥ सर्वेषाम् ॥ ङिस्मिन् ॥ सर्वादेरकारान्तात्परो ङिः स्मिन्
भवति ॥ सर्वस्मिन् ॥ शेषं देववत् ॥ एवं विश्वादयः ॥ उतरडतमौ प्रत्ययौ तदन्त
दन्ता ग्राह्याः ॥ पूर्वादीनां नवानां जस्ङसिङीनां भीस्मात्स्मिनो वा ॥ पूर्वे ॥ पू
र्वाः ॥ पूर्वस्मात् ॥ पूर्वात् ॥ पूर्वस्मिन् ॥ पूर्वे ॥ एवं परादयः ॥ सर्वादिः सर्वना
म स्यात्तच्च द्वौ रीत्यवाभिधा ॥ पूर्वादिष्वव्यवस्थायां संज्ञायां ...
पुरि ॥ परिधाने बहिर्योगे स्वोपि ज्ञात्यन्यवाच्यपि ॥ सर्वमतिक्रान्तोऽतिस
र्वस्तस्मै अतिसर्वाय ॥ प्रियः सर्वो यस्य स प्रियसर्वस्तस्मै प्रियसर्वाय ॥ सर्वो ना
म कश्चित्तस्मै सर्वाय ॥ अतिपूर्वाय ॥ समानार्थत्वात् ... ॥ अन्तरायापुरि
अन्तरे ॥ अन्तरा वाशाटकापरिधानीयाः ... ॥ अन्तरे ॥ अन्तरा ...
अन्तरीयाः ... इति वा ... ॥ द्वन्द्वे सर्वादीनां नसर्वनामत्वं ॥ पूर्वाप

85

स्या ... [illegible] ...
चा... ... हो वा ...
भुत्तस्य इति हि:

10

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मिव्यक्तये हेशब्दस्य प्राक्प्रयोगः॥ हे देव॥ हे देवौ॥ हे देवाः॥ एवं घटपटग्रामकुलाद
यः॥ सर्व। विश्व। उभ। उभय। अन्य। अन्यतर। इतर। इतम। डतर। डतम। कत
र। कतम। सम। सिम। त्वत्। त्व। भवतु। नेम। एक। पूर्व। पर। अवर। दक्षिण। उत्त
र। अपर। अधर। स्व। अन्तर। त्यद्। तद्। यद्। एतद्। इदम्। अदस्। द्वि। किम्। यु
ष्मद्। अस्मद्। एते सर्वादयः स्त्रिलिङ्गाः॥ जसी॥ सर्वादेरकारान्तात् परो जसे
ईर्भवति॥ सर्वे॥ षुर्नो णोऽनन्ते॥ ऋकाररेफषकारेभ्यः परस्य अन्त्यस्य
नकारस्य णकारादेशो भवति अन्तेस्थितस्य न सर्वाणीत्यादौ॥ अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि॥
अट्प्रत्याहारेण कवर्गेण पवर्गेण अनुस्वारेण विसर्जनेन कण्ठाभ्यां च मध्ये
व्यवधानेऽपि नस्य णो भवति नान्येन॥ सर्वेण॥ सर्वादेः स्मट्॥ सर्वादेर
कारान्तात् परस्य ङे इत्येतस्य स्मट् आगमो भवति॥ सर्वस्मै॥ अतः॥ सर्वादेरका
रान्तात् परस्य ङसेः स्मट् आगमो भवति॥ सर्वस्मात्॥ सुडामः॥ सर्वादेरवर्णान्तात् परस्य

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible] ...प्रथ्यानः ... [illegible]
पत्रं ... [illegible] ... पाति शक्तिवरा: ... [illegible]
... निर्दिशति सूत्रे ... प्रणीतानि च तानि सूत्राणि च ... [illegible]

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः नमस्कृत्य महेशानं मतं बुद्ध्वा
पतञ्जलेः पाणिनिप्रणीतसूत्राणां कुर्वे सिद्धान्तचन्द्रिकाम् १ अइउ ऋऌस
मानाः अनेनैव क्रमेणोक्तवर्णाः ज्ञेयास्ते च समानसंज्ञाः स्युः नैतेषु सूत्रेषु स
न्धिरनुसंधेयो ऽविवक्षितत्वाद्विवक्षितस्य सन्धिर्भवतीति नियमात् ह्रस्व
१ दीर्घप्लुतभेदाः सजातीया सवर्णाः एतेषां ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदाः सजातीयाः प
रस्परं सवर्णाः भण्यन्ते अल्वर्णौ च एकमात्रो ह्रस्वः द्विमात्रो दीर्घः त्रि
मात्रः प्लुतः एऐ ओ औ सन्ध्यक्षराणि उभये स्वराः अकारादय एकारादय
श्च ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदाः स्वराः उक्ता ते अवर्णो नामिनः अवर्णाद्या यणः स्व
रा नामिन उक्ता ते हयवरल् ञमङणनम् झढधघभ जबगडद खफ
छठथ चटतकप शषस् ० आपचतो ... आपः तौ वर्गौ ... [illegible]
... निकृतिविवक्षतीति विवक्षा ... विवक्षितः विवक्षितस्य
भावः विवक्षितत्वं ... [illegible]
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham
उच्चैरुदात्तः नीचैरनुदात्तः ... [illegible]

[illegible] ... प्रत्ययः ... [illegible]

...इद न यस्य यपस्य व नाम...

हयिनुमवः हयिनुमवः ...स्थितवि भाजपाशसा स्यापादि तं पाश्र्व... वेदे १

स्वरात्परो रेफहकारवर्जितो हसो हसे परे ऽ वसाने च वा द्विर्भवति

झवे जबाः झसानां झवे परे जबा भवन्ति वर्ग्यो वर्ग्ये परे सवर्णः

स्वरहीनं परेण संयोज्यम् अपाद्य वक्ताराद्द्विवाः दध्यत्र प

दध्यानय दध्यानय दध्यानय ...हा घपोद्धिः स्वरपूर्वो दूफ

वकारात्पूर्वो पदो वा द्विर्भवति गौर्य्यत्र गौर्यत्र न... नेय

२ सिं... स्यादौ उवं स्वरे मधूत्र मद्धूत्र मध्वत्र मध्वत्र सूत्रेषु २

...पदं सूत्रात्तत्राद् नुवर्तनीयं सर्वत्र ... स्वरे पितृर्थः पितृर्थः

हसे स्वरे ... स्वरे नयनम् ... स्वरे भवनम्

जो... स्वरे ... ओ॥ गवागम जो

ऽग्नम्॥ ... गवेन्द्रः॥ गवान्द्रः॥ ...पूरने

ओमय्यवयौ

87

...दानो किं गवे ...वे किं जो हि तं ...दो तो ऽतः जो वी

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नामभ्यांसहितानांसंज्ञाःस्युः अवभमजवचपरञमन्योपि का
र्यापेत कांश्चिद्विधातुमुच्चार्य्यमाणो वर्णा इत्संज्ञकः यस्येत्संज्ञा तस्य
लोपः प्रशान्तादर्शनं लोपः ॥ वर्णविनाशो लोपश्च प्रत्ययादर्शनं लुक्
स्वरानन्तरिता हसाः संयोगः कुचुटुतुपुवर्गाः अवेदो नामिनो गुणाः अ
र् अल् अर् एते गुणसंज्ञास्ते च नामिनः स्थाने भवन्ति आ ऐ औ वृद्धिः
आर् आल् ऐर् और् एते वृद्धिसंज्ञकाः अन्त्यस्वरादि टिः अन्त्योपः स्वरस्त
दादिर्वर्णष्टिसंज्ञको भवति अन्त्यात्पूर्व उपधा अन्त्याद्वर्णा
त्पूर्वो यो वर्णः स उपधासंज्ञको भवति ह्रस्वो लघुः संयोगे गुरुः दी
र्घं च मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः विभक्त्यन्तं पदं
तुल्यास्यप्रयत्नः स्वः समानकालस्य सवर्णस्य ग्राहकः ❀ इति संज्ञाप्रकर
णम् ❀ इये स्वरे इवर्णोपि त्वमापद्यते स्वरे परे हसेऽहम्

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

दिपरोह्रस्वोलघुः विसर्गोनुस्वारसंयोगादिपरोगुरुर्दीर्घश्च मु
खनासिकाभ्यामुच्चार्यमाणोवर्णोऽनुनासिकः द्विबिन्दुर्विसर्गः
शिरोबिन्दुरनुस्वारः ॥ इतिसंज्ञाप्रक्रिया॰ अधुनास्वरसन्धिर
भिधीयते दधिआनय इतिस्थिते इयंस्वरे इवर्णोयत्वमापद्यते
॥३॥ स्वरेपरे दध्यआनय इतितावद्भवति हसेहः स्वरात्परोरेफ ॥३॥
हकारवर्जितोहसोहसेपरे द्विर्भवति इतिधकारस्यद्वित्वम् पुनर्द्वि
त्वप्राप्ते नद्विरुक्तस्यद्विरुक्तिः द्वित्वविधानादृष्टावेवाधिक्यते अ
न्येहसाउत्पन्ने झवेजवाः झसानांझवेपरेजवाभवन्ति इतिपू
र्वधकारस्यदकारः सवर्णोवाहर्ज्ञोवर्ज्ञेपरासवर्णइतिवचनात्॰

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कार्य्यायेत् प्रत्ययाद्यतिरिक्तः कस्मैचित्कार्य्यायोच्चार्य्यमानो वर्ण
इत्सञ्ज्ञको भवति यस्येत्संज्ञा तस्य लोपः वर्णादर्शनं लोपः वर्ण
विरोधो लोपश्च प्रत्ययादर्शनं लुक् मित्रवदागमः शत्रुवदादेशः
स्वरानन्तरिता हलः संयोगः कुचुटुतुपु वर्गाः ङकारङ पंचवर्ण
परिग्रहणार्थः अरेदो नामिनो गुणाः नामिनस्स्थानिको अ
ए ओ एते गुणासंज्ञका भवन्ति आरैऔ वृद्धिः आआरऐ
औ एते वृद्धिसञ्ज्ञका भवन्ति अन्त्यस्वरादि टिः अन्त्यो यस्स्व
रस्तदादिर्वर्णसमूहः टिसञ्ज्ञको भवति अन्त्यात्पूर्व उपधा अन्त्या
द्वर्णमात्रात्पूर्वो यो वर्णस्स उपधासञ्ज्ञको भवति असंयोगा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वाम

अप १

वादपो यो ज्यंते॥ कर्त्तरि अदमन्तरो॥ अथात उच्चारणार्थः॥ अदादेर्लुक्॥ अद

देर्गिशादुत्यन्तस्यापोऽभवति॥ रवसे च पाभस्तानां॥ अत्ति॥ अत्तः॥ अदंति॥ ॥४१

अत्सि॥ अत्थः॥ अत्थ॥ अद्मि॥ अद्वः॥ अद्मः॥ विधिसंभावनयोः॥ अद्या

त्॥ अद्यातां॥ अद्युः॥ अद्याः॥ अद्यात॥ अद्याम॥ अद्या॥ अद्याव॥ अद्याम

॥५॥ ॥ अत्तु॥ अत्तात्॥ अत्तां॥ अदंतु॥ भस्ताधिर्हि॥ भस्तादुत्तरस्य हेर्धिर्भवति ॥५॥

॥ अद्धि॥ अत्तात्॥ अत्तं॥ अत्त॥ अदानि॥ अदाव॥ अदाम॥ अदादिस्यान

उणमोभवति॥ आदत्॥ आत्तां॥ आदन्॥ आदः॥ आत्तं॥ आत्त॥ आदं॥ आ

द्व॥ आद्म॥ शीङ् स्वप्ने॥ ङकारात्मनेपदार्थः॥ पूर्ववत् गुणादिः॥ शीङः शी

ङः सर्वगुणो भवति॥ शेते॥ शयाते॥ शीङो न्तो उट्॥ शीङः परस्यांतइ

त्यस्य उणमो भवति॥ शेरते॥ आत्मनेपदस्यांतइत्यादवति॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

आद८४

श्री गणेशाय

इति आत्मनेपदं

आमहे॥ अनद्यतने लीतेकाले॥ सेनत॥ सेनेतां॥ सेन्नंत॥ सेन्नथाः॥ सेन्नेथां॥
सेन्नध्वं॥ सेन्ने॥ सेन्नावहि॥ सेन्नामहि॥ डुपचष् पाके॥ डुकारषकारावनुबंधौ॥
अकार उभयपदार्थः॥ पूर्ववदादिप्रयोगः॥ पचति॥ पचतः॥ पचंति॥ प
चसि॥ पचथः॥ पचथ॥ पचामि॥ पचावः॥ पचामः॥ पचेत्॥ पचेतां॥ पचेयुः॥
पचेः॥ पचेतं॥ पचेत॥ पचेयं॥ पचेव॥ पचेम॥ आशीः प्रेरणयोः॥ पचतु॥
पचतात्॥ पचतां॥ पचंतु॥ पच॥ पचतात्॥ पचतं॥ पचत॥ पचानि॥ पचा
व॥ पचाम॥ अनद्यतने लीतेकाले॥ अपचत्॥ अपचतां॥ अपचन्॥ अ
पचः॥ अपचतं॥ अपचत॥ अपचं॥ अपचाव॥ अपचाम॥ इति प॥ आत्मनेपदे॥
पचते॥ पचेते॥ पचंते॥ पचसे॥ पचेथे॥ पचध्वे॥ पचे॥ पचावहे॥ पचामहे॥ प
चेत॥ पचेयातां॥ पचेरन्॥ पचतां॥ पचेतां॥ पचंतां॥ अपचत॥ अपचेतां॥ अ
पचंत॥ इत्यादि॥ ॐ॥ इति पादपः॥ ॐ॥ इदानीं उभयकरणानां दोर्गणानि

पं॥ २

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

रो॥ ईत्येतयोर्हल्यादिकसंज्ञियोर्भवतः॥ तिपरे॥ ब्रुवंति॥ ब्रवीषि॥ ब्रू
थः॥ ब्रूथ॥ ब्रवीमि॥ ब्रूवः॥ ब्रूमः॥ ब्रूते॥ ब्रुवाते॥ ब्रुवते॥ ब्रूषे॥ ब्रुवाथे॥ ब्रूध्वे॥ ब्रुवे॥
१० ब्रूवहे॥ ब्रूमहे॥ आत्मनेपदे॥ ब्रुव आहस्य पंचानां॥ ब्रुव उत्तरेषां तिवादीनां णप् अतु
स्॥ उस्॥ थप्॥ अथुस्॥ इत्येतेषां पंचानां आदेशा भवंति॥ णकारो वृद्ध्यर्थः॥ ब्रुव आ
हश्चादेशो भवंति॥ आह॥ आहतुः॥ आहुः॥ तस्य थकारे परे आहो तकारस्य तका ६
रादेशो भवति॥ आत्थ॥ आहथुः॥ विधिसंभावनयोः॥ ब्रूयात्॥ ब्रूयातां॥
ब्रूयुः॥ ब्रूयाः॥ ब्रूयातं॥ ब्रूयात॥ ब्रूयां॥ ब्रूयाव॥ ब्रूयाम॥ ब्रुवीत॥ ब्रुवीयातां॥
ब्रुवीरन्॥ इत्यादि॥ आशीःप्रेरणयोः॥ ब्रवीतु॥ ब्रूतात्॥ ब्रूतां॥ ब्रुवंतु॥ ब्रूहि॥
ब्रूतात्॥ ब्रूतं॥ ब्रूत॥ ब्रवाणि॥ ब्रवाव॥ ब्रवाम॥ ब्रूतां॥ ब्रुवातां॥ ब्रुवंतां॥ ब्रूष्व॥
ब्रुवाथां॥ ब्रूध्वं॥ ब्रवै॥ ब्रवावहै॥ ब्रवामहै॥ अनद्यतनेऽतीते काले॥ अब्रवीत्॥
अब्रूतां॥ अब्रुवन्॥ अब्रवीः॥ अब्रूतं॥ अब्रूत॥ अब्रवं॥ अब्रूव॥ अब्रूम॥ अब्रूत॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अकारं इत्त अस्पन॥ शेयते॥ शेषु॥ शपाथे॥ शेब्रे॥ शपे॥ शेवहे॥ शेमते॥ वि
बिसं भावन्नयोः॥ शपीलु॥ शपीपातं॥ शपीवरा॥ शपीथाः॥ शपीघाप्यां॥
शपीघं॥ शपीप॥ शपीवहि॥ शपीमहि॥ आशीप्रत्यया पोः॥ शेतां॥ शपातां॥
शेनुतां॥ शेध्वशपाथां॥ शेध्वं॥ शपे॥ शपावहे॥ शपामहे॥ अशेत॥ अशपातां॥
अशेरत॥ अशेथाः॥ अशपाथां॥ अशेध्वं॥ अशयि॥ अशेवहि॥ अशेमहि॥
असतापवाचि॥ अकारं उभयपदार्थः॥ अवादादि विपिति स्मि॥ धुतङ्कारं प्रत्य
यो भवति॥ तकारान्तकारसकारादौ धुतिपरे॥ अयादे विभये॥ गुणाभा
देशो॥ ब्रवीति॥ ब्रूतः॥ पोवीतो त्रिपुओस्वन॥ पोवे त्रिवर्णमाने॥
विकरणस्य नोर्णोतेश्च वर्णोवरति त्रिपुओ भवतः स्वत्रे पकाने वपने
उनेकस्वरस्यासंयोगपूर्वस्यात्रयो॥ नातंप्योर्वः अनपि विषयेप उका
रस्य वकारो न भवति॥ किंतु अनेन उवादेशो भवति॥ हुरोदीकि॥ हु

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

हुश्नल्भ्यो ऽन्तरस्य हेर्धिर्भवति ॥ जुहुधि ॥ जुहुतात् ॥ जुहुतं ॥ जुहुत ॥ जुहवानि ॥ जुहवाव ॥ जुह
वाम ॥ अनद्यतने लङ्लोले का ले ॥ अजुहोत् ॥ अजुहुतां ॥ अजुहवुः ॥ द्विरुक्तादुत्तरस्यान उस्
९१ भवति ॥ जुसि गुणादेशो ॥ अजुहवुः ॥ अजुहोः ॥ अजुहुतं ॥ अजुहुत ॥ अजुहवं ॥ अजुहुव ॥ अजुहु
व ॥ अजुहुत ॥ अजुहुम ॥ ओहाङ् गतौ ॥ ङकार आत्मनेपदार्थः ॥ ओकार ओदित्कार्यार्थः ॥
हाङ्लिस्प ॥ द्विर्वचनादिपूर्वस्य ॥ ह्रस्वः ॥ पूर्वसंबन्धिनो दीर्घस्य ह्रस्वो भवति ॥ भृ
८ ञांञ्भुजि ॥ हुश्न हाङ्माङ् एतेषां पूर्वस्याभ्यासस्येकारादेशो भवति लुकि सति ॥ जिहीते ॥ ८
ऽयो नुवर्जं लङ्काररूपाणि ॥ द्विरुक्तस्य धातोः श्नाभ्यस्तयोरातो लोपो भवति ङिति सार्वधातुके ङिति
हसे ॥ जिहीते ॥ जिहाते ॥ जिहते ॥ जिहीषे ॥ जिहाथे ॥ जिहीध्वे ॥ जिहे ॥ जिहीवहे ॥ जिहीमहे
विभौ ॥ जिहीत ॥ जिहातां ॥ जिहीरता ॥ जिहीथाः ॥ जिहाथां ॥ जिहीध्वं ॥ जिहीय ॥ जि
हीवहि ॥ जिहीमहि ॥ आशीःप्रेरणयोः ॥ जिहीतां ॥ जिहातां ॥ जिहतां ॥ जिहीष्व ॥ जिहा थां
जिहीध्वं ॥ जिहै ॥ जिहावहै ॥ जिहामहै ॥ अनद्यतने लङ्लाले ॥ अजिहीत ॥ अजिहातां ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible]नां अबुभुवंत ॥ अबुभूषा ॥ अबुभुवां ॥ अबुभुवां ॥ अबुभुवि ॥ अबुभूवति ॥ अबुभूजति ॥ इत्या-
दि ॥ लुङि व कन स्यापि जुहोत्यादिगणस्य विशेषः ॥ हु दानादनयोः ॥ हुदे ह्वि च ॥
क्षादिगणस्य शुद्धस्य लुग् भवति ॥ जुहोति स्मिन् स्मिन् श्यानोर्द्विवचनं ॥ तस्य
नादिवद्भिः ॥ तस्य नोऽवयोऽद्विर्भूतो द्विर्भवति ॥ कुहोश्चुः ॥ पूर्वस्य कवर्गह-
कारयोश्चुत्वं भवति ॥ ह्रस्व वर्गस्य चतुर्थः ॥ [illegible] हस्य जादेशो भवति ॥ खफछ
ठथानां च तकपा भवति ॥ इति विशेषः ॥ भष्पानां जबगडदाः ॥ पूर्वस्य वर्गीनां चपा
नां जबपा भवति ॥ जुहोति ॥ जुहुतः ॥ द्वि ॥ द्विगुण डुतन स्यां तड स्यादुस्य भवति ॥ जुह्वति ॥
जुहोषि ॥ जुहुथः ॥ जुहुथ ॥ जुहोमि ॥ ओर्वोर्वा लोपः ॥ प्रत्ययसंबंधिन उकारस्य वमयोः पर
योर्लोपो भवति ॥ जाग्रहराणां क्वचिदन्यत्रापि ॥ जुह्वः ॥ जुह्मः ॥ जुहुवः ॥ जुहुमः ॥ सप्तसं
ज्ञा लिङ् ॥ जुहुयात् ॥ जुहुयातां ॥ जुहुयुः ॥ इत्यादि ॥ हुझल्भ्यो हेर्धिः [illegible] ॥ अजि
होऽ जुहोति ॥ पंचोपाधितीनानां संज्ञा लोट् ॥ जुहोतु ॥ जुहुतात् ॥ जुहुतां ॥ जुह्वतु ॥ होहि ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पूर्वसंबंधिनोऽभ्यासस्याकारादेशो भवति॥ अबिभः॥ अबिभृतां॥ अबिभरुः॥ अबि
भः॥ अबिभृतं॥ अबिभृत॥ अबिभरं॥ अबिभृव॥ अबिभृम॥ ओहाक् त्यागे॥ जहा
९२ ति॥ जहीतः॥ जहति॥ जहासि॥ जहीथः॥ जहीथ॥ जहामि॥ जहीवः॥ जहीमः॥ य
दादेः॥ जहातेराकारस्य लोपो भवति यादादेः परे॥ जह्यात्॥ जह्यातां॥ जह्युः॥ जहातु॥
जहीतात्॥ जहीतां॥ जहतु॥ ईर्वा हौ॥ जहातेराकारस्य हौ परे वा ईकारादेशो भवति॥ ज
हीहि॥ जहाहि॥ जहीतात्॥ जहीतं॥ जहीत॥ जहानि॥ जहाव॥ जहाम॥ अजहात्॥ अ
जहीतां॥ उस्यालोपः॥ अजहुः॥ अजहाः॥ अजहीतं॥ अजहीत॥ अजहां॥ अजही
व॥ अजहीम॥ डुदाञ् दाने॥ ञकारडुकारउभयपदार्थाः॥ इकारो ङित्कार्यार्थः॥
दा इति स्थिते॥ पूर्ववद्द्विर्वचनं॥ ह्रस्वः॥ ददाति॥ ददे॥ द्विरुक्तस्य दादेराकारस्य
लोपो भवति ङिति परे॥ श्नाभ्यस्तयोरातः॥ दत्तः॥ ददति॥ ददासि॥ दत्थः॥ द
त्थ॥ ददामि॥ दद्वः॥ दद्मः॥ दद्यात्॥ दद्यातां॥ दद्युः॥ ददातु॥ दत्तात्॥ दत्तां॥ ददतु॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

तो

अजिहत ॥ अजिहीथाः ॥ अजिहाथां ॥ अजिहीध्वं ॥ अजिहि ॥ अजिहीवहि ॥ अजिहीमहि ॥ मा
ङ्माने ॥ मिमीते ॥ मिमाते ॥ मिमते ॥ मिमीषे ॥ मिमाथे ॥ मिमीध्वे ॥ मिमे ॥ मिमीवहे ॥
मीमहे ॥ मिमीत ॥ मिमीयातां ॥ मिमीरन् ॥ मिमीतां ॥ मिमातां ॥ मिमतां ॥ मिमीष्व ॥
मिमाथां ॥ मिमीध्वं ॥ मिमै ॥ मिमावहै ॥ मिमामहै ॥ अमिमीत ॥ अमिमातां ॥ अमिमत ॥
अमिमीथाः ॥ अमिमाथां ॥ अमिमीध्वं ॥ अमिमि ॥ अमिमीवहि ॥ अमिमीमहि ॥ डु
भृञ् धारणपोषणयोः ॥ बिभर्ति ॥ बिभृतः ॥ बिभ्रति ॥ बिभर्षि ॥ बिभृथः ॥ बिभृथ ॥
बिभर्मि ॥ बिभृवः ॥ बिभृमः ॥ बिभृते ॥ बिभ्राते ॥ बिभ्रते ॥ बिभृषे ॥ बिभ्राथे ॥ बिभृध्वे ॥
बिभ्रे ॥ बिभृवहे ॥ बिभृमहे ॥ बिभृयात् ॥ बिभ्रीत ॥ बिभ्रीयातां ॥ बिभ्रीरन् ॥ बिभ्रीथाः ॥
बिभ्रीयाथां ॥ बिभ्रीध्वं ॥ बिभ्रीय ॥ बिभ्रीवहि ॥ बिभ्रीमहि ॥ बिभर्तु ॥ बिभृतात् ॥ बिभृतां ॥
बिभ्रतु ॥ बिभृहि ॥ बिभृतात् ॥ बिभृतं ॥ बिभृत ॥ बिभराणि ॥ बिभराव ॥ बिभराम ॥ दि
वावद ॥ दिधेपो हेसात् ॥ हसेदुलग्वोर्द्धिपसिपट्स्वेत पोर्द्धेपिमवृत्ति ॥ पित्वाद्गुणः ॥ नः ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

घलाह्वा॥ घसां॥ दघरु॥ घ्रेहि॥ घलाह्वा॥ घत्तं॥ घत्त॥ दघानि॥ दघाव॥ दघाम॥
अदघांह॥ अघत्तां॥ अदघुः॥ अदघाः॥ अघत्त॥ अघत्त॥ अदघां॥ अदघं॥ अदघ्म
घत्ते॥ दघाते॥ दघते॥ घत्से॥ दघाथे॥ घद्ध्वे॥ दघे॥ दघ्वहे॥ दघ्महे॥ दघीत॥ दघी
९३ याताां॥ दघीरन्॥ घत्ता॥ दघातां॥ दघतां॥ घत्स्व॥ दघाथां॥ घद्ध्वं॥ दघै॥ दघा
वहै॥ दघामहै॥ अघत्त॥ अदघातां॥ अदघत॥ अघत्थाः॥ अदघाथां॥ अ
८ घद्ध्वं॥ अदघि॥ अदघ्वहि॥ अदघ्महि॥ दिव्‌क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युति
स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु॥ डुजावडदि कार्य्यार्थः॥ दिव्‌ इति स्थिते॥ ८
दिवादेर्श्यः॥ दिवादेर्गणात् श्यः प्रत्ययो भवति॥ श्योऽपवादः॥ दी
व्यते॥ दीव्यति॥ दीव्यतः॥ दीव्यन्ति॥ दीव्यसि॥ दीव्यथः॥ दीव्यथ॥ दीव्यामि॥
दीव्यावः॥ दीव्यामः॥ दीव्येत्॥ दीव्येतां॥ दीव्येयुः॥ दीव्येः॥ दीव्येतं॥ दीव्येत॥
दीव्येयं॥ दीव्येव॥ दीव्येम॥ दीव्यतु॥ दीव्यताद्॥ दीव्यतां॥ दीव्यन्तु॥ दीव्य॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

दांहे॥ ददीजोलौपश्चेपर्वस्यलोपो भवति॥ धातोराकारस्यऐकारः॥ दै॥ दत्ताद्दा॥
दत्तं॥ दत्त॥ ददानि॥ ददाव॥ ददाम॥ अददौ॥ अदत्तां॥ अददुः॥ अददाः॥ अदत्तं॥ अ
दत्त॥ अददं॥ अदद्व॥ अदद्म॥ आत्मनेपदे पूर्वे ददकारलोपः॥ दत्ते॥ ददाते॥ दत्ते॥
दत्से॥ ददाथे॥ दद्ध्वे॥ ददे॥ दद्वहे॥ दद्महे॥ ददीत॥ ददीयातां॥ ददीरन्॥ ददीथाः॥ द
दीयाथां॥ ददीध्वं॥ ददीय॥ ददीवहि॥ ददीमहि॥ दत्तां॥ ददातां॥ ददतां॥ दत्स्व॥ द
दाथां॥ दद्ध्वं॥ ददै॥ ददावहै॥ ददामहै॥ [illegible]॥ अदत्त॥ [illegible]॥ अददातां॥ अद
दत॥ अदत्थाः॥ अददाथां॥ अदद्ध्वं॥ अददि॥ अदद्वहि॥ अदद्महि॥ डुधाञ् धार
णपोषणयोः॥ पूर्वस्य ङिति झसेजः॥ झषांतस्य धातोर्ङिति झसे परे पूर्वस्य दधा
तस्य भकारादेशो भवति॥ दधाति॥ धत्तः॥ दधति॥ द्वित्वात् त्वतस्यांत इत्यस्याभावे दधति॥ द
धति॥ दधासि॥ धत्थः॥ धत्थ॥ दधामि॥ दध्वः॥ दध्मः॥ दध्यात्॥ दध्यातां॥ दध्युः॥ दधातु॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नामादीनांच सप्काव नकाव नकावपोस्तैपूर्वमाबिशावेत्र षकावशाकौ मवतः॥ तथा
नेछेव निमित्तेषु॥ न्पू॥ विकरणस्य नुप्रत्यय पस्य उप्रत्यस्य चगुरोमवनिपिति
परे॥ स्त्रीप्रि गुरोरासिद्धौ जजौ॥ सुतनुः॥ सुन्वंति॥ सुरोषि॥ सुन्वयः॥ सुनुय॥ सुनो
मि॥ सुन्वः॥ सुनुवः॥ सुन्मः॥ सुनुमः॥ सुनुयात्॥ सुनुयातां॥ सुनुयुः॥ सुनोतु॥ सुनुतं
१० ता॥ सुनुतां॥ सुन्वंतु॥ स्त्रो ह्री हेः॥ प्रत्ययसंबंधिन उकाराद् उत्तरस्य हेर्लोपो भवति॥ वा १०
सहसात्संयोगादुत्तरस्य न भवति॥ तत्र्वं न्हूत्तनुरो॥ हीस्पत्र न भवति॥ सुनु॥ सुनु
ताद्धा॥ सुनुतं॥ सुनुत॥ सुनवानि॥ सुनवाव॥ सुनवाम॥ असुनोत्॥ असुनुतां॥
असुन्वन्॥ असुनोः॥ असुनुतं॥ असुनुत॥ असुनवं॥ असुनु॥ असुनुव॥ असुनुम॥
असुनुम॥ सुनुते॥ सुन्वाते॥ सुन्वते॥ सुनुषे॥ सुन्वाथे॥ सुनुध्वे॥ सुन्वे॥ सुनुव
हे॥ सुनुमहे॥ सुन्वीत॥ सुन्वीयातां॥ सुन्वीरन्॥ सुनुतां॥ सुन्वातां॥ सुन्वतां॥ सुनुष्व॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

दीध्यता॥ धां॥ दीध्यतं॥ दीध्यत॥ दीध्यानि॥ दीध्याव॥ दीध्याम॥ अदीध्यत्॥ अदीध्यतां॥ अदी
ध्यन्॥ अदीध्यः॥ अदीध्यतं॥ अदीध्यत॥ अदीध्यं॥ अदीध्याव॥ अदीध्याम॥ इत्यादि मेव
लीवे जेपं॥ विदसत्याप्तं॥ आत्मनेपदे॥ विपते॥ विपेते॥ विपन्ते॥ विपसे॥ विपेथे॥
विपध्वे॥ विपे॥ विपावहे॥ विपामहे॥ विपेत॥ विपेयातां॥ विपेरन्॥ विपेथाः॥
विपेयाथां॥ विपेध्वं॥ विपेय॥ विपेवहि॥ विपेमहि॥ विपतां॥ विपेतां॥ विपन्तां॥
विपस्व॥ विपेथां॥ विपध्वं॥ विपै॥ विपावहै॥ विपामहै॥ अविपत॥ अविपेतां॥
अविपन्त॥ अविपथाः॥ अविपेथां॥ अविपे॥ अविपावहि॥ अविपामहि॥ षुञ् अभिषवे॥ ञकार उभ
यपदार्थः॥ आदेः ष्णः स्नः॥ धातोरादौ वर्तमानयोः षकारणकारयोः सकारनकारौ भव
तः॥ सुञ् इति स्थिते॥ पूर्ववत्तिवादयः॥ स्वादेर्नुः॥ स्वादेर्गणात् नुप्रत्ययो भवति॥ चतुर्षु परेषु॥
शपोऽपवादः॥ प्रागमित्प्रयोगः॥ प्रादेश्वतधातौ सुनमां॥ प्रादेरुपसर्गात्स्य षो त्वादौ तो

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

लोमवाज्ञात्रस्यलोपोभवति॥ रुन्ति पयो॥ रुंधः॥ रुंधंति॥ रुणत्सि॥ रुंधः॥ रुंध॥
रुणध्मि॥ रुंध्वः॥ रुंध्मः॥ रुंध्यात्॥ रुंध्यातां॥ रुंध्युः॥ रुणद्धु॥ रुंधाद्वा॥
१५ रुंद्धां॥ रुंधंतु॥ रुणाद्धि ते॥ रुणाडुत्तरस्यहेर्धिर्भवति॥ रुंद्धि॥ रुंधाद्वा॥
रुंधं॥ रुंद्ध॥ रुणधानि॥ रुणधाव रुणधाम॥ दिस्योर्हि सात्॥ हसाडुत्तरस्यादिपसिप
र्स्वत पोलोपो भवति॥ आप्नुसाने॥ अरुणत्॥ अरुणद्॥ अरुंद्धां॥ अरुंधन्॥ अ
११ अमंपुरुषैकवचनेसिपि विरुपैत्था कारस्यविकल्पेदकारे कृते॥ दसः॥ दकारस्य ११
धासकारे लोपो भवति सिपि विपरे॥ सस्यविसर्गः॥ अरुणः॥ अरुणत्॥ अरुंद्ध॥ अरुं
धं॥ अरुंद्ध॥ अरुणधं॥ अरुंध्व॥ अरुंध्म॥ अरुंधत॥ अरुंध्यातां॥ अरुंधत॥
अरुंध्याः॥ अरुंध्यापां॥ अरुंधे॥ अरुंधि॥ अरुंध्वहि॥ अरुंधमहि॥ आत्मनेप
दपि॥ भुनजपालनेभ्यवहारयोः॥ [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कम्पः

सुन्वाथां॥ सुनुध्वं॥ सुनवै॥ सुनवावहै॥ सुनवामहै॥ असुनुत॥ असुन्वातां॥ अ
सुन्वत॥ असुनुथाः॥ असुन्वाथां॥ असुनुध्वं॥ असुन्वि॥ असुन्वहि॥ असुनुमहि॥ अ
सुऽयास्सै॥ अश्नुते॥ अश्नुवाते॥ अश्नुवते॥ अश्नुषे॥ अश्नुवाथे॥ अश्नुध्वे॥ अ
श्नुवे॥ अश्नुवहे॥ अश्नुमहे॥ चिञ् चयने॥ चिनोति॥ चिनुतः॥ चिन्वन्ति॥ चिनो
षि॥ चिनुथः॥ चिनुथ॥ चिनोमि॥ चिन्वः॥ चिनुवः॥ चिन्मः॥ चिनुमः॥ चिनुते॥
चिन्वाते॥ चिन्वते॥ चिनुषे॥ चिन्वाथे॥ चिनुध्वे॥ चिन्वे॥ चिनुवहे॥ चिनुमहे॥
इत्यादि॥ ⁂ इति स्वादयः॥ इयनुबंधः॥ ३॥ ८ चितो वेति विशेषणार्थः॥ देवादेर्गण॥
देवादेर्गणः॥ नमपृत्स्वपो मध्यतिचतुर्थेषु॥ अपोऽपवादः॥ मध्यमस्या न निप
मार्थः॥ स्योऽर्थः॥ भ्रमा नस्यपासौः पचपोस्य कानयपकानपो र्थकानादेशौ॥ वरि
भ्रमेजथा॥ सात्वंचा॥ तृशाधि॥ नमसोस्या॥ नमइत्येतस्य चिकर्णास्यात्स्मृशोनिधा

पदार्थः॥ तनादेरुप॥ नुपः॥ इति गुणः॥ करोति॥ ङित्यदुः॥ करोतेरकारस्य उकारो भ
वति ङिति विभक्तौ परतः॥ कुर्वन्ति॥ करोषि॥ कुरुथः॥ कुरुथ॥ करोमि॥ कुर्वः॥
कुर्मः॥ करोति त्यं॥ अपोर्वमयोः॥ उकारस्य लोपो भवति॥ करोते॥ कुरु उकारस्य
उकारस्य लोपो भवति यकारे परे॥ कुर्यात॥ कुर्यातां॥ कुर्युः इत्यादि॥ लपः॥ क
रोतु॥ कुरुतात्॥ कुरुतां॥ कुर्वन्तु॥ ङित्यदुः॥ तनादेरुपो हेर्लोपः॥ इत्यनेन न
१२ लुके॥ [illegible]॥ कुरु॥ कुरुतात्॥ कुरुतं॥ कुरुत॥ करवाणि॥ करवाव॥ करवाम॥ १२
इत्यादि॥ अकरोत्॥ अकुरुतां॥ अकुर्वन्॥ कुरुते॥ कुर्वाते॥ कुर्वते॥ कुरुषे॥ कुर्वा
थे॥ कुरुध्वे॥ कुर्वे॥ कुर्वहे॥ कुर्महे॥ कुर्वीत॥ कुरुतां॥ कुर्वातां॥ कुर्वतां॥ कुरु
ष्व॥ कुर्वाथां॥ कुरुध्वं॥ कुर्वै॥ कुर्वावहै॥ कुर्वामहै॥ अकुरुत॥ अकुर्वातां॥ अकुर्व
त॥ इत्यादि॥ तुद व्यथने॥ तुदादेरः॥ तुदादेर्गणात् अप्रत्ययो भवति स्यादिषु दिव्वर्जेषु
परतः॥ तुदति॥ तुदतः॥ तुदन्ति॥ तुदसि॥ तुदथः॥ तुदथ॥ तुदामि॥ तुदावः॥ तुदामः॥
तुदेत्॥ [illegible] तुदता॥ तुदन्तं॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अध्य १

मै... मेराग्मि॥ मेज्व:॥ मे स्मः॥ मेंकु:॥ ... रवसे चपा मे लानोइति कारः॥

मेंगात्कु॥ मेलोन्द्वा॥ मेंतां॥ मेंजते॥ मेउिंघ्व॥ मेकान्वा॥ मेंक्तो॥ मेको॥ मेनजानि॥

मेनजाय॥ मेनजाम॥ ममुराके॥ ममुराज॥ मेंतै॥ मेजाते॥ मेन्हे॥ मेजाघे॥

मेग्दे॥ मेंजे॥ मेंजवहे॥ मेंममहे॥ मेंमीतजस्त्वां॥ मेंजातां॥ मेंजतां॥ मेन्ध्वं॥ मे

जाधां॥ मेध्वं॥ मेनजै॥ मेनजावहै॥ मेनजामहै॥ ममेक्त॥ ममेजातां॥ ममेजत॥ ममे

न्था:॥ ममेजाथां॥ ममेध्वं॥ ममजि॥ ममेजवहि॥ ममेजमहि॥ तनुविस्तारेउ

कारउच्चारणार्थः॥ तनइति स्थिते॥ तिबादिपूर्ववत्॥ तनोदेगुण॥ तनोदेर्जरादुप्र

त्ययेषु परत्र तिपत्तस्य पूर्ववत्क्ते पपरतः॥ पत्तायपि त्वार्थ्यार्थः॥ लुप: इतिगुरा:॥ त

नोति॥ तनुतः॥ तन्वंति॥ तनोषि॥ तनुथ:॥ तनुथ॥ तनोमि॥ तन्वः॥ तनुवः॥ तनुमः॥

तनुमः॥ ततनपात॥ तनोतु तनतात॥ तनुतां॥ तन्वंतु॥ तनु॥ तनतात॥ तनुतं॥

तनुत॥ तनवानि॥ तनवाव॥ तनवाम॥ तनोति॥ वृत्तेषं॥ डुकृञ्करणे॥ अमकरउमप

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ऋीरागीयाभ्यां॥ऋीरागीभ्यां॥ऋीरागीभ्यः॥ऋीरागीवहि॥ऋीरागीमहि॥स्त्रऋीरागीतृ॥स्त्र
ऋीरागीसं॥स्त्रऋीरांतु॥स्त्रऋीरागीघ्नाः॥स्त्रऋीरागीभ्यां॥स्त्रऋीरागीभ्यां॥स्त्रऋीरा
स्त्रऋीरागीवहि॥स्त्रऋीरागीमहि॥स्त्रहउपादाने॥स्त्रजानउज्ञारांगीधेः॥स्त्रहांडि
तिव॥उवहि स्याव्ये मक्ते म व्यघव चं [illegible] पृघ्रमस्त्रवृस्त्राकीनां [illegible] ङितिम
परेसंप्रसारणंम॰कृति॥पकारवकारावरेफान्तां इकार उकार ऋकाराः॥मवे
१३ ति॥॥रेफस्य ऋकारः॥ऊहरागांति॥ऊहरागीतः॥ऊहरांगांति॥ऊहरागीप १३
८ ता॥ऊहरागीपातां॥ऊहरागीपु॥ऊहरागांतु॥ऊहरागीतातां॥ऊहरागी
तां॥ऋीरागांतिज ज्ञेयं॥हस्रा तनतौ॥हसांता तस्माद ऊर्ज्जा दानप्रत्ययो
भवति॥हसंतौ॥मतः हसितः॥ऊंरो॥पृच्छतौ॥पृच्छांति॥पृच्छीतः॥पृच्छ
ति॥इत्यादि॥पृच्छीयातां॥पृच्छीयातां॥पृच्छीयुः॥पृच्छांतु॥पृच्छीतात॥पृच्छीतां॥
पृच्छंतु॥पृच्छेतां॥पृच्छीतात॥पृच्छीतां॥पृच्छीत॥पृच्छांनि॥पृच्छाव॥पृच्छाम॥

CC-0 Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ऊ द स ए ऌ दा नि॥ ऊ दा ला॥ ऊ ... ॥ ... ॥ ल लु द तां॥ ... ल ऌ दा॥ ... ऊ द
द तं॥ अ ऌ द ता॥ अ ऌ दं॥ अ ऌ द ता॥ अ ऌ दा म॥ ५ ही अ द ... नि म ये॥ ...
प प दार्थः॥ ५ क्ला य ५ ... ॥ ... दः॥ अ या दे ग ता॥ ला पु स्य यो भ य नि
क र्तं नि ... हि ल प स्या दि ष॥ ह्री रा नि॥ ई ह स॥ ना इ त्य त स्या का न स्या ई त्वं भे य ति
डि ति ह से प ये॥ ना त:॥ ना इ त्य त स्या ... लि डि ति स्व ये प ये॥ ह्री रा लि॥ ह्री
रा शि॥॥॥ ह्री रा थः॥ ह्री रा थ्या॥ ह्री रा मि॥ ह्री रा वः॥ ह्री रा भ॥ ह्री रा
पा त॥ इ त्या दि॥ ३॥५॥ ह्री रा ... ॥ ह्री रा ता घा॥ ह्री रा तां॥ ह्री रा ... ॥ ह्री रा हि॥
ह्री रा ता ह॥ ह्री रा त॥ ह्री रा त॥ ह्री रा नि॥ ह्री रा ब॥ ह्री रा म॥ अ ह्री रा त॥
अ ह्री रा तां॥ अ ह्री रा त॥ अ ह्री रा:॥ अ ह्री रा तं॥ ७७ ह्री रा ह॥ अ ह्री रां॥ अ ह्री रा
व॥ अ ह्री रा म॥ ह्री रां ते॥ ह्री रा ते॥ ह्री रां ते॥ ह्री रा ये॥ ह्री रा ये॥ ह्री रा ह्वे॥
ह्री यो॥ ह्री रा व ते॥ ह्री रा म हे॥ ह्री रा त॥ ह्री रा या तां॥ ह्री रा र ता॥ ह्री रा
था:॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

आस्यते सम्दिराशीडेश्रयते किंचवक्तव्य॥ सपलेसुद्वेरा॥ प्रिष्यपश्यो॥ सुप्यते॥ सुप्त
सुप्यता॥ असुप्यत॥ अकर्मकोपि कदाचित् सकर्मतामनुभवति॥ उपसर्गेणा[illegible]त्व
र्थो [illegible]दे[illegible]अशीयते॥ तथाच विहाराहारसंहारप्रतीहारप्रहारवत् धात्वर्थबाध्यते कश्चि
त कश्चित्तमनुवर्तते॥ विशेषयाभिर्निष्ठितमेवार्थ॥ उपसर्गगतिस्त्रिधा॥ अनुपनिपूर्व
९८ ॥ धातुः॥ सकर्मकः॥ इति वचनात् सुखमनुभूयते स्वामिना॥ येतु कर्मसापेक्षा अपि
१४ यामाकुर्वते सकर्मकाः॥ कुप्रापदंदारिक्रमणे ज्ञापदाभवेत॥ तदा सकर्मको धातुर्भवती १४
त्यकर्मकः॥ कूदः क्षीयते कातुकेनत्वेङ् सीक्षीयसे नागेः भिदागेः सुखमहं क्षीये अ
पक्षित्वादास्यादीर्घादेशो भवति॥ अकारणप्रत्यये परेऽपि[illegible]ई कारो भवधात्वा
र्थः॥ क्षीयते मङ्घया रागेदानमादीयतेदृगतेजितम्यो॥ हीयते पतंबोते रायाप कार्ये
रेफ्पूर्वस्वदीर्घो भवति दैवदत्तेनदंकाणीयंतोपलक्षितकरो विसर्गंते हूयते अत
वत्तोपदेशिः॥ [illegible] इतिवद्वेतैवदीपिश्रावयंतदीयते

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मपस्तापे॥मस्मासि॥मस्मी पा॥मस्मानु॥मस्मीतात॥मस्मी नां॥मस्संतमस्मया॥
इत्यादि॥त्वमुष्मात॥त्वमस्मीनं॥त्वमस्मज॥इत्यादि॥स श्रंत्र कर्तविपुक्तिपादुष्टव्यो॥
तत्वविभक्तिचतुष्टयंसार्वधातुकसंज्ञापाशितीषा नां॥ऋष्याणकर्मणोवंशि
प्रक्रियातिंगुणं नो॥श्रामुणिककर्मारि॥सकर्मके प्योधातुभ्यो भविभावे सकर्म
के भ्यश्च कर्मणि श्रात्मनेपदं भवति॥येकर्मणि येकाः क्रियामाहुः॥ते सकर्मकाः॥
भूपच श्रसशीङप्रभृतयः॥तथाच॥ये सतास्थिति जागर्ति वृद्धि॥तेषां
प ए जीवति मर्शीसपनशीङ विदि प्रार्थधातुगसांतमकर्मकमाहुः॥धातुशिसमः छिदो दृननं
ते कुंध संतुष्टि स्पर्धे शोक दोषा श्रादेशे पारिवधंतथाच प्रमादं प्रसाप चाहुः॥परचतुर्षु॥भाते
र्मीकेकर्मणि यपरकप्रत्ययोभवति॥चतुर्षुपूर्वोक्तेषुपरतः कुर्का गोंपराप्रति भिधार्थः॥सत्मा
त्रेभावगम्यस्मादस्मंपचमानके॥भावलक्षणे यलनं अन्यो मेवं इत्यभीधी ... भावस्येकत्वादे
कवचनं मेवभवति॥प्रथमपुरुषस्य ... ॥स्यपतेभा ... मिके॥श्रात्मनेपदे भाते॥

तेव ... गप भूधाता ... ॥ ... ग्रा॰ २ ... भानकाश॰ पत्र २ प ६

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

स्प्रप्रधानेद्धहादीनांप्रभावानेवहिद्धांकर्मशीघ्रस्सपांभवंति॥

शीघ्रापरो नगर्न पते॥

११ लागपिकैर्वनचरः॥ दुर्पौचपाआपांभोजनंजाध्यतेपजमानोपावकेनप्रच्छ शिपत्ता
पांग्रहोद्धितचेतिसंप्रसावदांपर्दू तेपंथानपथिकेनपंथाः॥शिष्येसाध्यैः नत्वंपच्छ
तेइसादिप्रपोसमवु तःकर्तरि प्रशीपत्नेपरोक्षेसापस्मलस उसपप स्पृष्ठसम्म
१५ सापूवमरश्रातेईवेसेन्त्राणेधरवहेमंहेधातोःपनोक्ष्मस्पनीमेकालेसाव १५
दपोभवंति रुवांसंक्षालिद्र मसापृच्छतिस्थितेसाकायोपद्यर्थःपकानःपित
कार्यार्थःत्रिस्यसाधादिसंयोगभातोर्द्विवचनंभवति॥ आम्भेरीद्वे पूर्वस्याक
यस्यमपादधनवाकावोभवतिनासेसतिउवः॥पूर्वसंवधिनोसेधेमङ्ग्लोम
वति मपानोजवद्यपादीविकारः धेगे भूबोडगांगमोभवति॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कितुनिपीपतं [illegible] मैनोतु [illegible] णो ।। आऽत्मा जे मीयते मे [illegible] ।।
[illegible] ।। [illegible] सोवानु [illegible] ति ।। स्वनेधिविबपे ।। कापते रा
पते गीपते ।। रोलनकु [illegible] धीयते ।। [illegible] गो ही पते स्प्रागतितिवतो स्वीपते ।।
ततो ते लं बातायते तन्यते तनो ते नेका स्वस्को कामा देशोमवति जावकिपदे [illegible] ।।
गुरी ।। ऽ सिंसंयोगा धाः गतौ स्मगता बिस्यस्व संयोगाऽ देनीका नस्य गुरोमयति ।।
पविपडि किति ला दा वाशि पाति तदे च सूर्ण्येते स्म मे स्वयरो स्म धंते किं पमाले तु पत
चोर्णे स्वपमेव प्रासिष्यति स्कवेः स्वगशोधे स्मात्यमे कते तेदविदु. नाकांत कर्म ग्र
शा संयोगा त्कोर्णे तेने बिवच्चोते सकर्म कतीकतीति चल त्रा प्पास्यो दाहयरां पच्यते मे
दनः स्वपमेव ।। प्रिदर्शिदानरो ।। भिद्यते काष्ठं स्वपमेव ।। सूत्र छेदे ने छद्यते केदारः स्व
पमेव हि कर्मक स्यो दाहयरां दुहि पचिरुचि भूचि सा सिधि कर्म भ्रजः ।। नीही कर्णाच
स्यस्व ने मंथ बिरोइलेवहदं ऽ स्तह [illegible] च कर्मणा के ।।

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पपच॥ पेचिव पेचिम आत्मनेपदेऽपितोप्यादिपूर्ववत् पेचे पेचाते पेचिरे पेचिषे पेचा
थे पेचिढ्वे पेचे पेचिवहे पेचिमहे॥ ट:॥ पूर्वसंबंधितो ऽन्यस्य कार्यस्याकारादेशो भवति
कुटोश्च॥ चकार ऋइति स्थिते धातोरन्नामितः॥ धातोरन्त्यभूतस्य नामिनो वृद्धिर्भ
वति णिति ञिति णिति चपरे चकार चकर्तु: चक्रु: चकर्थ चक्रथु: चक्र चकार चकर चकृव
चकृम। सप्तसु आत्मनेपदेऽपि चक्रे चक्राते चक्रिरे चकृषे चक्राथे चकृढ्वे
॥१६॥ मितो यत्तु सर्वोऽः नाम्यन्तात्धातो उत्तरस्य थवादेरिट् भवति कृसृभृसंबंधि नो ॥१६॥
न भवति चक्री ढे चक्रे चकृवहे चकृमहे स्रत्वं भूति तथा डुलादिर्वनने स्रवतीर्दीर्घः स
त॥ स्रास स्रासतुः स्रासुः स्रासिथ स्रासथुः स्रास स्रास स्रासिव स्रासिम॥ कास्ता दिप्रत्ययादाम
म॥ स्रूतः॥ कासादेर्धातोः प्रत्ययान्तस्य आदौ परे स्रामप्रत्ययो भवति सच कृ स्रूभूस्रस्तः प्र
योक्तव्यः स्रामोऽस्रत्नो तत्करोतिकान्तस्य कुत्सापां स्रकारे स्रतकार्यो दर्शः कासां च
के कासांचक्रतुः कासांचक्रु: कासांचकर्थ कासांचक्रथुः कासांचक्र कासांचकार कासांचकृव कासांचकृम: चकासांचकुः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

100

२३ ६२

शाबादेर्... स्वरेव भूय त भूयसः वभूवुः ॥ कृसादेर्णादेः ॥ कृस भद्रु ...
इत्येतस्मात्परस्य णादेर्णस्य यणादेरिडत्र भवति अन्यस्मात् भवतीति ...
भवति लुप्रभृ वेशो स्नु संयोगा आसोः असपु स्था ता नप्ता दिः पस्य स्व वि भस्य णा
देर्णस्य पुस्य ससम् हस्य इड् न भवति नमविधा अभूवम् ॥ अभूवं ... विवभ
विम वलि र्व समान भव पूर्वस्य हसादिः सेचः पूर्वस्य आदि ... सः ॥ शाब्यते अस्मो
उपधे ... तउपधायाः आतोरुपधाया अकारस्य ... वृद्धिर्भवति ॥ सिशाति च परे पपाच
णादिः कित्‌ णादि पि दकित्‌ भवति सोपः पंचौ कित्वं चास्य पचादी नामनादेशादी नामि
स्थिणादेस तिपूर्वस्य ओपो भवति अकारस्य केहसस्य कारः पेचे ... पेचुः पेचिथ ॥ नृः३
अनित्यासनांयपोया इड्भवति सेटः कित्वं चाव कव्यः कित्वादेः पूर्व ओपो पेचि
व ॥ पपक्थ ॥ पेचथुः ॥ पेच रात्‌ तमो यातिध कव्यः ॥ सनो बिकारेन उपधि पपाचे

ननम्‌

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

१७ [illegible] १७

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

जुहोपइत्यादि जागर्त्ति द्वाप्तोपे जागरांचकार जागरांचक्रतुः जागरांचक्रुः इत्या
दि ईक्षांचक्रे ईक्षांचक्राते ईक्षांचक्रिरे विदकाते विदांचकार अभिविदेव नगुराः वि
दांबभूव ईक्षदर्शी ते ईक्षांचक्रे ईक्षांचक्राते उह वितर्के उहांचक्रे प्रत्यपांनातेचिकी
र्षांचकार॥ वर्षी वर्षीते वर्षांबभूव वर्षांबभूवतुः वर्षांबभूवुः इत्यादि जि
ह्रेत्रि संख्या द्विजत्ता नोपांचे तोभ्यः सत्वदवते भी भी भये बिभयांचकार जुहवांचकार
बिभायबिभ्यतुः बिभ्युः बिभयिथ बिभेथ बिभ्यथुः बिभ्य बिभाय बिभय बिभ्यिव बिभ्यतेः
बिभ्यिम जुहाव जुहुवतुः जुहुवुः जुहविथ जुहोथ बिभयांचकार बभार बभ्र
तुः बभ्रुः इत्यादि॥ जिह्रयांचकार जिह्राय जिह्रियतुः जिह्रियुः जिह्रयिथ जि
ह्रेथ इत्यादि जिजपेसपरोक्षे जोगेजिः जिगाय जिग्यतुः जिग्युः जिगयिथ जिगेथ जि
ग्यथुः जिग्य जिगाय जिगय जिग्यिव जिग्यिम वेविः सापन्नो पोवत्स्यकालेपिरात्रादिर्व
र्तमानः॥ लुप्तो हं किल विलत्वापत्यपपरिभावरो विलेपिथ विलत्वपथ नाहं कं लिंग जगाम

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सारस्वते इकारोकारऋकारा भवंति ते च संप्रसारणसंज्ञा भवंति यस्य तस्य संप्रसार
णं ह्रस्वे ह्रस्वं दीर्घे च दीर्घः सवर्णो दीर्घः सह इज्याप इज्यते इष्टः इष्टवित् ...गताजादेः
यः इयज इजे इयाप इजिव इजिम आत्मनेपदे यपि इजे इजाते इजिरे इजिषे इयाथे इजिध्वे इजे इ
जिवहे इजिमहे वच परिभाषणे उवाच उवक्थ उच्यते उक्तः उवचिथ उवक्थ उवचथुः उच उवा
च उचिव उचिम वृञो वच रतनपि तावादौ परे वचे उचे उचाते उचिरे जिष्वप् शये
१८ :स्वापः सुष्वाप [illegible] सुषुपतुः सुषुपुः सुष्वपिथ सुष्वप्थ सुषुपथुः सुषुप सुष्वा १८
प सुष्वपिव सुषुपिम रनुग संप्रसादीनां पूर्वस्य वागागमो भवति तावादौ सति ग्र
हुः आदेशे आमो नौ न विरुत्वानिच पूर्वः आ सेवि एवं भग वा नवा सा ते व्या
सि ये ग्रंतः अति यू नाको लिंगविभक्ता तं ताविनीके तये त का चित ग्रं चं
आपो ग्रानवे ओविचो आनवेः वि वसते पुत्रे ते चि लेतेः यना के वि नया
नवं वि चिताय विधं ता ... वि वचा ... वि चक्रु पवते वि वा ममचि नमः तेः चिक्रु ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

आतोरा ॥ औ ॥ ऐकाय आवा तो प वो रावौ प्रवतिरिति पः दादौदानंत दादालाप पौपेपंतु
दापुनः तस्यो प्रीतंत पा स्याने घे नेः हित्या च नेपयो आतो अनपि अ विघसानो अ प्रैपो स्व २
पअसो ऽ जपित स्मिनकिति स्यये वरे अ कानस्य तो पोभयतिददतुः ददुः ददिथ
ददथुः ददद ददौ ददिव ददिम स्या तापइति स्थिते ता बादित्याद्विर्वचनं लघासा तव
पाः द्विर्वचने के तेप तुर्य तृप नेपरस्य तसा ऽ तत्र स्य पपाः सिद्धं तस्य स्थो ऽ लुप्यते तस्य
स्वपादेशाश्च ॥ तस्थो तस्थतुः तस्थुः तस्थिथ तस्थ तइ त्यादि ॥ पा पाने पो छः २
पपतुः पपुः पपिथ पपथु प पपुइत्यादि स्तातौ च पूर्वस्य हसादिः शेषः शो जपा देो पूर्वस्यादि
नहसः शिष्यंते स्न स्नो लुप्यंते सस्नौ सस्नतुः सस्नुः सस्निथ सस्न पुइ त्यादि घ्नु मसूतो न
छाव नुक्षवतुः नक्षवुः नक्षेज पशुदेव प्रासं जातिकती दाते पु अकाव स्वपिते तविशेष
राधेः पज रापइतिस्थिते दिर्वचनादि राजादे पूर्वस्य राजादो पज पजाक्षी तांग्य ता दी
तो पूर्वस्य संप्रसारणं इति पजाव स्यइकाव ः सकुपाप जनार्दतं जसां जे वेधा तां चवः संप्र
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मूपास्ता मूपासुः मूपाः मूपास्तं मूपास्त मूपालं मूपास्व मूपास्म श्री मान मू
पात श्रीवप्राता पास्तो पालं सरदो श्रीप्राप्दवान दादैनेदा देवाकानस्ये कामे
भवति धाक्ष दौ परे धे पातये पाल स्यैपा तपाददौ पाददौ परे ज्ञकानस्य इ
देशो भवति स्मास्मन्तपदे पिक्षषी क्ष षीपास्तां क्ष षीरताविह्नः नेमंगलं क्ष
१२ षीक्षक्षिपात क्षिपास्तां क्षिपास्तः क्षे सामंगलं क्षिपासः उः ज्ञकानस्याद्वि १२
सौवात्तिष्ठौ गुर्शो न भवति ... नेइत्यादौ गुर्शो भवति च्ले षीक्षवे
पास्ता ... षीरता ... षीक्ष ... षीपास्तां ... षीरता ... षीक्षाः ... षीस्व ... पा॰१
षीक्ष ... षीपस्ता षीनह ... षीनहि स्वस्त नेतु नामे नावस्तात्तितास्युः
... ला॰१
... तस्ति भाति ...
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham
वानो ... नावनानावनानो ॥

103

इति लिङ्लकारः ४

जग्माहे ...

जतङपादाते जङ्गांविडिरि ... सा ... जग्माह जग्म ...
पुः जग्म हजग्मह ... जग्मह ... नौ ॥ संधि ... नः
संधि ... ॥
न पिक्षौ ... भवति ...
बिभ्याध बिविधतुः बिविधुः पप्र ... पप्रच्छतुः पप्रच्छुः पप्रच्छिथ पपू
पपृच्छथुः पपृ पप्रच्छिव ... अ ... पा ...
हः मधेयम ... वचने ... ॥
... विषावेली ... हनि
संदिवं ... इतिन ... पा ... पा ...
पा ... पा ... ॥
सीमति ... ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

लट २ ७५

गानिछंति सस्तोर्थ नपिसंकामस्यन कामादिष्वौ प्रवलिसकायेपयेऽनपिविषयेव
सलिवासेव तस्पतिदहभस्नीकैरादादेर्ध्व: आदिजवानाभिस्पाकीनां घकारःकत्वे
घलं ग भन्स्यतिदुहपुपूर्णो वो न्यपतिउपधाया वधो: धातोऽपधायावृद्धो नामि
नोऽ१ शोा भवति घे तस्यतिविदि दृषैधी कैरी द्वे तस्पतिलुदव्यपने तो स्यति विधु नोप्पतिप
२० लि धो विधुगते विधु शास्त्रे गैसं चत्रपानाम त्रस मानं रूपं से तस्यति स्तोध्य
ते शुध शौच शोष्टो भूमिविधु पुराग गर्भ विमोचने सोप्पते रविम्म नेदास्पतिदा २०॥
स्यते श्रोता क स्पा गेहा स्पति हास्यते भजपाल नोप्यवतानपो: अकान स्यविते
तजमपप दार्ध: मो स्यति मो न्यपते भजपाल ने आम नेपद इस्यादि स्पनत्रि इति लट
शानि मभेक्षि पापा: इतिकमेतु॥ तश्चिद्वे गुरायादनि: ष्यतौ सं स्यादि बादि लकारः ४
पनः स्वपुष्प स्तौ भवति उभा सं जाग ति नैष्ठा नां पदि [illegible] मा [illegible]
विश्वन नवदा स भिन्नि मभविष्य [illegible] भविष्य [illegible] नयो भिवद [illegible] अयच ५ यो

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

१०४

लट ३१

जै२ ज१ [illegible]

भवितारः भवितासि भवितास्थः भवितास्थ भवितास्मि भवितास्वः भवितास्मः [illegible] भविता [illegible] कुमारस्य [illegible] नादत्तदात्तात् एकस्वराद् धातोश्चानुपाठे [illegible] दात्तात् नुपठितात् धातोरिटो भवति डुपचष् पाके पक्ता पक्तारौ पक्तारः पक्तासि पक्तासाथे पक्ताध्वे पक्ताहे पक्तास्वहे पक्तास्महे दाता धाता चेता नेता होता होतारौ होतारः इत्यादि कर्ता कर्तारौ इत्यादि [illegible] भविष्यति स्यप् धातोर्भविष्यति काले स्यप्रत्ययो भवति तिवादिषु परतः [illegible] संज्ञा [illegible] भविष्यति भविष्यतः भविष्यन्ति [illegible] धातोः ककारनकारयोः [illegible] भवति [illegible] पक्ष्यते पक्ष्येते पक्ष्यन्ते [illegible] पक्ष्ये पक्ष्यावहे पक्ष्यामहे [illegible] स्यप् हन्ते [illegible] अकारान्ता [illegible] स्यप इडागमो भवति हनिष्यति [illegible] हनिष्यतः हनिष्यन्ति करिष्यति करिष्यतः करिष्यन्ति गमिष्यति गमिष्यतः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

इति लृट्लकारः १

105

गें पिं छलि स्वंस्म मूलत् वर्त मानार्थ पापिवि मुक्तः स्म पोगे अनार्थतां
वो मन्त्या अह स्म तारीतः पपती स्म पृष्ठि छिरः शि पिं चपन स्म प दे पने
२१ सिद्धिं मव तिरि लाच्छ सिः अकार्यं इति स्थिते सेः स्सि व्दाम मर्पोः धि
स्यो पिंग गमो मय ति सो पिं द का वीत अकार्छं अकार्षुः अकार्ध्वं अका
र्ष अकार्षं अकार्ष अकार्ष्व अकार्ष्म हृञ् हरणे ऽपि पि डुपमगो : पर्णा
२१ वीत अद्य ता पा वा णि अनाहीत इत्यादि इट उतन स्य से यो को भवति २१
इटिघ्रे दीर्घ लं भ्रम गतौ भ्राम्यतीतन तंन भोरा फ्लल मृजारबेदितासौ [illegible] बेषि
कायु तिसापा अ पो मीतनवेष्व ताने अश्ववीत अय हीत हे तन सने अ
ह्रीत अग्रा गनी ता इन मृ... अवमीत य पजतौ ... शानाय
... तर्पि ... अजपीत यो पा
... ... मवति ... मनत ... मां

उ॰ ... ४ से १ ... ५

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

२ मा ति४

अडं स्यपद्या लुङ्घ्वि सिजः प्रत्यति अन हथा तो अहलि ध्य म्दवानवधु
भ्यन इत्यादि मा मा अम्भत्र मा अभैफाले सिच्लुपो भवति दिवादिपनः
इकारः इद इति चार्थाद्यः इं घासे ज्ञाभृ इति पाति भीपानां दिवादाघट अभ
तदूइ सिभूजते दादेधेपेष्य सेलोपदिषदे रवभास्थाइणामूपिवैभ्यः परस्य
से लोपो भवति अभूत् इति अभूतां अभूवं सिज्लोपे स्वरपदे वुगयं ते
भ्यः अभूवन् अभूः अभूतं अभूत। अभूवं अभूव अभूम अदात् स्थादिदः से
रा थां ना ता छिदः सोतवस्य अन् उस् भवति उस्यालोपः अदुः अदाः अदातं
अदात अदां अदाव अदाम अधात् स्थात् इत्यादि गौ इत्यादि गाः सिलोपो गाव लुडः
अगात् इत्यादि भेदः माशब्दप्रयोगे समासे । लोपो भवति धटे कापामा
घ दि छ धे च से लोपः मा घदि छम्भूरे साधुसंमा गाजभितमेदिवं स्नेपो

इति लुङ् लकारः २

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
१२ [illegible] २२
८६ [illegible]
वतो [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

औ॰ दादेनिः अधिहाधाग्रोगेहाकृविशनि सेतस्यानिकारः १

अकाषत अधक्षा अधुक्षा अदित अदिते अधिषातां अधिषत इ अधनेह
डोकागीसोः इ शेषातो वंगी ओदेशो भवति अधिपूर्वः अजगी ष्ठ अध्यैष अध्यैषातां अ
ध्यैषत अध्यैष्ठाः अ ष्ठाः स्मा वेतिप्रभ्यपादिके पूर्ववत्सम्बिः इडागमः अराविसं इ
तिस्यते इ ईटि दीर्घत्वं सेरलोपः अराविष्ट अराविष्ठां अराविषुः अरावीः अराविष्टं
अराविष्ट अराविषं अराविष्व अराविष्म मस्ताताभ्यस्तात पजस्य सेलोपो भवति
भसेपरे अपत्तः अपत्तां अपन्तत अ पत्स्याः अपाक्षीत अपाक्तां अपाक्षीत
अपा स्यायिदः अपाक्षुः दुवपबीजतं तुसनाते अवाप्सीत अवाप्तां अवाप्सुः व
लप्रपते अवाक्षीत मस्तातहोढः नाढ योर्धः षढुभिष्ठुः ढिढो लोपो दीर्घश्चवढेप
रे ढस्यलोपः सहिवहोरोदवर्णस्य अवोढ अवाक्षुः अवाक्षीः अवोढं अवोढ
अवाक्षं अवाक्ष्व अवाक्ष्म मस्तादिति किंरेचिष्ठ रेचि धातो रेधि

कां ८ औं

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

इत्यादि विशप्रवेशाते दशघनाजादीनां रितिषत्वं घटोक्से प्राविन्नत प्राविन्नतो प्रावि
न्नतेन इत्यादि कषविलेषरोप्रकन्नत प्रधोन्नतो प्रक्षो न्नतेन इत्यादि ० इतिलुङ् समाप्त
इति षत्वं सकार्य ० अथ भवकर्मिरोरेतेप्रत्यपानि-रूप्यते तत्राभ्युधिककर्मिशाभूसंज्ञापां
आसोरांदा विस्याल्पं ० हृस्वः अः सानांजवचपा इतिवकारः इति निपमाद्यत्न नेपदानियो
ज्ञते एषमनुलभूवेदेवदतेन अनुबभूवाते अनुबभूविरे अनुबभूविषे अनुबभूवाथे
२३ अनुबभूविद्वे नामिको लतुर्घोषोऽ: अनुबभूवे अनुबभूविवहे अनुबभूविमहे तनुविस्ता २३
रे ते नेमज ज्ञाने मे ने मन्नाते मेनिरे मेनिषे इत्यादि दा दाने ददे ददाते ददिरे ददिषे स्नासौ
वेमष्टु हंसविश्व मायाजै मे ... मनूष संध्य न्नारामाहिश्च हृस्वः पूर्वस्य हृस्वादिः शषः ज
स्वा जाताजोजात... जानि ... मन्नि ... मविपो मविमते आशाद्वेमनियमवि
तांस्वमजानानां ... ... तामश्वेहनत्नवहर

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

107

जा।२

रोरीभ्यसेरदृशादीनां भ्यसेपरे ईरो भवति अद्राक्षीत अद्राष्टां अद्राक्षुः अद्राक्षीः अद्रा
ष्ट अद्राक्षं अद्राक्ष्व अद्राक्ष्म स्पृशादीनां वा स्पृश स्पर्शने अस्प्राक्षीत अस्प्राष्टां
अस्प्राक्षुः मृश आमर्शने अम्राक्षीत अम्राष्टां अम्राक्षुः इत्यादि भिदिर् विदारणे इरितो
रनिटो उपधाया गुणो न भवति अभिदत अभिदतां अभिदन् इत्यादि वृतु वर्तने अव
र्तिष्ट अवर्तिषातां अवर्तिषत इत्यादि गमॢ सृपॢ गतौ ऌकार इति पुष्यादौ सर्वस्माल्लि
त पुषादेर्ङः लितो धातोः पुषादेर्ङप्रत्ययो भवति दिवादौ परे ङकारो गुणप्रतिषेधार्थः से
रपवादः अगमत अगमतां अगमन् असृपत असृपतां असृपन् पुष पुष्टौ अपुषत अ
पुषतां अपुषन् घुषिर् शुचिर् दीप्तौ अशुचत अशुचतां अशुचन् इत्यादि वच परिभाषणे
वचेरुमागमो वक्तव्यः अवोचत अवोचतां अवोचन् हलन्तात्तस्य ...
...दिवादिपरः सकप्रत्ययो भवति ...
रो आदिश्या नामिति ... अधुक्षत अधुक्षतां अधुक्षन् ...
सकाराननाम् २

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

न्यमतिषाथां देच सर्लोपः अन्यमाविढं अ मविढं अ न्यमाविध्वं अन्यमवि
ध्वं अन्यमाविषि अन्यमविषि अन्यमाविष्महि अन्य मविष्महि अ
न्यमाविषमहि अन्यमविषमहि डुकृञ् करणे अकारि अकारिषातां अकारिषत इत्या
दि। निराङ्पूर्वः निराकारि निराकारिषातां निराकारिषत इत्यादि हृञ् हरणे अ
हारि इत्यादि अपाचि अपचिषातां अपचिषत इत्यादि भूजपालनाभ्यवहारयोः अभोजि
२४ अभोजिषातां अभोजिषत इत्यादि ष्ठा गतिनिवृत्तौ आकारान्त उपसर्गपदार्थः निराङ्पूर्वः निरा २४
धायि निराधायिषातां निराधायिषत इत्यादि पदगतौ निष्ठा उपत्त इत्यादि पदगतौ॥
अकार उच्चारणार्थः इत्यादि घृत्स पादि घृत्सपतां घृत्सत्सत प्रत्सपश्याः प्रत्सपतां
ध्वं घृत्सपध्वं घृत्सपत्ति घृत्सपत्स्वहि घृत्सपत्स्महि मराशादेः अभाणि अभाणिषातां अ
भाणिषत वद्यमादिनावसे अवाचि अवचिषातां अवचिषत इत्यादि तो दीर्घः अधा
नि अधानिषातां अधानिषत इत्यादि इति पञ्चमी अदर्शि अदर्शिषातां अदर्शिषत इत्यादि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

बदधातोः प्रयोगः॥ अवादि अवादिषातां अवादिषत

108

धे २

आसिषिति छादयः शित्वाद्दधिः सुखमनुभाविषिष्ठ भावेनभवता अनुभाविषीष्ट अनु
भाविषीयास्तां अनुभाविषीरन् अनुभाविषीष्ठाः अनुभाविषीयास्थां अनुभाविषि
अनुभाविषीय अनुभाविषीवहि अनुभाविषीमहि शिलाभावे अनुभविषीष्ट
इत्यत्र शापि षीष्ट शिलाभावे शपि षीष्ट देवदत्तेन दुःखमनुभविषीष्ट कारिषीष्ट कारिषीयास्तां
कारिषीरन् शिलाभावे कृषीष्ट स्याल्तृते तादयः अनुभाविता अनुभावितारौ अनुभावितारः
विताः शिलाभावे अनुभविता अनुभवितारौ अनुभवितारः इत्यादि स्यापमविष्यते
इत्यादि अनुभविष्यते देवदत्तेन स्वपदिवादिभ्यो ब्रवेप अविष्यत त्वपात्ते पच शापि ष्यते
अनुभवते अभावि अभावि... विष्यत इत्यादि कर्तरि .... कर्तरि ......
भावे कर्मणि च इत्यादि प्रत्ययो भवति सेनपवादः ... . लोपस्तनः इत्यादिः
... योगे च ... ... भवति अ भावि भावे भवता ... ... आशिष्य ...
अन्वभावि ... ... अन्वभाविषत अन्वभविषत अन्वभाविष्ठाः अन्वभाविषाथां अ
घा ९ ...

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अन्वभाविष्ठाः

पुनःपुनर्वा ४

हलादेर्धातोरनिशादेर्यङ्पूर्वरूपो भवति तस्मिन यातोर्द्विर्वचनं यङि पहि परे पूर्वस्य
१०९ नामिनो गुणो भवति बोभूइति स्थिते सन्नाद्यन्ता धातवः यङादि प्रत्ययान्ताः धातुसंज्ञ
को भवति धातु वादि तिबादयः यङन्तात्मनेपदं प्रयोक्तव्यमिति देहरूपा
नस्योपः प्रत्ययं तिबादौ न भवतीति बोभूयते बोभूयेते बोभूयन्ते बोभूयसे बोभूयेथे
बोभूयध्वे बोभूये बोभूयावहे बोभूयामहे भुजपाल नामावहारयोः बोभूयते २५
२५ बोभूयेतां बोभूयन्तां बोभूयस्व बोभूयेथां बोभूयध्वं बोभूयै बोभूयावहै बोभूयामहै
बोभूयत इत्यादि भवतेर्यङि अबोभूयत अबोभूयेतां अबोभूयन्त अबोभूयथाः अबोभूयेथां
अबोभूयध्वं अबोभूये अबोभूयावहि अबोभूयामहि अनादनपोहुपते बिन्नाते जो६
बोभूयते यङ् नाम नुगस्याकारस्याकारादेशो भवति तुप यङ्पाके भवतीति पापच्यते पाप ८४
च्येते पापच्यन्ते इत्यादि पच पाके पापच्यते पापच्येते पापच्यन्ते इत्यादि स

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मानवत्वादि ... स्वनादः परादिः स्यत्रादेर्नो द्वितीयोऽवयोऽद्वि

इति यङ् १ म १

ग्रहोऽपादाने इटो ग्रहां ग्रहादीनामिटो दीर्घो भवति न शिति अग्राहि अग्राहि अग्राहिषा
तां अग्रहिषातां अग्राहिषत अग्रहिषत इत्यादि दीप्यादौ निरपूर्वः निरराणि निरराणि
पु षातां निरराणिषत आतो युक् अकारान्त [illegible] भवति ञ्णिति च परे डुदाञ् दा
ने अदापि अदापि षातां अदापिषत इत्यादि [illegible] देवेः अदि षातां अदिषत इटो भावे णि
णिभावे पापाने अपापि अपापि षातां अपापिषत इत्यादि ग्लासौ चे अग्लापि अग्लापि षातां
अग्लापिषत इत्यादि डुधाञ् धारणपोषणयोः नि पूर्वः निधापि निधापिषातां निधापिष
त इत्यादि पदगतौ पदादेः कर्त्तर्यथे भावकर्मणः उत्पूर्वः उदपादि उदपत्सातां उदपत्सत इत्य
५४ दि संप्रतापवरो अयोधि अयोधिषातां अयोधिषत इत्यादि भंजने अकार उच्चारणा
र्थः अबोधि अबोधिषातां अबोधिषत जनी प्रादुर्भावे अजनि अजनिषातां अज
निषत इत्यादि जनवध्योरनवधिः अवधि अवधिषातां हनो वधो लिङि लुङि च
इति भावकर्मणोः प्रक्रिया ॥ इदानीं प्रत्ययान्तेभ्यो लिवादयो ज्ञेयन्ते आर्तिह्रापि हसादेर्णः हिस्व

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

स्पते वार्त्ताख्यचितं वं भुभ्रं सघंसकं सभ्रं सपत पदस्वं दांपद्धि: पूर्वस्य नि गेगगमो भव
110 तिपदगलोइ दानिं सप तीपच तेम्रंसघंतलभ्रंसभ्रज: पतमेदनी ब्रम्पतेश तीभ्रस्य तेव
नी मपपते वंभु धुंव तेव तीव भ्पते कंसुगति सा सत दो: व तो कस्पते इस्पा दिन्नतोभ
रि: मशा रांतस्मयी या देशाभयलि पडि: स ति पश्चाद्धि र्वेचनं क्रि क्रि इतिस्थित तेपू
२१ वंस्यहसादि: सेभ: छलं गगा: पेइत्ति दीर्घ: स्वतिशपेन क शे तीतिचे किं पते हदज़ा
यां मैहिय़ते ध्रजवरों पेश्रीपते मउघ्रता स्तागे मेमीपते इदा मदा लेदा दीरीति २६
रेवारे वाते पश्चादिर्वेच तं दे दी पते पापा लें पे मीपते इ भाम्र वाराखा पो घसापो: दे
श्रीपते ॐ इति श्री पुकिवाममंता ॐ श्रपपरलु गतं प्रक्रिपा निलुप्पते वा स्पत्र
गगलुवतंते भ्रम मेसुलपु स्पप्रविजा सं पो गेपि भ्र लवा मवति पउलवि सति पिति स्मि
वाइला ते वल म: भ्रुनपाल जेवो भ्रजीतिर्दु वंस्वा चो बुदा ते भ्रु नचि इस्पा त इ मा इत ल
स्पपडे न [illegible] मावरे पापक्षते इस्पादौ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

इत्तोर्विर्भवति अगतो व्यापते ऋ अस्य सोजने व्यसास्यते अगतोगरोगासंयोगा
योरिति गुराः अराधिते अमजपानु कुजे मातस्य जपादी जो पूर्वस्य नुगागमो भव
ति यङि सति जंगम्यते तुर्गः भूमु चलने बंभ्रम्यते हतहिं सागत्योः जेहन्यते जं बुन्ये
ते जेघ्न्यते ओदिदिशित्न आदेशो र्दिस्यते आदेर्धी नाम कारो राम्आदेशे नस्वारः किदिस्य
ते भंसाभावे नुस्वा राभाव पुसंगा तेयि त्नवा जेघ्नियते जेच न्येते जेघ्नीयते इत्यादि
तेते हिंसायां ध्रीभावेवा वतोव्य: जेध्रीयते जेध्रीयेते जेध्रीयंते इत्यादि जपजभदह
नापावाचि जंजप्यते जेजप्यते दंदहसमीकररोदं दह्यते पमनेघुनेजोयते दंस
दंसते नोलोपः धातो उपधायाभूतस्य लोपो भवति ङिति तेसपरे दंदस्यते पसफा
जो त्राम दंते धेभ्यते मत्तोदंसीते नूमे इत्यादि विगड जस्य अनुपधस्य धातोयाः
सति फर्वस्य रीगागमो भवति नर्तीगाने विद्धेपेनरी नृत्यते मनन: वरीवृत्यते वरीवृ

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अचमिकीत१

अवलकरीते अवचीकरीते अच ॥ कः अवरिकः अवरीकः वर्चोर्ति जीरवर्ति वरीवर्ति व र्वतः व
रिवृतः वरीतः वर्वर्पात वरिवृपात वरीवृपात वर्वर्त्त वरिवर्त्त वरीवर्त्त अवर्वर्त्त अवरिव
र्त अवरीवर्त्त ॥ इति पङ्लुगंतप्रक्रिया ॥ कर्तृकर्मणोरुपमानादाचारे ऽर्थे क्यङ्प्रत्य
यो भवति क्यप्रकरणे पडविधानात् हि लोपेन इत्यायती तिश्येनायते काकः परीतितइया
चरतीति पशिङ्नायते अरविः पङि सति सलोपो भवति अप्सरायते आचरतीति अप्सरा
29 पते कुरूपाज्ञो जडवाचर तीति ओजायते दुर्वरः अजाङ्वाचरतीति अजायते 29
से सौः पयस्यत् लिङा पयायमायते पयस्यते वा तओ माला रूपमा नायः उपमानाद
चारे ऽर्थे यप्रत्ययो भवति कृष्णा नस्वङ्कावः पूजीयति शिष्यमुपाध्यायः प्रासादीयति कु
ट्यां भिक्षुः ॥ इति नामधातुप्रक्रिया ॥ इच्छायामात्मनः सः धातोरिच्छायामर्थे सप्रत्य
यो भवति धातोश्च द्वित्वं भवति पिपठिषति बुभूषति कृष्णमनुबुभूषति अपबुभूषति कमे
ऽभ्यपार ...आ...मनु...जभूव

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

स्वनाङन्तरस्य पक्षे लोपः बोभुज्यते इत्यादि पङ्लुगन्तं परस्मैपदं च हलादि ... पापची
ति पापक्ति पापक्तः पापचति पापचीषि पापक्षि पापक्थः पापक्थ पापचीमि पापच
च्मि पापच्वः पापच्मः वद व्यक्तायां वाचि अतिशापे ... वावदीति वावत्ति वटचे
ष्टायां संजाघटीति संजाघट्टि संजाघटः संजाघटति संजाघटीषि इत्यादि ॥ भू सत्ता
यां संबोभवीति संबोभोति संबोभूतः संबोभवति संबोभवीषि संबोभोषि संबोभूथः
संबोभूथ संबोभवीमि संबोभोमि संबोभूवः संबोभूमः ... तानां ... नांच
कर्वस्य ... अतिशये नैरन्तर्ये चर्करीति चरिकरीति चरीकरीति चर्कर्ति च
रिकर्ति चरीकर्ति चर्कृतः चरिकृतः चरीकृतः चर्क्रति चरिक्रति चरीक्रति चर्करीषि च
रिकरीषि चरीकरीषि चर्कृथः चरिकृथः चरीकृथः चर्कृथ चरिकृथ चरीकृथ चर्करीमि चरि
करीमि चरीकरीमि चर्कर्मि चरिकर्मि चरीकर्मि चर्कृवः चरिकृवः चरीकृवः च
र्कृमः चरिकृमः चरीकृमः ... चर्करीतु चरिकरीतु चरीकरीतु ... चर्कर्तु चरिकर्तु चरीकर्तु

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सा० नाम

112

रस्याचलोपो भवतिस्मिन्नपि विष्णपे चिकीर्ष्यते देवदत्तेन ह्रस्वे दादीनां स्वरस्य

साकेशोभयत्तिपर्वस्य चलोपः सलोऽ नपिइति सकारस्य तकारः दित्स्यते पुमित्स्य

तेकुलेभवष्णा पौइइकारौ नाभौवीवकारस्या कारस्यात्मनेपदार्थः स्वसेचपाभ

सा जो स्वोरादो आ तोः सकार ऊकार यो लोपो भवति लिप्स्यते रभराभस्य

२८ प्स्यते पातो दिप सोर्ध तो ओइहागमो भवति पर नेपिपत्साति पिपतिषति स्ना २८

ध्याधी स्नातजोनपोस्नापनो तेर्धी तो स्वरस्य ईभवतिओ भ्रसणेजनने भ्रेशनना

पौ वाम्रसे ओतोइ छाया मर्पे सम्र स्य यो भवति श्रवणाय तिसि सतासि सपामि स्नु

शीधुतिष्यादि भवति ष्णादि यक्षार्थे स्व स्यपो भवति हि ष्ण ष्ण गोप नकु स्नज

ष्णते कि रोगा घ न घ ते भ व ति कि सा ति स्वा न व वे घः। तिजविमाने

मेमा पं मन्ति भुज्ञे मानं विचारे लोपसे मनादी नां पूर्वस्य दीर्घो भवति निमांसते

नधति ना मार्गे बाधे लोपो भवति मीमांसते दीर्घनानां तं जने दीर्घ

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

बुभूषात बुभूषिता बुभूषति अबुभूषिष्यत अबुभूषीत वुःसे ड इत्यत्र श्ववृत्त सत्रे
डु वर्णान्ता व्यह इग्यहोश्च से परे इडागमो भवति नान्तिष्ठि से ई उ [illegible] ति से परे गुणो न भ
वति से दीर्घः से परे श्वाविति इकारान्ते दीर्घो भवति चिभ [illegible] नेचिषति चिकीषति जि जये स
परो ज्ञपो जैगि [illegible] जेतुमिच्छति जिगीषति पुनिवृ [illegible] पवितुमिच्छति पपूषति नेतुमिच्छति
ग हृषति हृ शब्दे नेतुमिच्छति उरूषति पः से इश्च अस्य पः पूर्वस्या कारस्ये से कारो भवल्
ति से परे गुणाः प्रकृत्यर्थो [illegible] इत्यत्रस्यात अन्यत्र प्रकृत्यर्थे गुणाः प्रधानभूतः प्रत्ययार्थः
फ छे न पिप [illegible] तीति पिपक्षति पिपासति जव पोहाने [illegible] त्यन्नति जि [illegible] नाति हन
हि सांगत्योः हन्तेः सो सेरीत हन्तेर्जितो सकारो नी भवति णात्यावृ [illegible] न कारस्यानुस्वा
रः जिघांसति अत इरञ्जकारस्यभ भवति [illegible] ति परे अस्ता [illegible] कोपं विधि: [illegible] इति
दीर्घः चिकीर्षति पिपरिजिहीर्षति [illegible] तरता पोः अत इत्यति [illegible] पत: पकारस्या

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible] नारास्येत्या तितीर्षति [illegible]

मतप्रजापामहतः करोः तीतिमहपतितुपतिकुरुपतिपुष्पादेनः पुष्पादेभीतोऽत्र
॥३ मानस्परक्तानोभवतिपपुंकोत्तातीतिप्रपपतिरुः इतिलानयानप्रक्रियाः यातो
प्रैतोप्रेयप कः यापानेऽष्टौ भीप्रस्पपोभवतिकुर्वतं [illegible] तिकारपतिपाप
पतिशाद्यनुशिक्षोमाशपति हं तेर्धत हं तेर्भीतोदादेशोभवंति जितीतिवपरेषु
२० तपतिघादेशातशादेभीतोशदादेशोभवतिसद्भुमानानेसातपतिरातोमैपकर्म
तोविंत्यस्यमेकारांतस्य च ओपरेपगागमोभवतिदापयति स्यापयति ज्ञा २०
हेतु पयति अर्पयति सोऽतनेकरतो सेप्रपति [illegible] स्यर्पापं वाजिकापयति इदेदे
परे [illegible] इत्यादि [illegible] कारोकादेशो [illegible] अर्थापयते व्यापयति
भमापयांलीगडेनामाखि [illegible] नामाकारोभवति ओपरे स्नापय
ति ज्ञापयति [illegible] तिसापयति [illegible] पनेप्रीणापयति॥
[illegible] पादेकपापयति

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सते गोपायते आयः गुपादिभ्यश्च स्वार्थे आयप्रत्ययो भवति स्वार्थे गुपर क्षरो गो
पायति धूपायति तापे धूपायति विच्छ् गतौ विच्छायति पन स्तौ पनायति पण स्तौ च पणाय
पणायते ॥ समंतप्रत्ययः ॥ नाम्नो वाम्यनाम्नो इच्छायामर्थे यप्रत्ययो भवति तस्
सप्ति यो गे चाकारस्य ईकारादेशो भवति अत्र आत्मन इच्छा मे ययिनो नामये अ्यवश्चात्मनः पु
त्र मिच्छति पुत्रीयति आत्मनः धनमिच्छति धनीयति उदकस्यो दन्नादेशः उदन्य
ति काम्यु मयि छियि पुत्र मात्मन इच्छति करोयः करोत्यर्थे यप्रत्ययो भवति कंडादि
भ्यश्च क ... तो ति कंडूयति भक्ष्यति वपस्य ति ति डिति करोतो नामो जीवीप्रत्ययो भ
वति करोत्यर्थे सखा नाड्यादिर्लोपः अकार [illegible] यप्रत्ययः ॥ सखायत्ति
ति आतपनोति वादयः अवचेच्छायामत उपधायाम्बा तोउपधापाकारस्य वृद्धि
ति शीतिच परे मितां ह्रस्वः आतो पा टिमित्ये वपुष्ठितानां हस्वो भवति गोरीति ते गु
णाः श्वर्णः क्नो ते ति बढपति पटं कंतो नी ति पटपति ॥ पाठपति

ल४ [illegible] २८ [illegible] स्याद

यंतां २

वौ२ जौ चरेऽ[illegible]तत्ते ऋतस्य प्रसानतोहोऽः तप्तोर्द्धः ष्टुभिष्टुः व्हेन्तः व्हेङीतो त्वपृ स्वपोभवे [illegible] चंपावरा
[illegible] तते [illegible] संप्रसा [illegible] ठि ठो लोपो [illegible] रस्य [illegible] कारेपरेत्तो पाभवति पूर्वस्य वदी वैः दि
सां [illegible] ष्वतः संप्रसा [illegible] ठि ठोलोपो [illegible] रस्य [illegible] प्राप्तो जटते [illegible] स्याम
[illegible] वनादेः परः [illegible] लोपो भवति वहप्राप्तो [illegible] जटते [illegible]
चो४ र्छौ [illegible] जौ त्वः कपोर्द्धातोत्र कारस्य [illegible] कारादेशो भवति धातोः [illegible] चपूर्वस्य [illegible] दिः दोषः
इतिपकारलोपः [illegible] इति [illegible] इति [illegible] कारः [illegible] हस्व डपधा
[illegible] डप [illegible] रिति गुरोः [illegible] क्ल्पते [illegible] कृपत [illegible] पा
पाइति इकारः [illegible] दृशादेः पश्यादिः दृशादेर्धातोः पश्यादिरादेशो भवति [illegible] वादेधि 30
30 देशा [illegible] र्दिश्यते [illegible] भवतीति [illegible] पतेरपाइत्यस्यापि वादेशः पिबति
[illegible] शब्दादिन संयोगयोः [illegible] स्यधमादेशः संधमति
[illegible] पादाने [illegible] तिष्ठादेशः तिष्ठति दाणदते [illegible] यच्छादेशः [illegible] ति [illegible] इति [illegible]
लो [illegible] स्याइत्यस्य [illegible] देशः [illegible] गतो [illegible] धावादेशः धावति [illegible]
देशः [illegible] ति [illegible] शीयादेशः शीयते [illegible]
तेशीयादेशः शीयति [illegible] ति [illegible] इति यम [illegible] डपव
गमादी [illegible] मनेतिपठति [illegible]

[illegible] 114 जिघ्रादेशः जिघ्रति [illegible] ५

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

भुत्र१ जलार त्रि३ पै४ पूर्वस्मा२ मो६

ष स्थेकपनेभुनयति जानाधं तेर्वा ह्रस्वः स्यात्परतिवेऽ दीर्घता च यतत्वास्तोपरे इत्वसोमा
व ऽ तेइत्यादेशो भवति इकारस्य दीर्घता घ नाष घत्वोपः स्याप वोघ नेसी
प्सति स्यापप ह्रयिष्ठति से स्यापयिपति से स्यापयति इति मत पत्री या
सुरादेस्त्वार्थे णौ चुरादेर्गणस्यों धातोर्णिपुत्वपो भवति चुरस्तपे ओरपति पल
न स्तेशो पालपति चिती संज्ञाने चेतपति चिति स्मृत्यां चिन्तपति इदितो नुम् इदितो
धातो नुमागमो भवति आकारान्त वर्णात्मनेपदं चोरपते ऽ रेऽ छिद्य यंता
मो६ पूतमात्रे ऽ पं ऽ पुत्वपो भवति दिआदि परःवा होर्दिवेच नेत्वपवादः ऽ का
नो गणात्पतिपध्वार्थः स्तुभुस्तदृ इति मे ऽ सितिसीति च परे जपो भवति ल घोर्दीर्घः अ ङि सति
पूर्वस्य लघो दीर्घो भवति अचूचुरत् अचूचुरतां अचूचुरन् अ ऽ इति अ ङि लघो ह्रस्वो उपधा
या अ ङि सति पूर्वस्य वर्णितो अ काकस्य इकारो भवति लघोपरे उपधायां चह्रस्वः अपीपच
त अपीपचतप ऽ पीपदन अ जीजनत अजीघटतन अतः अकारे तोपक्रप त्वपो भवति
टो लागतो ह्रस्व इति औकारस्यो कारादेशो भवति अड टोकत अडिसति पूर्वस्य ह्रस्व

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अभूचुनत्म अ१

के पं क्रमस्तो पसर्गस्य दीर्घ्वलाचसंक्रमति आङ्‌ पर्यपेभ्योरमपंन मक्रीडायां विरमति
आरमति परिरमति उपरमति ॥ वृध्यः स्तेस्मयोर्वा ॥ वृतु वृधु शृधु स्यंदु कृपेस्यो परपो वाद्दपव स्मै
पदं भवति इत्येके इति वर्त्स्यति वर्तिष्यते विवृत्सति विवर्तिषते वृद्धवृधो वर्त्स्यति व
र्धिष्यते स्रप्तुषाद्दकुलापां सर्त्स्यति सर्धिष्यते सिसृत्सति सिसर्धिष्यते स्यदुप्रस्र
वणे स्पंत्स्यति स्यंदिष्यते सिस्यंत्सति सिस्यंदिषते मयादेमेन मयादेगराात मभा
३१ गमोमवति स्वला दो विषये मवृत्सौ वा तात्मं वतति विद्ल्जामे विंदति [redacted] ३१
[redacted] ंपं [redacted] विदज्ञाने विंते वि
दविचारणे विघते विदसत्तापां लाभे विंदति विंदते इदितः इदितो धातो मुमागमो भ
वति टुनदि संवृद्धौ इदित्वात नुम नंदति वदि [illegible] वादन स्तुत्योः वंदति वंदते मकि
संकोपांभं कते समादीनां दीर्घः समादीनां धातूनां पूर्वस्य दीर्घो भवति दम समनापाम

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

११५

वे४ति

ओं जनी प्रादुर्भावे जा [illegible] ओष नेआत्मनेपदे जादेशो भवति दिवादेः [illegible] जायते नास्यादेः जा जा
ति श्रुवः श्रृ आदेशः श्रुश्रुवतो तुदः श्रृणोति प्वादेः ह्रस्वः प्लवते ऽस्मादेशाकोपरे ह्रस्वो भवति
पुनाति विसप्रवेशाते तिविशादेः जिभिमादेर्धा ते आत्मनेपदं जिविसते जिजपे उप [illegible] पाल यो
विजयते पराजयते प्रत्यवतिष्ठते संपस्यते ओप [illegible] संपश्यते आङो [illegible] स्वविहरतो
आदत्ते क्रीडो ऽनुसंपरिभ्यश्चात्मनेपदे [illegible] विहरतो अनुक्रीडते परिक्रीडते संक्रीडते सम
वोप्रोपविभ्यः स्थः आत्मनेपदं तिष्ठते अवतिष्ठते प्रतिष्ठते आङो यमहनौ अकर्मकौ उपसर्गात्स
ो यमहनौ आत्मनेपदिनौ भवतः आयच्छते आहते स्वांगं उद्विभ्यां तपः [illegible]
आत्मनेपदं भवति उत्तपते वितपते उदः स्वर स्यागे उच्चरते समो गम्यृच्छिप्रच्छि [illegible] सम्
संचरते व्यवपरिभ्यः [illegible] आत्मनेपदं भवति [illegible] विक्री [illegible] णीते अवक्रीणीते लभ उपलंभे
उपालंभे प्रत्यसघपकरणेषु आत्मनेपदं भवति शपते सा [illegible] णां ला ना मा न क्रूति हा
[illegible] हिंसादेशात् ह्मुवते दिहन्ते विवदते वादितः [illegible] भवति [illegible] पादवि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

क्रौ ३ [illegible] क्रौ १

इडिसोऽथ इडस्व इऽस्मृतौ इडे इरा ले इडे ते इडिसे इध्ये इडुधे इडे इडिवहे इडिमहे इससा
मर्थे इठे इशाते इशते अवो बाला उकारस्यौ कारो भवति पिति ति कादौ गस्गः स्तम्भः
ईर्ष्या नैति न विधीति रास्तु तौ नौ सीति न विति स्तोति स्तवीति लोपस्तन्वा तानो श्नु
32 दातानां तनादीनां भवस्य ओपो भवति किङिति भसे परे हलि तलः श्नुं ति गमां स्वरे
इत्यकारलोपः नमः नमप्रत्ययात्परस्य नो जो णो भवति भं जो मा मर्दनेम
अभिः भेभः भंभं ति श्रुविरं जदेश स्वं जभं जो न जति रजतः दशाति विदो ना वनेभ
सोसारस्य नां इत्यादीनां सावादिर्विदः उत्तरे षां इत्यादीनां नवादिर्जवको बाभ
प्राति वेदं विते: विवदुः वेथ विदथुः विविद वेद विद्व विद्म वेति वितः विदंति वितेर 32
तुद विंदते संविंदते भसा विदे विद्धि स्याविदः इत्यनन्तसम्प्र विदुः दसः इति विति वि
कल्येन सलं स्रुवे: श्रुविदत श्रुविदत सवेद सवेद सवेद सवेद सवेद ...लीसः संति

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ष्यति दाष्यति म्राष्यति तमु ग्लानौ ताम्यति इत्यत्र शमामष्टानां दीर्घः श्यनि [illegible]ः दूषयति मदी हर्षे मा

प २ द्यति घोः परस्मैपदे धातोरेकाचस्त्योपोमवति दोषे णौ तेपतिपो तम्यु शोषतीति शोत

नुकरणोपपतिपो गुरुपधर्स्य इत्यनवस्य उर्मेपतिकितिपरे मऽपूरा त्वाशेगमूर्धतिसमपनो

ज्ञादेशे शीघ्रतेपरस्मैपदं ज्ञासि[illegible] र्द ते मा नादिभ्यः चनेर्षुम्या त्मनेपदं भवतिम्र

न्येपरस्मैपदं भवतीति इदादेशे दौरे णो चनुशीति इदि गशानां मध्ये ह का वल सादेः पूर्वस्य

ऽभवतिंरदात्येपदस्यादपोलेऽभवति इदिरस्र स्तुविभीचने तेदितिःदितः स्वसप्राप्

ने त्वसिति स्रनप्राप्तानेप्राप्तितिस्यपितिर्जन्मभवतीतिसनयोः जल्पितिमन्नादेरते

स्नेडसजन्मतिवक्तास्मृति जाग्रति जागतः जाग्रति दधि द्रुतेतिरिताशेवस्यदविद्रुते

यालोरीकाणोमवतिइतिर्द्देपरे स्रकास्मोपसर्गेतिसेपयेरितावोपध्वदविद्रुतिदधि

डितःमासेर्सिःमासेरजपवजपाभाजायस्येकोमवतिइतिरवेपरेशासितिशिष्टःशास्ति

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

स नलेस्याः र्द्धः फुलं व्यावष्ठे व्यावछाते व्याच्छते रयवौं सेकत्वं वत्वे जं व्यावे छ
नृ धप वे व्यावं शावे व्याय न्हे व्याच न्व हे व्याय न्मे हे दिपि सम्यतः सिपिवा च जा स्दी
मे चे लिति मक सः व व्या मति व्याप्र कप ने व्या रव्या ति व्या रव्या तः व्यारवं पति म जु प श्व भै
म जर्धा नौपति प रेवं भिर्भवति म जेर्दु छिः पिति रमा र्लि मरुः मष मा जिम म मेः म जः प
३३ ति ग्राहिं मरः म जेति म त्वा त मा र्छु म छा दा म छां म जेत स्राम छं स्रा म ई स्र म छा म म
हु लिशं गुराः नी जादी मां पूर्वस्य ग्रतो भवति तिकि स्तति नि तिं न सौ च दो व सा पोः जु हो ३३
स्प वं नि रौ ते कि नि रौ नि सः नि रौ नि जं ति नि रौ तो छि नि रौ नि स्पः नि रौ नि
स्पः नि रौ नि सेः नि रौ नि स्मः नि रौ ने कु नि रौ नि ता ष नि रौ नि कां नि रौ नि म
नि रौ नि जि व नि रौ नि स नि रौ नि जा ति नि रौ नि जा व नि रौ नि जा म स्रा स नेपदे म
ने ने ने स्र व ने नि जा ते स्र व ने नि ने स्र ब ते नि स्र व ने नि जीत स्र ज ते नि तां स्र वं ने
वे न ल षे षे लि षे वि सः षे वि मं नि षे षे ता षे वि म तां षे षे जुः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible]: अत्ते सजातस्य अत्तोपो मज्ञि सिपिपरे अलि अस्यः अस्य अस्मिः अस्वः अस्मः

अस्तु अस्ता दा अस्तां अस्त अस्मानि अस्ताव अस्ताम अस्तोमोट अस्तेपरपोर्दिपसिपोदि जगमे

[illegible] लि अस्ति ता स्तां अस्त न त हिं सा पां त हे मे इ ट पिति चतुर्थु तं तं नै मम व तितिइ ट चेतुर्थ विति पवे

[illegible] टि तं ठः तं हि ति त तोब्जि त टः त ट त तोब्जि तः ज्यैः त जः तत्तोपु त टा डा त ठं त ट तं ता शा ४

[illegible] लि त ता ता त ता ता म अत्ते ट अत्र ताटां अत्र तहं त अत्र तोट अत्र तं ट अत्र त ट अत्र ता तं अत्र त अत्र

८१ [illegible] ने होटः त शो र्थः भु मिः जहो भि सा मिहं तो र्जि हि स्मो भिः सा सा सा भिः

[illegible] तेहि भिवपे जहि जत्ता त इ स्यादि उपधापात्वे ओ र्गु गाः त्वेटदि पूइतिस्थिते दि टो लो

पो [illegible] त्या य [illegible] पो मय तिष्ठ [illegible] वे दो [illegible] लेटि योटः लो हं ति ते लि लो

लो [illegible] लि [illegible] होटः भ सा धि हें [illegible] लोटि लो ट ता [illegible] लोटं लोट ले हा नि ले ता

[illegible] लेता [illegible] लेट अत्र लोटां अत्र लोह न अत्र ले अत्र लेट अत्र लेटं अत्र लेट अत्र ले तं अत्र ले अत्र ले

[illegible] ठो स्य त्वा पां धा वि व ह ते इति [illegible] ॥ [illegible] अत्र त्र सो जः अत्र स्मो [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

इषूपइषंषुः इष इत्यादि धातून् नामन नंतत्वात्त्वानर्थत्वाच सर्वे पत्र
भिधातु जन सकृत्याभित्य समारव्यात रव्याप ने ॥ इति श्रीपर
महंसपरिव्राजकाचार्य विरचिता पां श्रीमदनुभूतिस्व ३४
रूपाचार्य ... सारस्वतारव्या व्याकरणादित्यादि प्रक्रिया
समाप्ताः शुभमस्तु ॥ सम्वत १८७४ मजमासे सितेपक्षे
सप्तमी ... वासरे श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

118

वेवेष्टु वेविष्टात् वेविष्टां वेविषंतु अविवेक् अविवेष्टां अवेविषुः विविषाय
पकभावे वेवेष्टि वेविष्टः वेविषंति विविषु व्याप्तौ वेवेष्टि वेविष्टः वेविषंति पृ पा
लनपूरणयोः ह्लादेः अर्त्तिपिपर्त्योः अभ्यासस्य इकारो भवति गणः श्लौ पूर्वः पि
पिपर्त्ति व्यापिपृतः व्यापिपृति व्यापिपृयात व्यापिपर्तु व्यापिपृहि अर्त्तिपिपर्त्योश्च
उगमो भवति व्यापिपर्त्त् दिस्योर्हलाल व्यापिपः व्यापिपृतां व्यापिपरुः व्यापिपः ऋ
गतौ ऋपरत्वे रीपि रे पूर्वस्य पादेशो भवति इयर्त्ति इयृतः इयृति इयृयात इयर्तु स्वरादि
प्रादि तीये उगमः ऐयः ऐयृतां ऐयरुः ऐयरः ऐयृतं ऐयृत ऐयरं ऐयृव ऐयृम इगागतौ
एति इयति एति इयः इयथः इमि इवः इमः इयात इयातां इयुः एतु इतात् इतां इयंतु इहि
इतात् इतं इयंतु अयानि अयाव अयाम ऐत् ऐतां ऐयन् ऐः
ऐतं ऐत आयं ऐव ऐम इयात इया[illegible]तां इयुः इयः इया

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सा॰ ना॰

इति

पाः परस्यामोनुडागमो भवति ॥ नोपधायाः दीर्घः ॥ [illegible] नाम्नो नो

लोपशधातोरिति नकारलोपः । पंचानां । पंचसु । एवं सप्तन् नवन् दश

॥७ न् प्रभृतयः । अष्टन् शब्दस्य भेदः ॥ अष्टनो दीर्घाद्वा ॥ अष्टन् शब्दा

त्परयो र्जस्शसो र्वा डौ भवति, स च डित् । डित्यादि लोपः ० अष्टौ ।

अष्ट । अष्टौ । अष्ट । हे अष्टौ । हे अष्ट । वा सु । अष्टन आसु पराः

१३५॥ नकारभकारादिविभक्तिषु [illegible] नात्वं भवति । अष्टाभिः ॥२४॥

अष्टभिः । अष्टाभ्यः । अष्टभ्यः । अष्टानां । अष्टासु । अष्टसु ॥

मकारान्त इदम् शब्दः ॥ इदमोऽयं पुंसि ॥ इदम् शब्दस्य पुंसि वि

षये अयमादेशो भवति सिसहितस्य अयम् ॥ त्यदादेः टः स्यात्

विभक्तौ [illegible] ॥ दस्य मः । त्यदादेः कारस्य मत्वं भवति [illegible] स्यादौ

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

षरो॥ सः॥ षकारस्य कारसंयोगस्लो भवति। पूषा। पूषणौ। पूषणाः। पूषणम्। पूषणौ। पूषः। पूष्णः॥ पूष्णा। पूष्णा। पूषभ्याम्। पूषभिः॥ पूष्णो ऽटि लोपो वेति केचित्॥ पूषि। पूषणि। पूष्णि इत्यादि॥ अर्यमा। अर्यमणौ। अर्यमणः। अर्यमणम्। अर्यमणौ। अर्यमणः। अर्यम्णा। अर्यमभ्याम्। अर्यमभिः। इत्यादि। संख्याशब्दः पंचन् प्रभृतयो बहुवचनान्ता स्त्रिषु समरूपाः पंचन् जस् इति स्थिते॥ जश्शसोर्लुक्। षकारनकारान्तसंख्यायाः जश्शसोर्लुग्भवति। लुकि सति तन्निमित्तं कार्यं न भवति॥ प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्। लुकि न तन्निमित्तं। पंच। पंच। पंचभिः। पंचभ्यः। पंचभ्यः॥ सः॥ षकारनकारान्तसंख्या

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

दान्ते चा आदिजवानामिति मकारः ॥ तत्त्वभुत् । तत्त्वभुद् । तत्त्वबुधौ ।
तत्त्वबुधः । हे तत्त्वभुत् । हे भुद् । हे तत्त्वबुधौ । हे तत्त्वबुधः ॥ तत्त्वबुधं ।
तत्त्वबुधौ । तत्त्वबुधः । तत्त्वबुधा । तत्त्वभुद्भ्याम् । तत्त्वभुद्भिः ।
इत्यादि । जकारान्तो न लभाजशब्दः ॥ छशषराजादेः षः ॥ छ
॥२५॥ कारान्तस्य शकारान्तस्य षकारान्तस्य च राजयजसृजमृजभ्रा ॥२५॥
जादेश्च षकारो भवति धातो झसे परे नाम्नश्च रसे पदान्ते च ।
अस्य च लं ऽत्वं निषेधार्थः ॥ षो डः । षकारस्य डत्वं भवति धातो
र्झसे परे नाम्नश्च रसे पदान्ते च । वावसाने । सम्राट् । सम्रा
ड् । सम्राजौ । सम्राजः । हे सम्राट् । हे सम्राड् । हे सम्राजौ । हे स

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

परे॥ इमौ। सर्वादित्वाज्जसी॥ इमे। त्यदादीनां मेवोपनत्रभावः। इमम्।
इमौ। इमान्। अनटौसौः॥ इदमो अनादेशो भवति। टौसोः परयोः
अनेन। स्पः॥ इदमः मकारे भकारे च परे अकारादेशो भवति।
अत्वस्य। अभ्दीत्यात्वं। भिस्। भिस्॥ इदमदसोर्भिस् भिसैर् भव-
ति। नभकारस्याकारः। आभ्याम्। एभिस्बहुत्वे। एभिः। अस्मै। आ-
भ्याम्। एभ्यः। अस्मात्। आभ्याम्। एभ्यः। अस्य। अनयोः। एषां
अस्मिन्। अनयोः। एषु। किम्शब्दस्य टेःस्यात्। विति सर्वत्राका-
रे कृते सर्वस्य वत् रूपं नेयम्। कः। कौ। के। कं। कौ। कान्। केन।
काभ्यां। केरित्यादि। धकारान्तः तत्र बुधशब्दः। अस्यासेप

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सा० ना०

तत्त्वप्राछ्शब्दः। छ्शाबराजादेः षः। षोडः। तत्त्वप्राट्। तत्त्वप्राड्। तत्
त्त्वप्राछौ। तत्त्वप्राछः। हे तत्त्वप्राट्। हे तत्त्वप्राड्। हे तत्त्वप्राछौ। हे तत्त्वप्रा
।२। छः इत्यादि। थकारान्तो अग्निमथशब्दः। वावसाने। चपाजबाश्च
अग्निमत्। अग्निमद्। अग्निमथौ। अग्निमथः। हे अग्निमत्। हे
अग्निमद्। हे अग्निमथौ। हे अग्निमथः इत्यादि। चकारान्तः प्र
॥३२॥ प्रांचशब्दः। नो लोपः। धातोर्हिंसार्थस्य उपधाभूतनकारस्य लो ॥३२॥
पो भवति क्ङिति च परे धातोर्झसे परे नाम्नः स्वरसे पदान्ते च
संबेः पंचसु नुमागमो वक्तव्यः प्रत्यन च सिद्धिर्लिख्यते। स्तोः श्चु
भिः श्चुरिति चुत्वेन नकारः। संयोगान्तस्य लोपः। चोः कुः। चवर्ग
स्य कवर्गादेशो भवति। धातोर्झसे परे नाम्नः स्वरसे पदान्ते च॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

म्राजः। सम्राजम्। सम्राजौ। सम्राजः। सम्राजा। सम्राड्भ्याम्। सम्राड्भिः। इत्यादि। एवं विराजादयः। दकारान्तस्त्यदादयः॥ त्यदादेः टेः रः स्यात्त्वे कृते। त्तः। त्यदादेस्तकारस्य सत्वं भवति सौ परे। स्यः। त्यौ। त्ये। त्यम्। त्यौ। त्यान्। सः। तौ। ते। तं। तौ। तान्। यः। यौ। ये। यं। यौ। यान्। सस्य षत्वम्। एषः। एतौ। एते। इदमेतदोरन्वादेशे द्वितीयाटौस्स्वेनौ वाच्यः॥ उक्तस्य पुनः कथनमन्वादेशः। एनं आकरणम्। धापय। एनं वेदं ध्यापय। एतम्। एनं। एतौ। एनौ। एतान्। एनान्। एतेन। एनेन। एताभ्यां। एताभ्याम्॥ एतेभ्यः। एतस्मात्। एताभ्याम्। एतेभ्यः। एतस्य। एतयोः। एनयोः। एतेषाम्। एतस्मिन्। एतयोः। एनयोः॥ एतेषु॥ छकारान्तः।

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

म्यञ्चौ। सम्यञ्चः। सम्यञ्चम्। सम्यञ्चौ। समीचः। समीचा। सम्यग्भ्याम्
सम्यक्षु। हे सम्यङ्। तकारान्तो महत् शब्दः॥ हे सेपः से ओपः। वावसा
ने। महत्। महद्। महतौ। महतः। महतम्। महतौ॥ महतः। महता।
महद्भ्याम्। महत्सु। हे महत्। हे महतौ। हे महद्। एवमग्निचित्प्रभृतयः
तकारान्त उकारानुबन्धो महच्छब्दः॥ उगितोनुम्॥ उकारानुबंधस्य
॥३७॥ अकारानुबंधस्य च नुमागमो भवति पुंसि पञ्चसु परे अमौ च परे
न्सि महतो ऽधोदीर्घः शौ च॥ सन्तस्यापि महच्छब्दस्य ॥३१॥
122 च दीर्घो भवति पंचसु धिनजिनेषु शौ च परे॥ संयोगान्तस्य लो
पः। महान्। महान्तौ॥ महान्तः। हे महन्। हे महान्तौ। हे महान्तः।
महान्तम्। महान्तौ। महतः। महता। महद्भ्याम्। महद्भिः॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

प्रत्यङ् । प्रत्यञ्चौ । प्रत्यञ्चः । प्रत्यञ्चम् । प्रत्यञ्चौ । अंचेरलोपो दीर्घश्च ।
अंचेर्धातोरकारस्य लोपो भवति पूर्वस्य च दीर्घः शसादौ स्वरे परे ।
न ङिति ईपि कारे च । निमित्ताभावे नैमित्तिकस्याप्यभावः । प्रती
चः । प्रतीचा । प्रत्यग्भ्याम् । प्रत्यग्भिः इत्यादि । हे प्रत्यङ् । हे प्रत्य
ञ्चौ । हे प्रत्यञ्चः । एवं तिर्यंच प्रभृतयः । तिर्यङ् । तिर्यञ्चौ ।
तिर्यञ्चः । तिर्यंचम् । तिर्यञ्चौ । तिरश्चादयः । तिरश्चादयो
निपात्यन्ते शसादौ स्वरे परे न ङिति प्रत्यये ईपि कारे च । तिर
श्चः । तिरश्चा । तिर्यग्भ्याम् । तिर्यक्षु । हे तिर्यङ् । एवं उदञ्च शब्दः ।
उदङ् । उदञ्चौ । उदञ्चः । उदञ्चम् । उदञ्चौ । उदीचः । उदीचा ।
उदग्भ्याम् । उदक्षु । हे उदङ् । एवं सम्यञ्च शब्दः । सम्यङ् । स

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

परान्तोऽस्य परिश्रयाः। दोषा रः। दोष्स जुष आशिष् हविष् धनुष् प्र
मृतीनां षकारस्य रेफो भवति रसेपदान्ते च। दोः। दोषौ। दोषः।
दोषम्। दोषौ। शासादेनान्नतावावक्तव्या॥ दोषः। दोषः। दोषा।
दोर्भ्याम्। दोषभ्याम्। दोर्भ्याम्। दोषभिः। दोर्भिः। दोषे। दोष्णे॥
॥२५८॥ दोषभ्याम्। दोर्भ्याम्॥ दोषभ्यः। दोर्भ्यः॥ दोषः। दोष्णः। दोष
भ्याम्। दोर्भ्याम्। दोषभ्यः। दोर्भ्यः॥ दोषः। दोष्णः। दोषोः। दो ॥२५८॥
123 ष्णोः। दोषाम्। दोष्णाम्॥ दोषि। दोषणि। दोष्णि॥ दोषोः।
दोष्णोः। दोषसु। दोष्षु। दोःषु। सजुषाशिषो रसेपदान्ते च दी
र्घोवक्तव्यः॥ सजूः। सजुषौ। सजुषः। हे सजूः। हे सजुषौ। हे स
जुषः। सजूर्भ्याम्। सजूर्भिः। सजूःषु। सजूष्षु॥ धूमादि सका

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

हृस्वादि। ऊकारानुबंधो भवतुशब्दः॥ अलतोः सौ॥ अलन्तस्य नतस्य
शब्दस्य चोपधायाः दीर्घो भवति धिवर्जिते षु सौ च परे। भवान्। भव
न्तौ। भवन्तः। हे भवन्। हे भवन्तौ। हे भवन्तः॥ भवन्तम्। भवन्तौ। भ
न्तः। भवता॥ भवद्भ्याम्। भवद्भिः। इत्यादि। एवं पचत्शब्दः। शृ
कारान्तो विप्रुष्शब्दः। छशषराजादेः षः॥ षत्वम्। षोडः। इति डत्वे
वावसाने। विप्रुट्। विप्रुड्। विप्रुषौ। विप्रुषः॥ इत्यादि। षकारान्तः षष्श
ब्दो नित्यं बहुवचनान्तः त्रिषु सरूपः॥ जश्शसोर्लुक्। षट्। षड्।
षट्। षड्। षड्भिः। षड्भ्यः। २। षः। षकारनकारान्तसंख्यायाः पर
स्याम् नुडागमो भवति। षट् नाम इति स्थिते। ष्टुः। संख्यासंबंधि
नोः कारस्य णत्वं भवति नामि परे। षण्णाम्। षट्सु। षं चित्सदा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

हे विद्वांसौ ॥ हे विद्वांसः ॥ विद्वांसम् ॥ विद्वांसौ ॥ वसोर्वउः ॥ वसोर्वस्य
रस्य उत्वं भवति शसादौ स्वरे परे नह्रितय स्वरपोरीपि कारे च । विदु
षः । विदुषा । वसां रसे । विद्वद्भ्याम् । विद्वद्भिः । स्वसेचपाम्स्तानां
विद्वत्सु । सुवचस् शब्दस्य अत्वसोः सावीति दीर्घत्वम् ॥ सुवचाः
॥३८॥ सुवचसौ । सुवचसः । सुवचसम् । सुवचसौ । सुवचसः । सुवचसा
सुवचोभ्याम् । सुवचस्सु । सुवचःसु । एवं चन्द्रमस् शब्दः । उशन ॥३॥
129 स् शब्दस्य भेदः ॥ उशनसाम् । उशनस् पुरुदंसस् अनेहस् इत्ये
तेषां सेरङ्डा भवति । डित्वाट्टिलोपः । उशना । उशनसौ । उश
नसः । उशनसो धौ नो न वा अदन्तत्वं वा च । हे उशनन् । हे
उशन । हे उशनः । उशनोभ्याम् इत्यादि । सकारान्तस्य अदस्

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सान्तः पुंसशब्दः। [illegible] पुंसोऽसुङ्। पुंस्शब्दस्यासुङादेशो
भवति पञ्चसु परेषु। पुमस् मि ङिइति स्थिते। उगितो नुम्। नसं महतोः
श्चोदीर्घः शौच। हसेपः सेर्लोपः। संयोगान्तस्य लोपः। पुमान्।
पुमांसौ। पुमांसः। पुमांसम्। पुमांसौ। पुंसः। पुंसा। पुंभ्याम्।
पुंभिः। असंभवे पुंसः कस्सौ॥ असंभव इति वेदान्ते। क
वेपस्यात्मनो वेहुत्वात् संभवे वाच्ये पुंस्शब्दस्य कगागमो
भवति सुपि परे। कोराधो [illegible]। संयोगाद्योः सकारकका
रयोर्लोपो भवति [illegible] धातोर्न सेपरे नाम्नश्च रसे पदा
न्ते च। पुंक्षु। एवं विद्वान्। विद्वांसौ। विद्वांसः। हे विद्वन्।

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अमुष्मिन्। अमुयोः। अमीषु। सामान्ये [illegible] अदसः कः स्यादिव
त्वे॥ सामान्ये वाच्ये सति अदःशब्दस्य कप्रत्ययो भवति। अमु
कः। अमुकौ। अमुके। अमुकम्। ॐ इति हलन्ताः पुंलिङ्गाः ॐ
अथ हलन्ताः स्त्रीलिङ्गाः प्रदर्श्यन्ते। हकारान्तः उपानहशब्दः
॥५०॥ नहो धः। नहो हकारस्य धकारादेशो भवति झसे पदान्ते च। वाऽ ॥४०॥
सानो दत्वम्॥ उपानत्। उपानद्। उपानहौ। उपानहः। हे उपा
नत्। हे उपानद्। हे उपानहौ। हे उपानहः। उपानहम्। उपानहौ
उपानहः। उपानहा। उपानद्भ्याम्। उपानद्भिः। इत्यादि। वका
रान्तो दिवशब्दः। दिव औ। दिवो वकारस्य औकारादेशो भवति।

125

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

शब्दस्य भेदः। त्यदादेष्टेरः स्यादविति सर्वत्राकारो कृते। अदसि इति स्थिते
सौ सः। सौ परे अदसो दकारस्य सत्वं भवति। सेरौ। अदसः सेरौकारादेशो
भवति॥ असौ। द्विवचने अदस् औ इति स्थिते। त्यदाद्यत्वम्। मादू॥ उत्वेड
त्व वू। अदसो मकारात्परस्य ह्रस्वस्य ह्रस्वो कारो भवति दीर्घस्य दी
र्घः। अमू। बहुवचने सर्वादित्वाज्जसि अमू। अमे इति स्थिते॥
एरीबहुत्वे। बहुत्वे सति अदस एकारस्येदूकारो भवति। अमी। अमुम्।
अमू। मत्वे उत्वे कृते। टानाश्चियाम्॥ अमुना। द्विवचने अमीस्थाने
पश्चादूकारः। अमूभ्याम्। अमीभिः। अमुष्मै। अमूभ्याम्। अमीभ्यः।
अमुष्मात्। अमूभ्याम्। अमीभ्यः। अमुष्य। अमुयोः। अमीषाम्।

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

तिसृणाम्। चतसृणाम्। तिसृषु। चतसृषु॥ र्वोर्विहसे॥ धातो
रिकारोकारयोर्दीर्घो भवति रेफवकारयोर्हसपरयोः। गीः। गिरौ।
गिरः। गिरम्। गिरौ। गिरः। गिरा। गीर्भ्याम्। गीर्भिः। इत्यादि गीर्षु।
एवं पुर्धुरादयः। धकारान्तः समिधशब्दः। वाचकाने। समित्
॥५१॥ समिद्। समिधौ। समिधः। समिधम्। समिधौ। समिधः। स ॥५१॥
मिधा। समिद्भ्याम्। समिद्भिः। इत्यादि। समित्सु। भकारा
128 न्तः ककुभशब्दः। ककुप्। ककुब्। ककुभौ। ककुभः। ककु
भम्। ककुभौ। ककुभः। हे ककुप्। हे ककुब्। दकारान्तः स
दादयः। तेषां तपदादेशः सादावीति सर्वत्रा कारः। [illegible]ः इति

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सोपरे। द्योः। द्यौः। दिवः। वामि द्वौवकारस्य वा लुं भवति अमि परे। द्याम्। दिवम्। द्यौ। दिवः। दिवा। द्युभ्याम्। द्विवकारस्य उकारो भवति रसेपरे। द्युभ्याम्। द्युभिः। इत्यादि। त्रिचतुर् शब्दौ नित्यं बहुवचनान्तौ। ॥ त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृ चतसृ वत्। ॥ त्रि चतुर् शब्दयोः तिसृ चतसृ इत्येतावादेशौ भवतः। ऋकारस्य अकारवत् नतः। तुरार् नभवति। तिस्रः। चतस्रः। तिसृभिः। चतसृभिः। तिसृभ्यः। चतसृभ्यः। ननामि दीर्घः। तिसृ चतसृ इत्येतयोः नामि दीर्घो न स्यात्। तिसृणां। तिसृ चतसृ इत्येतयोः छन्दसि दीर्घो भवति नामिपरे।

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अनपोः॥ आसु। चकारान्तस्त्वच् शब्दः॥ चोः कुरिति कुत्वम्। त्वग्
त्वक्। त्वचौ। त्वचः। त्वचम्। त्वचौ। त्वचः। त्वचा। त्वग्भ्याम्। त्वग्भि
रित्यादि एवं स्रच्। वाचप्रभृतयः। पकारान्तोऽप्शब्दो नित्यं बहु
वचनान्तः अप् जस् इति स्थिते। संमहतोऽधाविति दीर्घः॥
आपः। अपः। [illegible] भि॥ अपाम् अपादीनां भकारे परे तत्वं भवति
अद्भिः। अद्भ्यः।२। अपाम्। अप्सु। शकारान्तो दिश्‌शब्दः॥ दिशो ॥८२॥
कः॥ ऽदिश् दृश् स्पृश् मृश् इत्यादीनां रसे पदान्ते च कुत्वं भवति॥
दिक्। दिग्। दिशौ। दिशः॥ हे दिक्। हे दिग्। हे दिशौ। हे दिशः। दि
दिशम्। दिशौ। दिशः। दिशा। [illegible]॥ दिग्भ्याम्। दिग्भिः।
दिक्षु षकारान्तस्त्विष्शब्दः। त्विट्। त्विड्। त्विषौ। त्विषः। [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सतां । आवृतः स्त्रियाम् । अकारान्तान्नाम्नः स्त्रियां वर्तमाना
दाप्प्रत्ययो भवति । पकारः इत्संज्ञोपाधिः । सवर्णे दीर्घः सह इति
दीर्घे कृते स्त्रीलिंगे सर्वप्रत्ययपूर्वेने पठ्यते ॥ स्या । त्ये । त्याः । त्याम् ।
त्ये । त्याः । त्याभ्याम् । त्याभिः । त्यस्यामित्यादि ॥ सा । ते । ताः । या । ये । याः ।
षत्वम् । एषा । एते । एताः । द्वितीयाटौस्स्वेनादेशः । द्विवचनादौ टे
रत्वे कृते । आवृतः स्त्रियाम् । एनामित्यादि । एवं का । के । काः । इ
ति । इदं स्त्रियाम् । इदम इय् स्यादिविभक्तिषु भवति सिसहित
स्य । इयम् । इमे । इमाः । इमाम् । इमे । इमाः । अनटौसोः । अन
या । आभ्याम् । आभिः । अस्यै । आभ्याम् । आभ्यः । अस्याः ।
आभ्याम् । आभ्यः । अस्याः । अनयोः । आसाम् । अस्याम् ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वारि। पुनरपि। वाः। वारी। वारि अयमत्र इति विशेषः। नुम्न भवति
वारा। वाभ्याम्। वार्भिः। वारे। वाभ्याम्। वार्भ्यः। वारः। वाभ्याम्। वा
र्भ्यः। वारः। वारोः। वाराम्। वारि। वारोः। वार्षु। हे वाः। हे वारी। हे वा
रि। चतुर् शब्दो नित्यं बहुवचनान्तः॥ चतुरामसौ चेत् साम्। चत्वारि
इत्यादि शेषं पुंवत्। नकारान्तो अहन् शब्दः। अन्हः सः॥ अहन्
॥७३॥ शब्दस्य सकारो भवति रसे पदान्ते च। सो विसर्गः। अहः। ईनौ वे ॥७४॥
श्योः। अन्ही। अहनी। अहानि। पुनरपि। अहः। अन्ही। अहनी
120 अहानि। अन्हा। अहोभ्याम्। अहोभिः। अन्हे। अहोभ्याम्। अ
होभ्यः। अन्हः। अहोभ्याम्। अहोभ्यः। अन्हः। अन्होः। अन्हाम्
अन्हि। अहनि। अन्होः। अहस्सु। अहःसु। हे अहः। हे अन्ही

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

हे लिट्। हे लिड्॥ आशिष् शब्दस्य सजुष् शब्दवद्रूपम् नेयम्॥ आशीः॥
आशिषौ। आशिषः। हे आशीः। स्त्रीलिंगस्य अदस् शब्दस्य भेदेन वि
शेषः। द्विवचने टेरत्वे कृते। आचतः प्रियाम्॥ मत्वम्॥ विभक्तिकार्या
र्थत्वम्॥ पञ्चत्वम्माद् उत्तरहस्वस्य दीर्घस्योकारः॥ दीर्घस्य दीर्घः। असौ॥
अमू। अमूः। अमूम्। अमू। अमूः। अमुया। अमूभ्याम्। अमूभिः
अमुष्यै। अमूभ्याम्। अमूभ्यः। अमुष्याः। अमूभ्याम्। अमूभ्यः। अमुष्याः
अमुयोः। अमूषाम्॥ अमुष्याम्। अमुयोः। अमूषु। ॥ इति
हलन्ताः स्त्रीलिंगाः॥ अथ हलन्ता नपुंसकलिंगाः प्रदश्य
न्ते। रेफान्तो वार् शब्दः॥ नपुंसकस्य स्वमोर्लुक्॥ वाः। वारी॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सा०ना०

रान्तः प्रत्यंचशब्दः। प्रत्यङ्। प्रत्यञ्चौ। प्रत्यञ्चः। प्रतीची। प्रत्यञ्चि। तकारान्तो जगच्छब्दः। जगत्। जगद्। जगती। जगन्ति। सान्तमहत इति दीर्घः। महत् महद्। महती। महान्ति। सकारान्तः पयस् तेजस प्रभृतयः। पयः पयसी। पयांसि। अदस् शब्दस्य समेत्युकि कृते। सोर्विसर्गः॥ द्विवचने टत्वे कृते म त्वे। अदः। अमू। अमूनि। शेषं पूर्ववत्॥ ॥४८॥

इति हसान्तानपुंसकलिङ्गाः॥ ॥ अथ युष्मदस्मदोः स्वरूपनि रूप्यते॥ तयोश्च वाचलिंगत्वात् त्रिष्वपि लिङ्गेषु समानं रूपम्। त्वमहौ सिना। युष्मदस्मदोः सि सहितयोः त्वमह मित्येतावादेशौ भवतः। यथासंख्येन। त्वं। अहम्। युवावौ द्विवचने॥ युष्मदस्मदोः द्विवचने परे युव आव इत्येतावादेशौ भवतः॥ आनो॥

129

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

हे अहनी । हे अहानि । अनन्नाम्नोरसपदान्ते च नकारस्य लो
पः । ब्रह्म । ब्रह्मणी । ब्रह्माणि । ब्रह्मभ्याम् । ब्रह्मभिः । ब्रह्मणो इत्यादि
एवं चर्मन् वर्मन् जन्मन् तपः । नाम्नो दद् नो कन्दी ... स्याद्वा लो
पः ॥ छन्दस्यागमजानां गमजयोः त्रैपाद्योपाव वक्तव्यो ॥ दीर्घत्वं
न निवर्त्तते । परमे व्योमन् सर्वभूतानि ॥ त्यदादीनामस्य लुक् ... ते
दं रत्वं न भवति स्याद्यविभक्तौ परतः । द्विवचनादौ रत्वे कृते
सर्वशब्दवद्रूपं नेयम् । त्यत् । त्ये । त्यानि । पुनरपि । त्यत् । त्ये । त्या
नि । तत् । ते । तानि । पुनरपि । तत् । ते । तानि । यत् । ये । यानि । पु
नरपि । यत् । ये । यानि ॥ एतत् । एते । एतानि । पुनरपि । एतत् । एते । ए
तानि । एतत् । एते । एतानि । किं । के । कानि । तलोपादेर्पुंवत् । वक्ष्य

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

आवाभ्याम् ॥ भ्यस् भ्यम् ॥ युष्मदस्मदोः परो भ्यस् भ्यं भवति श
कारो भकारादित्वस्यावन्त्यर्थः । ते नात्वेन भवतः । युष्मभ्यम् ।
अस्मभ्यम् ॥ ङसिभ्यसोः दतुं पंचम्याः । ङसिभ्यसोः दतुर्भ
वति शकारः सर्वादिकार्यार्थः । त्वत् । मत् । युवाभ्याम् । आवा
भ्याम् । युष्मत् । अस्मत् । तवममङसा ॥ ङसासहितयो युष्म
॥८५॥ दस्मदोस्तवममइत्येतावादेशौ भवतः । तव । मम । युवयोः ॥८५॥
आवयोः । सामाकम् ॥ युष्मदस्मदोः परस्साम आकं भवति सर्वा
130 दित्वात्सुट् । युष्माकम् । अस्माकम् । त्वयि । मयि । युवयोः ।
आवयोः । युष्मासु । अस्मासु । त्वं । अहम् । युवाम् । आवाम् ।
यूयं । वयम् । त्वाम् । माम् । युवाम् । आवाम् । युष्मान् ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

युष्मदस्मदोः परस्य औ आम् भवति । युवाम् । आवाम् । यूयंवयंजसा ।
जसा सहितयोर्युष्मदस्मदोर्यूयंवयं इत्येतावादेशौ भवतः । यूयं
वयम् । त्वमहावेकवचने । युष्मदस्मदोस्त्वम मतू इत्येतावादेशौ भवतः
एकत्वे गम्यमाने । आमृतो । युष्मदस्मदोष्टेरात्वं भवति अमि
सकारे भकारे च परे । त्वाम् । माम् । युवाम् । आवाम् । त्मदादेष्टेर
लोपे कृते शसीति दीर्घत्वं शसो नो वा केचः । युष्मान् । अस्मान् । त्व
न्मदादेशौ कृते रेफाकारः । योऽचि । युष्मदस्मदोष्टेर्यत्वं भवति प
ङीत्येतयोः परयोः । अयादेशः । त्वया । मया । युवाभ्याम् । आवाभ्यां
युष्माभिः । अस्माभिः । तुभ्यमह्यं ङया । ङया सहितयोर्युष्मदस्मदो
स्तुभ्यमह्यमित्येतावादेशौ भवतः । तुभ्यम् । मह्यम् । युवाभ्याम्

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

प्रसंगतः। नमोस्तु भगवन् भूयो देहि मे मोक्षमव्ययम् ॥१॥ स्वामी वां
संजहासोच्चैर्दत्तं नौ दानपात्रनाम् ॥ राजा वां दासपते दानं त्वा
नं नौ मधुसूदनः ॥२॥ दिवो वा मम वा नाद्य सुनरकान्नौ जनार्द
नः ॥ स्वामी नो वेद यद्वान् राजा स्वामिनो ऽसौ जनार्दनः ॥३॥ न
॥४६॥ मो वो ब्रह्मविद्भ्यो ज्ञानं नो दीयतां धनम्। सानंदाश्चैः प्रपश्य
।3। मः पश्यामो नः सुदुःखिनः ॥४॥ ...मा। श्रमासहिनयो पुण्य ॥४८॥
दस्य दोः त्वामाद्य तेनावादेशो भवतानः ॥ पश्यामि त्वां मदाली
ढं पश्य पो मां मदभे...कम् ॥५॥ अनादौ। पादादोवर्त्तमानयो पु
नः दस्यादोनैन्ते आदेशा भवन्ति ॥ नव ये शत्रवो राजन् ममते
पंति शत्रवः ॥ नव मित्राणि पानि स्युर्मे मे मित्राणि नान्यपि ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अस्मान् । त्वया । मया । युवाभ्याम् । आवाभ्याम् । युष्माभिः । अस्माभिः । तुभ्यम् । मह्यम् । युवाभ्याम् । आवाभ्याम् । युष्मभ्यम् । अस्मभ्यम् । त्वत् । मत् । युवाभ्याम् । आवाभ्याम् । युष्मत् । अस्मत् । तव । मम । युवयोः । आवयोः । युष्माकम् । अस्माकम् । त्वयि । मयि । युवयोः । आवयोः । युष्मासु । अस्मासु । अथ [illegible] योरा देशा वि[illegible]विधीयन्ते । युष्मदस्मदोः षष्ठी चतुर्थीद्वितीयास्थयोर्वान्नावौ । [illegible] ते मे वां नौ वस् नसौ ॥ युष्मदस्मदोरसौ आदेशा यथासंख्येन भवन्ति ॥ कीदृशयोः युष्मदस्मदोः षष्ठी चतुर्थी द्वितीया यास्थयोः तत्रैकवचनेन ते मे । द्विवचनेन वां नौ । बहुवचनेन वस् नसौ भवतः । । । । न च पादादौ स्यातामिति [illegible] समापानः स्यातामित्यर्थः ।

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

आ। मा। नो। ना। प्रतिषेधे। किल। खलु। वै। आरात्। दूरात्। अशाम्।
पत्। नत। स्वाध्व। इत्येवं चादिगणो निपातसंज्ञको भवति
त्रादिविभक्तयो निपात्यते। तस्मिन्निति तत्र। यस्मिन्निति यत्र
कस्मिन्निति। कुत्र। कुह। क्व। तस्मिन्काले तदा। यस्मिन्काले यदा।
एकस्मिन्काले एकदा। तेन प्रकारेण तथा। केन प्रकारेण कथम्। अ-
॥४७॥ नेन प्रकारेण इत्थम्। तस्मादिति ततः। यस्मादिति यतः। कस्मा- ॥४८॥
दिति कुतः। सार्वविभक्तिके तस इत्येके। पूर्वस्मिन्निति पुरः पुरस्ता-
132 त्। अधरस्मिन्निति अधः अधस्तात्। परस्मिन्निति परेद्यवि
आहि च दूरे। दक्षिणाहि वसंति याम्यजनाः। किमः सामान्ये चिदादि
कश्चित्। कश्चन। केचित्। केचन॥ नञादीनां कार्यमर्थवशात्॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

तुद्रोविश्वेश्वरोदेवोयुष्माकंकुलदेवता:। सएवं भगवान्नोपः अस्मा
कंपापनाशकः॥ १॥ सम्बोधनपदान्येनेभवन्तियथादयः। हेरा
मंनवेदासोऽस्मिहेराम्नतुभ्यंनमः॥ २। पान्तुवोनरसिंहस्यनखला
ङ्गलकोटयः॥ हिरण्यकशिपोर्वक्षः क्षेत्रासृक्कर्दमारुणाः। ३॥
चादिभिश्च॥ चादिभिरपियोगेनैते आदेशा भवन्ति। नवममचसमाग
मस्तदास्ति॥ चादिर्निपातः॥ चादिर्गणोनिपातसंज्ञकोभवति॥
च। वा। ह। अह। एव। एवं। नूनम्। पपक्। विना। नाना। अन्तेरेण।
स्वस्ति। अस्ति। दोषा। नकम्। मृषा। मिथ्या। मिथस्। अप। अ
धो। ह्यस्। सम्। उच्चैस्। नीचैस्। स्वर्। अंतर्। प्रातर्। पुनर्।
भूयस्। अहो। किंत्। सह। अंते। अंतरा। नमस्। अलं। कृतम्।

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

लिंगान्यप्रपानि॥ ॐ॥ अधुना लिंगविशेषविजिज्ञापयिषया स्त्री
प्रत्ययाश्च निरूप्यन्ते। आवतः स्त्रियाम्। जाया। माया। मेधा। श्रद्धा। धारे
त्यादि। अजादेश्चाप् वक्तव्यः। अजा। एडका। कोकिला। बाला।
वत्सा। शूद्रा। गणिकाप्रभृतयः। कात्पतः। स्त्रियां कापि परे पूर्वस्या
कारस्य इकारो भवति। कारिका। पाचिका। पाठिका॥ वष्टि भागु
॥५८॥ रिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयोः। आपं चैव हलन्तानां यथा वाचा ॥५८॥
निशा दिशा॥१॥ अवगाहनम्। वगाहनम्॥ अपिधानम्। पिधानं
133 ह्रस्वो वा। स्त्रियां कापि परे नरादेश्च पूर्वस्य ह्रस्वो वा भवति। वेणि
का। वेणीका। नदिका। नदीका। श्रेयसितरा। श्रेयसीतरा। नौका
दौ न भवति। वाग्यहरणादेव। नित्यरूपेण पतत्यनेकेऽप्ययं विनि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अतिशयेन श्रेयसी २

राजाधीनम्। राजसात्। सर्वभस्म। भस्मसात्। ऊरी ऊररी अंगीकारसे। ऊरी
कृत्य। ऊररी। कृत्य। सद्यादिः कालेनिपात्यते। समानेऽह्नि। सद्य। अद्य। सम
दि। अधुना। इदानीम्। संप्रति। सांप्रतम्। पूर्वेद्युः। परेद्युः। यर्हि। तर्हि।
प्रादिरुपसर्जनसंज्ञकः। प्र। परा। अप। सम। अनु। अव। निर्। दुर्। वि। आङ्
नि। अधि। अपि। अति। सु। उत्। अभि। प्रति। परि। उप। अन्। अंतर। आ
विर्। अपम्। प्रादिगणाऽपसर्जसंज्ञकः। प्रादिर्धातोरुपसर्गाः। धातोः
प्राक् प्रयोक्तव्याः। तदव्ययम्। तदिदं चादिशब्दरूपमव्ययसंज्ञं भवति।
अव्ययाद्विभक्तेर्लुक्। अव्ययात्परस्या विभक्तेर्लुग्भवति। नच शब्दनि
र्देशो। अव्ययानां न लिंगादिनियमोऽस्ति। उक्तं हि। सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु
सर्वासु च विभक्तिषु। वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्। उक्तानि
॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नदी। गौरी। गौतमी॥ इन्द्रादेर्ङानीप्॥ इन्द्रादेर्गणात् स्त्रियामानीप्रत्ययो
भवति। इन्द्राणी॥ भवानी। मृडानी॥ मातुलोपाध्यायाभ्यां वा॥ मातुलानी
मातुली। उपाध्यायानी। उपाध्यायी॥ अर्यक्षत्रियाभ्यां वा॥ अर्याणी॥
अर्या। क्षत्रियाणी। क्षत्रिया। हिमारण्ययोर्महत्त्वे॥ महत् हिमम् हिमा
नी। महत् अरण्यं अरण्यानी। इवमाहोरगुणाश्च॥ ह्री। त्री।
॥७५॥ पुंयोगे च॥ अदंतात् स्त्रियामी प्रत्ययो भवति॥ शूद्री। गणकी॥ जाते ॥७५॥
134 रयोपधात्॥ जातिवाचिनोऽयकारोपधाददकारांतात् स्त्रियामी
प्रत्ययो भवति॥ महिषी। हंसी॥ कुक्कुटी। ब्राह्मणी॥ अयकारोपध
ग्रहणात्। क्षत्रिया। वैश्या। प्रथमवयोवाचिनोऽकारान्तादीप्र
महिषस्य स्त्री महिषी २ कुकुटस्य स्त्री कुकुटी २

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पाता नामनेकार्थत्वात्। न्नराः ङ्पू। नकारान्तात् ऋकारान्ताद् दरांताच्च
स्त्रियामीप्प्रत्ययो भवति। द° मिदनी। कारिणी। मालिनी। ङ्परात्तो
ऽपोपावन्तव्य:। राज्ञी। शुनी। कर्त्री। अकारान्ताद् अपि मातृष्वस्रादे
र्न भवति। यस्य लोपः। ङ्वस्त्रीव स्त्रीपो ङीपो भवति स्वरे यकारे
च परे। औपगवी। ऐन्द्री॥ षिद्गौ तः॥ षकार टकार ङकार अका
रानुबंधात् स्त्रियामी प्रत्ययो भवति। ष° नर्तकी। ट° कुरुचरी:
ङ° गोमती। अप्पयोरान्तिनम्॥ अप्रत्यय प्रत्यय संबंधि
न अकारात्परस्य शतुर्नुम् नित्यमीकारे ङ्पि च परे। पचन्ती।
पठंती। ङ्घनादि नदादे। नदादेर्गणात् स्त्रियामीप्प्रत्ययो भवति

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

दारयामासादेरेषु वेर्गुणात्। उकारान्ताद्गुणवाचिनो वा स्त्रियामीप्रत्य
यो भवति। पट्वी। पटुः। मृद्वी। मृदुः। लघ्वी। लघुः। बह्वी। बहुः। तन्वी। तनुः।
इत्यादि। ऊतऊङ्। उकारान्ताद् ऊङ्प्रत्ययो भवति॥ पङ्गूः॥ वामोरूः॥ यूनस्तिः॥
युवन्शब्दात्तिप्रत्ययो भवति। युवतिः। शब्दो नाम ता स्यादयः। आव
नाद्यपढ़ितिसे लोपः। इवंता न हसेपस्से लोपः इति से लोपः पूर्ववद्रू
॥५०॥ पं नेयम्॥ ० ॥ इति स्त्रीप्रत्ययाः॥ ० ॥ अथ विभक्तयो निरूप्यन्ते॥ ॥५०॥
लिङ्गार्थे प्रथमा॥ धातुप्रत्ययातिरिक्तमर्थवच्छब्दरूपं लिंगं तस्ये
135 यार्थसन्मात्रे प्रथमा विभक्तिर्भवति॥ लिंगादयोपि प्रथमार्था इति
केचित्॥ कर्त्ता कर्म च करणं च संप्रदानं तथैव च॥ अपादानाधि
करणमित्याहुः कारकाणि षट्॥ नंसम्बुद्धाविति। रविः। खेराजते राजा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

त्वयसो वक्तव्यः॥ कुमारी। किशोरी। कलभी। प्रथमवयोग्रहणात्। वृद्धा।
स्थविरा। अदूरणाच्छिशुः॥ स्वाङ्गाद्वा। स्वाङ्गवाचिनो ऽकारान्ता
द्वा ईप्रत्ययो भवति। सुमुखी। सुमुखा। मृगाक्षी। मृगाक्षा। त
न्वङ्गी। तन्वङ्गा। वाग्रहणादन्यप्रवदना कमलनयना कमलमुखी
क्रोडादिकारान्ततीरिवावक्तव्यः॥ अङ्गुलिः। अङ्गुली। आजिः। आजी। धूलिः
धूली। अक्रे इति विशेषणात्॥ कृतिः। मतिः। भीतिः। ऐच्च मन्वादेः। मन्वा
देर्गणात् ईप्रत्ययो भवति। ऐकारादेशश्च। मनायी। चका
रान्मनोरौ वा मनावी। मनुः। पत्न्यादयः शब्दा निपात्यन्ते। पत्नी। अ
न्तर्वत्नी। सखी। अशिश्वी। अर्द्धजरती। प्राची। प्रतीची। दारशब्दो नि
त्यं बहुवचनान्तः पुंल्लिङ्गः। दाराः। दारान्। दारैः। दारेभ्यः। दारेभ्यः।

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वंतिगापमृत्तामाश्रित्यदुत्याद्यम्। यत्सिद्धमेवप्राप्यते तदाप्यम्। यत्र
गुणाधानंमलापकर्षौ वा क्रियते तत्संस्कार्यम्॥१॥ यत्रपूर्वावस्था
परित्यागेनावस्थान्तर॥प्राप्तिस्तद्विकार्यम्॥ कटंकरोति भस्मयो नूपं
पश्यति चाक्षुषः॥ राज्यंप्राप्नोति धर्मिष्ठः सोमंसुनोति सोमपाः॥१॥
।५१। अभिसर्वतसोः कार्य्याधिगुपर्य्यादिषुत्रिषु॥ द्वितीयाम्रेडितान्ते
षु ततोन्यत्रापि दृश्यते।२॥ अभितोग्रामंनदीवहति। सर्वतोग्रा॥५१॥
136 मंतरवोदृश्यन्ते॥ धिग्देवदत्तम्। उपर्युपरिपुरोहितंयाचकाः
पतंति। अधोऽधः पर्वतंसरितोगच्छंति। एवमध्यधिपर्वतं
मेघाःगच्छन्ति॥ समयाग्रामंशाखुर्हतः। निकषाग्रामंफलंप्राप्तम्
कालाध्वनोनैरंतर्य्ये द्वितीया मासमधीते। क्रोशंपर्वतः। अन्यथा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

रोषात्कुमारीरोरूप्यते॥ वोभुज्यते भुवं भूपालाः प्राग्गत्तां रामलक्ष्मणौ॥१॥
संति संतः क्षिप्यंते: कुमाराः धेरयन्ते स्वैरं रोरूप्यंते नारकाः॥ जेगीयन्ते च
गीतज्ञाः मेम्रियंते तुजाजिताः॥ आमंत्रणे च॥ आमंत्रणे अभि
मुखीकरणे प्रथमा विभक्तिर्भवति॥ १ मां समुद्धर गोविन्द प्रसीद प
रमेश्वर॥ कुमारे स्वैर मासां पां लम धे गोतपस्विनः॥ आमो
सः। भो सम्भगाम स्त्र श्लोस स्कृत्यते शब्दानि पात्यन्ते द्विविषये॥
ते मस्व भो दुरात्म भगो स्तुभ्यं नमो स्तु ते। अघी पभो मह
प्रा स्तं वानयाघोः स्वक्ष स्मरम्॥ शेषाः कार्ये फर्त्तसाधनयोरेत
पात्रे विश्लेषाद्रधौ संबंधा धारभावयोः॥ कार्यकर्मकारके उत्पाद्य
आप्यमंस्कार्ये चि कार्ये च शेषा विभक्तयो द्वितीयाद्याः स्युः
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सा०ना० कम्मेणाभिप्रेत रूपमः ... दत्यस्याभिप्रायेण ... १

इत्पोनिदशेति द्वित्वः २

युक्तो तेप: पितरो रेनत्प्रपूजनम्। गुरूणां वचनं पथ्यं कवीनां रसवद्वचः॥
सेघभेदकपे: श्लेष: संबंधो ऽन्योन्यमिष्यते। द्विष्ठोयद्यपि संबंध:
षष्ठ्युत्पत्तिस्तु भेदकात्॥१॥ आधारे सप्तमी। आधारोऽधिकरणम्॥
षड्विधमधिकरणम् औपश्लेषिकं सामीपकमभिव्यापकं वैष
यिकं नैमित्तिकमौपचारिकं चेति। कटे शेते कुमारोऽसौ वटे
॥५२॥ तिसमभि | गावः सुशेरते। तिलेष्वविद्यते तैलं हृदि ब्रह्मामृतं परम्॥१॥ युद्धे | ॥५२॥
व्याप्यविषये | सन्नह्यते धीरोऽङ्गुल्यग्रे करिणां शतम्॥ भावे क्रिया लक्षणं | दृश्यस्यवि
इत्यर्थ:४ | तत्रापि सप्तमी वर्षति देवे चौर आपातः। पतत्स्वश्रुमालि निपति | येक्तेति इत्य
तोऽरातिः॥ विनाशहेतुमन्तरेण निर्धारणे स्वाम्यादिभिस्त्व॥ | र्थः४
137 | अंगुल्युपचारे सा प्रवर्त्तते इत्यर्थः॥६॥ | युद्धापनिमि
यस्यक्रियायाः यथानारं ... त्तापसन्नह्यते
निष्ठ॥ ... | इत्यर्थः४

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

... पदं पंचस्वधजनुविभूतिषु ३॥ निद्रावस्थापन्नं घालयो भावः ३

मासस्य द्विरधीते। कोशस्यैकदेशे पर्वतः। कर्त्तरि प्रधाने क्रिया अपसाध
ने च॥ कर्त्तरि प्रधाने क्रियासिद्ध्युपकारके करणेऽप्येवं तृतीयाविभ
क्तिर्भवति॥ भिन्नशरीरस्यात्मे दारा बद्धो लोकसंवराः करण्यैरा
विदोर्षापि वानरैः पुष्यते पुनः॥१॥ दानपात्रे संप्रदानकारके चतुर्थी
वेदविदे गां ददाति। ब्राह्मणाय कन्यां ददाति। दानपात्रे किं। ददाति दंडं पृष्ठतो
महीपतेर्न चाति भक्त्या न च दानकाम्यया॥ पद्धीपतेर्वासनया
सुपात्रे न संप्रदानं कृपितं मुनीन्द्रैः॥१॥ दासो दंडं ददाति। रजक
स्य वस्त्रं ददाति॥ विश्लेषावधौ पंचमी॥ विश्लेषो विभागस्तत्रापोऽव
धिश्चलनया अचलतया वा विवक्षितेनापादाने पंचमी। धा
वतोऽश्वादपतत्। [illegible]म्नोऽवतरति गंगा॥ संबंधे षष्ठी। राज्ञः सः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

षष्ठीसप्तम्यौ। गोषु स्वामी गवां स्वामी॥ कर्त्तृकार्य्ययोः कृति षष्ठी॥
कर्त्तरि कार्य्ये च षष्ठी विभक्तिर्भवति कादिवर्जिते कृदन्ते शब्दे प्रयुज्य-
माने॥ पाणिनेः कृतिः। भारतस्य श्रवणम्। स्मरतौ कार्य्ये च षष्ठी॥ स्म-
रत्यर्थे शब्दे प्रयुज्यमाने कार्य्ये षष्ठी विभक्तिर्भवति। मातुः स्मरति। मा-
तरं स्मरति। हेतौ तृतीयापंचम्यौ च वा। यथा॥ अनित्यः शब्दः कृतकत्वेन
॥५३॥ कृतकत्वात्। भयहेतौ पंचमी। चौराद्बिभेति। व्याघ्राद्बिभेति। विद्युत्पाता-
138 च्चकितः॥ षष्ठी हेतुप्रयोगे। कस्य हेतोरियं कन्या। अन्नस्य हेतोर्वसति भि- ॥५४॥
क्षुकः॥ कृत्यं भावे न तोया॥ अन्यस्थाने अन्योपचारस्तावर्त्तमानः सद्भसं-
भावः॥ क्षितिं धनपुत्रैः शापयति। संसारमसारं शापयति॥ येनाङ्गविका-
रः॥ येनाङ्गं नाङ्गिनो विकारो लक्ष्यते तस्मादङ्गात् तृतीया विभक्तिर्भवति
अक्ष्णा काणः॥ पादेन खञ्जः। शिरसा खल्वाटः॥ जनिकर्तुः प्रकृतिः॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University; Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

स्नेरग्नियोगे द्वितीयाद्या विभक्तयो भवंति। विनादियोगे तृतीया। विना
पापं सर्वं फलंति॥ अन्तरेण हरिं किं जीवितेन। अंतरा त्वां मां मधुरिपुः
सह साकं सार्द्धं समंयोगे तृतीया। सह शिष्येणागतो गुरुः। स
ह शास्त्रे मैत्रेण। शाकं नयनाभ्यां [illegible]दन्ताः। सार्द्धं धनि
भिर्धनः साधुः। समं चंद्रेणादित्यो गुरुः। नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा
अलं वषड्योगे चतुर्थी। नमो नारायणाय। स्वस्ति राज्ञे। सोमाय स्वाहा।
पितृभ्यः स्वधा। अलं मल्लो मल्लाय। वषडिन्द्राय। अन्ये आदियो
गे पंचमी॥ अन्ते ज्ञानान्न मुक्तिः॥ अन्यो ऽयं हरिहरः॥ निर्द्धार
णे षष्ठी॥ निर्द्धारणं क्रियागुणजातिभिः समुदायादेक
करणं नरेषु षष्ठी॥ क्रियापापरतो भगवत्साधकः श्रेष्ठः॥ गवां क
[illegible] संपन्नक्षीरा॥ इति षाष्ठांत्रिपथशूद्रनामः॥ स्वामीदेव
[illegible] वति॥१
एतेषां कोऽर्थः [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

स्वसामर्थ्ये याति साधुमार्गे ॥ बहुश्रु साधु मुनि वारय स्वपि स्वप्रमनाप्यों
यात साधुमार्गे ॥ मातापित्रोः रुदतोः प्रव्रजति पुत्रः ॥ अन्योन्यप्र
मा ॥ यदिदं कार्यं तत् अन्येनारब्धं तेन कृतं चोक्तं भवति तदा प्रथमा प्रयोक्तव्या
वः ॥ क्रियते पटः कार्यः ॥ छन्दसि स्यादिः सर्वत्र ॥ न तु अन्यत्र नराख्यति:
॥ अजर्जतीर्विरेजुः ॥ ६ ॥ इति कारकप्रक्रिया ॥ ७ ॥ अथा पंचविधि समासि
॥५८॥ विदिष्टानां पदानां समासो निरूप्यते ॥ समासश्चान्वये नाम्नाम् ॥
133 नाम्नामन्वययोगे सत्येव समासो भवति । चत्र दानाद् इतोपि ॥ ततो ॥५८॥
भार्या पुरुषस्य त्यादौ न भवति । परस्परसम्बन्धात् । स च षड्विधः । अव्य
यीभावस्तत्पुरुषो द्वन्द्वो बहुव्रीहिः कर्मधारयो द्विगुश्चेति ॥ तत्र पूर्व
पदप्रधानोऽव्ययीभावः ॥ द्विगुतत्पुरुषौ परपदप्रधानौ ॥ द्वन्द्वे

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

जायमानस्य कार्यस्य उपादानमपादानसंज्ञं स्यात् ॥ तत्रापादाने पंचमी ।
यस्मात्प्रजाः प्रजायन्ते तद्ब्रह्मेति वदंति बुधाः ॥ आङ्[illegible]योगे पंचमी ॥ आपा
टलिपुत्राद्बहिर्देवः ॥ तादर्थ्ये चतुर्थी [illegible] ॥ सप्तमाय श्रुतं धत्ते नरो ध
र्माय संपमं । धर्मो मोक्षाय मेधावी धनं दानाय भुक्तये ॥१॥ कृध्या[illegible]
वा । कूराय कुप्यति ॥ मित्राय द्रुह्यति पुत्राय तेऽसूयति । [illegible]लोपे कर्म
ण्यधिकरणे पंचमी च वक्तव्या ॥ हर्म्यात्प्रेक्षते । हर्म्यमारुह्य प्रेक्षत इत्यर्थः
आसनात्प्रेक्षते । आसने उपविश्य प्रेक्षत इत्यर्थः ॥ निमित्तात्कर्मयोगे
सप्तमी वक्तव्या ॥ चर्मणि द्वीपिनं हन्ति दन्तयोर्हन्ति कुंजरम् ॥ केशेषु च
मरीं हन्ति सीम्नि पुष्कलको हतः ॥१॥ विषयत्र । तर्के चतुरः ॥ षष्ठी चाप्र
त्यो चानादरे ॥ बहूनां क्रोशतां गतश्चौरः ॥ बहुजनसाधुषु वदत्स्वपि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

रायमतिक्रान्तमतिरिकुलम्। नाव्रमतिक्रान्तमतिनुजस्मम्। हूस्वादेशो ह्रस्वस्वरादा। भिकारो कारो च वर्तन्ते। यथा सारूप्ये॥ यथासादृश्ये। हरिं यथा हरिः तथाहरः। अत्र समासो ऽदृश्यात्। यथाशब्दोऽसादृश्ये वर्तमानः समस्यते। शक्तिमनतिक्रम्य करोतीति यथाशक्ति॥ अतोमनतः॥ अकारान्तादव्ययीभावात् परस्य विभक्तेरम् भवति॥ अतं वर्जे पिता॥ कुंभस्य समीपं वर्तते। उपकुम्भम्॥ उपकुम्भं द्रष्टा॥ उपकुंभं पश्य॥ उपकुं ॥५५॥

॥५५॥ भेन कृतम्। उपकुंभं कृतम्॥ अनतइति किम्॥ विशोक्तम्। त्यं चम्या अत्र मन भवति॥ उपकुम्भादानय॥ नातष्टाः। पञ्चम्यो र्वा भवति। उपकुंभेन निधेहि॥ उपकुम्भं निधेहि॥ अपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या॥ अपपरि बहिरञ्चव इति पञ्चम्या॥ अपपरिबहिरञ्चवश्च पंचम्यंतेन वा समस्यते स चाव्ययीभाव

140

र्मधारयौ चोत्तरपदप्रधानौ। बहुव्रीहिरन्यपदप्रधानः॥ तस्य क्रियाभिसम्ब
न्धादुभयपदप्रधानो बलवान्। एकपद्यमैकस्वर्यमेकविभक्तिकत्वं च
समासप्रयोजनम्। अधि स्त्रि इति स्थिते॥ स्त्री शब्दस्य इतीपैकवचने
अम्। स्त्रियमधिकृत्य भवतीति विग्रहे। अन्वययोग्यार्थसमर्पकः
पदसमुदायो विग्रहो वाक्यमिति यावत्॥ कृते समासेऽव्ययस्य पूर्वनिपातो
वक्तव्यः॥ पूर्वेऽव्ययेऽव्ययीभावः॥ अव्यये पूर्वपदे सति योऽन्यैः स अव्य
यीभावसंज्ञकः समासो भवति। इति समाससंज्ञायाम्। समासप्रत्य
योः॥ समासे वर्त्तमानाया विभक्तेः प्रत्यये च परे लुग्भवति॥ इत्यमो लु
क्। नामसंज्ञायां स्यादिर्विभक्तिः॥ अधिस्त्री सि इति स्थिते। स नपुंसकम्॥
सोऽव्ययीभावो नपुंसकलिङ्गो भवति॥ नपुंसकाद्ध्रस्वत्वम्। अव्ययी
भावात्॥ अव्ययीभावात्परस्या विभक्तेर्लुग्भवति॥ अधिस्त्रि गृहे कार्यम्

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कोऽर्थः अप्राप्तरात्सदृशा इत्यर्थः अपरात् भिन्न इति

सा०ना० नाकं दुःखं विद्यते यस्मिन् तत् नाकं

सतत्पुरुषसंज्ञकसमासो भवति ॥ ना ॥ समासे सति नञो अकारादे

शो भवति ॥ न ब्राह्मणो अब्राह्मणः ॥ अन्स्वरे ॥ समासे सति नञो

नादेशो भवति स्वरे परे ॥ न नाकम् ॥ न सत्यम् । न कुलम् । नाकादि

वर्जम् ॥ अश्ववाद् [illegible] ऽनश्वः ॥ धर्मेण विरुद्धो ऽधर्मः ॥ ग्रहणाना ८५

॥५८॥ मभावोऽग्रहणम् ॥ नह्न्यान हि कृतं भावे तु न प्रवर्त्तते ॥ छ ॥

141 इति तत्पुरुषः ॥ छ ॥ चार्थे द्वन्द्वः ॥ समुच्चयान्वाचयेतरेतरयोगस ॥५९॥

माहाराश्चार्थाः ॥ तत्रेश्वरं गुरुं च भजस्वेति ॥ प्रत्येकमेकक्रियाभिः सं पा० ८

बंधे समुच्चये समासो नास्ति ॥ बटो भिक्षामट गां चानयेति ॥ कमे

ण ॥ क्रियाद्वयसंबंधे ऽन्वाचये समासो नास्ति परस्परमसंबंधात्

इतरेतरयोगे समाहारे चार्थे द्वन्द्वसमासो भवति ॥ द्वन्द्वेऽन्यस्वरप्र

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सञ्ज्ञक समासो भवति ॥ यावन्त्यमत्रा [illegible] भवन्ति तावतो ब्राह्मणान्ना
मन्त्रयस्व यावदमत्रम् ॥ मक्षिकाणामभावो निर्मक्षिकं वर्त्तते [illegible] ॥
[illegible] ॥ अमादेन [illegible] ॥ द्वितीयाद्यन्तपूर्वपदसमर्थः
न्यपस्तेन [illegible] सह तत्पुरुषसञ्ज्ञकः समासो भवति ॥ ग्रामं प्राप्तो ग्रामप्राप्तः ॥
दात्रेण छिन्नं दात्रछिन्नम् ॥ यूपाय दारु यूपदारु ॥ वृकेभ्यो भयं वृक
भयम् ॥ राज्ञः पुरुषः राजपुरुषः ॥ अक्षेषु शौण्डः ॥ अक्षशौण्डः ॥ [illegible]
[illegible] परत्वम् ॥ अग्नौ आहितः ॥ आहिताग्निः ॥ पूर्वं भूतो भू
तपूर्वः ॥ समासे क्वचिदेकपदे [illegible] हेतुः ॥ [illegible]
[illegible] वनं [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ पानं [illegible] ॥
सुरापाः पानं सुरापाणाम् ॥ नञ् ॥ नञ्पूर्वपदसमर्थः [illegible]
[illegible] प्रसज्य
प्रतिषेधपरः १

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

श्री०

॥ॐ॥ [illegible]ः।ॐ। संख्यापूर्वो द्विगुः। संख्यापूर्वः समाहारार्थः समासो द्विगुर्निग
द्यते। समाहारेऽतईप् द्विगुः॥ समाहारे यो द्विगुस्समासो भवति ततोऽकारान्ता
दीप्प्रत्ययो भवति। दशानां ग्रामाणां समाहारः दशग्रामी॥ पंचाग्नयः स
माहृता इति पंचाग्नि॥ पंचानां गवां समाहारः पंचगु॥ नपुंसको ह्रस्व
त्वम्॥ त्रिफलेति नूचिः॥ पात्रादीनां प्रतिषेधो वक्तव्यः॥ पंचपात्रम्
।।५१।। त्रिभुवनम्॥ॐ॥ इति द्विगुः।ॐ॥ बहुव्रीहिरन्यार्थे॥ अन्यपदार्थप्रधाने ।।५१।।
142 सति योऽन्यः स बहुव्रीहिसंज्ञकस्समासो भवति॥ बहुधनं यस्य स
बहुधनः॥ अल्पं धनं यस्य सः अल्पधनः॥ तस्य प्रधानस्य कदेशे
विशेषणतया यत्र विज्ञायते स तद्गुणसंविज्ञानो बहुव्रीहिः॥ लम्बौ
कर्णौ यस्य स लम्बकर्णः॥ बहुव्रीहौ विशेषणसप्तम्यन्तयोः पूर्वनि
पातो वक्तव्यः॥ चक्रं पाणौ यस्य सः॥ चक्रपाणौ यस्य स चक्रपाणिः॥ ॥।

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

धानेकारो [illegible]नांपूर्वनिपातो वक्तव्यः॥ पटुश्च गुप्तश्च पटुगुप्तौ॥
ये कारउक्ता[illegible]र्थानामप्रयोगः॥ चकारबहुलो द्वन्द्वः स चासौ कर्मधारयः॥
येनपदस्य बहुव्रीहिः शेषास्तत्पुरुषास्मृताः॥१॥ अग्निश्च मरुच्च अ
ग्निमरुतौ॥ भोक्ता च भोग्यश्च भोक्तृभोग्यौ॥ धवश्च खदिरश्च ध
वखदिरौ॥ देवताद्वन्द्वे पूर्वपदस्य दीर्घो वक्तव्यः॥ अग्निश्च सोमश्च
अग्नीषोमौ॥ इन्द्रश्च बृहस्पतिश्च इन्द्राबृहस्पती॥ अग्न्यादेः
सोमादिनां सस्य षत्वं वक्तव्यम्॥ इतरेतरयोगे द्विवचनम्॥ एकव
द्भावो वा समाहारे वक्तव्यः॥ शशाश्च कुशाश्च पलाशाश्च शश
कुशपलाशम्॥ शशकुशपलाशाः॥ अव्ययादीनां विभक्तिलोपे पू
र्वपदस्य लगागमो वा वक्तव्यः॥ अन्यश्च अन्यश्च अन्योन्यम्॥ ए
कत्वे द्विगुद्वन्द्वौ॥ एकत्वे वर्तमानौ द्विगुद्वन्द्वौ नपुंसकलिङ्गौ भवतः॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सातदाचारितनिबध्यप्रातःसन्ध्यामिदसूत्रम्॥

नान्तस्य पदस्य टेर्लोपो भवति स्वरे यकारे च परे ॥ [illegible] कविन्न
भवति उपधालोपश्च ॥ अल्होमध्ये ॥ मध्याह्नः ॥ कवीनां राजा कवि
राजः ॥ टकारोऽनुबंधः द्विवर्षः ॥ कविराजौ राज्ञः पूः राजपुरम् ॥ वाङ्
च मनश्च वाङ्मनसे ॥ द्विरास्यो द्विरिपुंपाः ॥ रात्रिदापपः ॥ अह
श्च रात्रिश्च अहोरात्रः ॥ द्वौ च त्रयश्च ॥ द्वित्राः ॥ पंच च षट् च पंचषाः
बहवो राजानो यस्यां नगर्यां सा बहुराजा नगरी ॥ डित्वात् टिलोपे
मूला॥ ते ॥ [illegible] बिल्वापापूः बहवः केनोरोपस्य सबहुकारे कोया ॥वत॥
143 गः ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ कर्मधारयलक्षणं ॥ पदद्वयेन
स्यो यदि एकार्थो निष्ठलक्षणं कर्मधारयसंज्ञकः समासो भवति
कर्मधारये पूर्वपदस्य पुंवत् ॥ नीलं च तदुत्पलं च नीलोत्पलम् ॥
रक्ता चासौ लता च रक्तलता ॥ पुमांश्चासौ कोकि[illegible] खंडश्चासौ कोकिलः ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

प्रजामेधयोरसुग्वक्तव्यः ॥ सुष्ठु प्रजा य[illegible] स सुप्रजाः ॥ [illegible] ॥ धर्मादन्
सुधर्मा ॥ नृपवती भार्या यस्य स नृपवद्भार्यः ॥ [illegible] ॥ स्त्रीप्रत्यया
न्तस्यान्यार्थे वर्त्तमानस्य ह्रस्वो भवति ॥ पुंवद्वा ॥ समासे सति समाना
धिकरणे पूर्वपदस्य ऊङन्तस्य स्त्रीलिङ्गस्य पुंवद्भावो वा भवति ॥
पुंवद्भावाद्दीर्घो निवर्त्तितः ॥ [illegible] ॥ [illegible] नभ
वति ॥ गोः ॥ गोशब्दस्यान्यार्थे वर्त्तमानस्य ह्रस्वो भवति ॥ पंचगा
वो यस्य स पंचगुः ॥ संख्यासुपूर्वस्य पादस्य [illegible] लोपो
वक्तव्यः ॥ [illegible] पादौ यस्य स [illegible] ॥ शोभनौ पादौ यस्य
स सुपात् ॥ व्याघ्रस्य पादाविव पादौ यस्य स व्याघ्रपात् ॥ द्विपात् ॥
[illegible] ॥ द्विपदः ॥ द्विपदा ॥ द्विपान्याम
[illegible] ॥ [illegible] ॥ समासे सति [illegible] प्रत्ययो भवति ॥ [illegible] ॥

लड्डुरा[illegible] [illegible]नड्डुरा श्चैव [illegible] श्रीहि[illegible] मतः [illegible] कस्य[illegible] [illegible] सागरपूर्व[illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

श्रा० ना०

॥पत्रो॥

144

॥ विस्तरं ॥

॥पत्रो॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पुंसः स्त्रीषु संयोगान्ताल्लोपो वक्तव्यः ॥ नाम्नश्च कृता समासः ॥ धातोर्नुपस
र्गस्य नाम्नश्च कृदन्तेन सह समासो भवति स च समासस्तत्पुरुषः ॥ प्र
कर्षेण वादः प्रवादः । कुम्भं करोतीति स कुम्भकारः ॥ सहादेः सादिः ॥ समासे
सति सहादेः सादेशो भवति ॥ सह वर्तमानः पुत्रेण सपुत्रः ॥ सह अंचती
ति सध्र्यङ् ॥ सम्यक् अंचतीति स सम्यङ् ॥ सहसमन्तराणां सध्रिसमितिर
यः ॥ तिरो अंचतीति तिर्यङ् ॥ कोः कत् ॥ कुशब्दस्य कद्भवति ॥ कदन्नम्
इत्यादि कदश्वादिः ॥ कुशब्दस्य ईषदर्थे गम्यमाने का कव कत् इत्येते आदे
शा भवन्ति कदुष्णम् । कोष्णम् । कवोष्णम् ॥ कालवणम् ॥ पुरुषे वा
कापुरुषः ॥ कुपुरुषः ॥ षष ड उत्वं दन्तदशधासु परेषु ॥ उत्तरपदादेष्टु
त्वं च । षोडन् । षोडश । षोढा ॥ बृहतां पतिः । बृहस्पतिः ॥
महत आत्वं समानाधिकरणे ॥ महेश्वरः । घावाभूमी ॥ दिवो द्यावा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

षट् चेदमाचे २ द्यावापृ

सकुसुदगंधिः। गंधादरिः॥ हंसस्यगमनमिवगमनंयस्याः साहंसगमना॥ रि
कृसंख्येसंख्यातार्॥ दिक्संख्याभ्यांसंज्ञायांविषयेपरपदेतुल्यार्थेसम
स्येते॥ ससमासस्तत्पुरुषोभवति॥ अविग्रहोनित्यसमासः॥ अन्यस्तस्व
पदविग्रहोऽपि। दशरात्रिः। सप्तग्रामाः॥ इति समासप्रक्रिया॥ ॥
अथतद्धितानिरूप्यन्ते। अपत्येऽण्॥ नाम्नोऽपत्येऽर्थेऽण्प्रत्ययोभवति
॥६०॥ उपगोरपत्यमितिवाक्ये। उपगोऽण् इतिस्थिते॥ समासप्रत्यययोरितिष
ष्ठीलुक्॥ आदिस्वरस्यञ्णिति च वृद्धिः। स्वराणांमध्येयआदिस्वरस्तस्य ॥६०॥
वृद्धिर्भवति ञिति णिति च तद्धितेपरे॥ उकारस्यौकारो वृद्धिः॥ वोऽवस्व
रे॥ उकारस्य ओकारस्य च अव् भवति यकारे स्वरे च परे॥ औपगवः। वा
शिष्ठः॥ दिवादिस्वे विद्धके मः॥ शैवः। वैदेहः॥ मातुरुत्॥ मातृशब्दस्य
मकारस्यउर्भवति अणिपरे॥ षसंख्यासंभद्राभ्योमपत्यं षाण्मातुरः। द्वैमातुरः॥

145

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

शाकः प्रियो
यस्य स शाक
प्रियः ॥ ५ ॥

देशाः इत्यादि ॥ अलुक् क्वचित् ॥ क्वचित्समासे तद्धिते चान्ते विभक्तेरलु
ग्भवति ॥ कृच्छ्रान्मुक्तः । स्तोकान्मुक्तः । अप्सुयोनिः । उरसिलोमा । हृ
दिस्पृक् । कण्ठेकालः । वाचोयुक्तिः । दिशोदण्डः । पश्यतोहरः इत्यादि
समासान्तविकरणे शाकपार्थिवादीनां मध्यमपदलोपो वक्तव्यः ॥ शाक
प्रियश्चासौ पार्थिवश्च शाकपार्थिवः ॥ देवपूजको ब्राह्मणः देवब्राह्म
णः ॥ मातरश्च द्वन्द्वे ॥ द्वन्द्वसमासे क्वचिदादिपदस्य लोपो भवति ॥ माता
च पिता च पितरौ ॥ श्वश्रूश्च श्वशुरश्च श्वशुरौ ॥ दुहिता पुत्रश्च पुत्रौ
आतां द्वन्द्वे पूर्वपदस्यात्वं वा ॥ मातापितरौ ॥ द्वन्द्वे नवादिलं वा वक्तव्यं
वर्णाश्च आश्रमाश्च इतरे च वर्णाश्रमेतरे । वर्णाश्रमेतराः ॥ उपमि
करणे बहुव्रीहौ मध्यमपदलोपश्च ॥ कुमुदस्य गंध इव गंधो यस्य

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नाम्नस्येति ऐन्द्रं हविः॥ सोमो देवतास्येति सौम्यम्॥ देवताद्यमिदं दैवतं
वत्सम्॥ कचिद्वृद्धः॥ पूर्वोत्तरपदाद्योः स्वरयोः कचिद्वृद्धिर्भवति॥ आग्नि
मारुतम् कर्म। सौहार्दम्॥ सौभाग्यम्॥ अत्र भावे ऽण्यतोऽस्मः॥ रितो वा॥
उकारः प्रत्ययाविषयांतरे रितो वा भवति॥ अजो गौर्यस्यासौ अजगुः। शिवः।
तस्येदं धनुः आजगवम्॥ अजगवं वा॥ कुमुदस्येव गंधः कुमुदगंधो यस्य स
५९१॥ कुमुदगंधिः। तस्यापत्यं स्त्री कौमुदगंध्या॥ श्वशुरस्यायं श्वाशुर्यो यामः॥२०॥
विष्णोरिदं वैष्णवम्। गोरिदं गव्यम्। कुलस्येदं कुल्यम्॥ नरछदम्॥ नदी
146 ग्रम्॥ ममइदं मदीयम्॥ चतुरश्च लोपः॥ चतुर् शब्दस्य चकारस्य लोपो
भवति यप्रत्यये ईयप्रत्यये च परे। तुर्यः। तुरीयः॥ अन्यस्य दुक्॥ अ
न्यशब्दस्य दुगागमो भवति। अन्यस्येदं अन्यदीयम्॥ अइजरंती
यम्॥ कारकात्क्रियायुक्ते॥ कारकादप्येते प्रत्यया भवन्ति क्रियायुक्ते
नम्भकुर तुरां दीर्घः॥ पचिमं॥ यकारादिव्यञ्जनादिषु पूर्वं [illegible] मसंज्ञा स्यात्॥३॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अत इञ् तद्धिते ॥ अकारान्तान्नाम्नोऽपत्येऽर्थे इञ् प्रत्ययो भ
वति ॥ यस्य लोपः दैवदत्तिः । दाक्षिः । बाह्वादेश्च ॥ बाहविः । औ
डुलोमिः । कार्ष्णिः । ... गर्गादेर्यञ् ... गर्गा
देर्नडादेश्चायन् ... स्त्रीलिंगात् ... एयण् ...
याः इत्येते प्रत्यया भवंति । अपत्येऽर्थे गार्ग्यः । वात्स्यः । नाडायनः । चा
रायणः । आश्वलायनः । आत्रेयः । कापेयः । गांगेयः । माहेयः । वैन
तेयः । भागिनेयः । केचित् स्त्रीलिंगादपि । ... ॥ लुग्बहुत्वे
क्वचित् । अपत्येऽर्थे उत्पन्नस्य प्रत्ययस्य क्वचिद्यञ्नञादिविषये प्रत्यय
स्य लुग्भवति बहुत्वे सति । गर्गाः । वत्साः । अत्रयः । विदेहाः ॥ देवताद
यः । देवतार्थे इदमर्थे च ... वक्ष्यमाणाः प्रत्यया भवन्ति । इन्द्रो देव
... पितृष्वसुरपत्यं पैतृष्वस्रीयः ॥
पितृ...

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मातुः स्वसा मातृष्वसा मातृष्वसुरपत्यं मातृष्वस्रीयः ॥

सा०ना०

उतो: प्रत्ययाः स्युः अर्थे ऽपि भवन्ति। देवदत्त एव देवदत्तकः॥ च
त्वार एव वर्णाः चातुर्वर्ण्यम्। चोर एव चौरः॥ अणीनावो युष्म
दस्मदोस्तवकादिः॥ अणीनावोः प्रत्यययोः युष्मदस्मदोस्तवक
तवकममके ममक युष्माक अस्माक इत्येते आदेशा भवंति॥ तावकं मामकं तवकदेव
तावकीनः। मामकीनः। युष्मयो युष्माकं वा। अयं यौष्माकः। यौ
ष्माकीनः। आवयोरस्माकं वा॥ अयं आस्माकः॥ आस्माकीनः
१६८॥ वत्तुल्ये। तुल्येऽर्थे इवेऽर्थे वत् प्रत्ययो भवति॥ चन्द्रवन्मुखम्। १६९॥
147 घटवदुदरम्। पटवत्कम्बलम्॥ भावे त्वतलौ परतः॥ शब्दस्य प्रवृ
त्तिनिमित्तं भावस्तस्मिन् भावे त्वतलौ इत्येते प्रत्यया भवंति।
स शौक्लस्य भावः शुक्लता॥ तानि नित्यं स्त्रीलिंगादयः। त्वानि

नपुंसके॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कर्त्तरि कर्मणि चाभिधेये वा ॥ कुंकुमे नरकं क्लं कौंकुमम् । मधुरा भा श्र
गतः तत्र भातो वा भाधुरः ॥ ग्रामे भवो ग्राम्यः । धुरं वहतीति धुर्यः । धौरेय
कुं नेयः ॥ कद्रूतदूपद्रू कद्रूत्थे नेषुत्यपाभवंति भवाघर्येषु । त्रि वंचे
षां चे कल्मिकम् ॥ कारणादभेवः कारणात्कः ॥ कर णात्को वा ॥
ग्रामादागतः तत्रयातो वा ग्रामीयाः ॥ सध्री विभवः । सध्री ची
नः । तिरश्चि भवः । तिरश्चीनः । पलीपश्च ॥ कन्यायां भवः का
नीनः । पौष्णः । तत्रैं । तत्रिपः ॥ शुक्रियम् । इन्द्रियम् । मा
त्तिकः । शाब्दिकः ॥ वेदे भवा वैदिकी ॥ त्वतनो । किमादेरपा
दर्शेषां पर्यंपतनो प्रत्ययो भवतः ॥ कुत्र भवः । कुत्नत्यः । कुत
स्यः ॥ तत्रत्यः । अम्पतनः ॥ स्वस्तनः ॥ सदातनः । सार्वत्रा ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

शब्दार्थान् ग्रामिकः ३
श्राद्धं करोति ३

सा०प्रा० [illegible] तिः पादेत्र [illegible] यतस्यस्तः २

उकारान्तं धातरूप।

गोमती ॥ श्रीमती । मतुकौ धनत्वर्थे ॥ नाम्न अडकौ प्रत्ययौ भवतः मत्व
र्थे ॥ वैजयंतः । पर्वतः ॥ मायिकः ॥ [illegible] नौ ॥ मकारान्ता
न्मकारोपधादवर्णात् आदवर्णोपधाच्च विनो प्रत्ययो भवतः मत्व
र्थे ॥ मानिनिघन्ते यस्य स भगवान् । धनमस्यास्तीति धनी ॥ इषदी
148 र्मिः । किम्वान् । समी । तडित्वान् । तडित्वान् । मरुत्वान्
॥२२ इत्यादि [illegible] परिमाणे वतुः ॥ किमः किय प्रश्न ॥ किमः किय ॥७
इत्यो भवति वकारस्य यकारः ॥ किं प्रमाणमस्येति कियान् । यत्त
दोरा ॥ यत्तदोरात्वं भवति वतोपरे । यावान् । तावान् ॥ [illegible]
वतोरेव इतोपिः ३ श्चेतदो वा । एतावान् । ईयान् ॥ तुन्दादेरिलः ॥ तुन्दिलः ॥ उदरिलः पत्वमा ता नत्व तावान्
श्रोन्त्यादं तादुरः ॥ दंतुरः ॥ [illegible] दयालुः ॥ श्रद्धालुः ॥ दयालुः ॥ कृपा
लुः ॥ [illegible] तपसो विनिर्वा [illegible] ॥ तपस्वी ॥ मायावी ॥
मस्य म स्य मौ [illegible] समाप्तः ।७।

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

परान्ते ऽसम्। आस्तरणस्य भावो आस्तरणत्वं आस्तरणम्। [illegible]
गुणत्वं च॥ अेता। जनता। सौमनस्यम्। सौभाग्यम्। दौर्भाग्यम्। कर्म
रापये परत्वं च कर्म्यः। आस्तरणस्य कर्म आस्तरणम्। राज्ञः दूदंक
र्म राज्यम्। राजन्यम्। नाव नि टि लोपः॥ लोहितादेर्डिमन्॥
लोहितादिभ्यो डे पंचम्य त्रयः प्रो भवति भवडिमू। लोहितिमा। [illegible]
[illegible]। महिमा। [illegible]॥ [illegible] हस्वाद्लीघो [illegible] कारस्य
रेफो भवति [illegible] प्रत्यये परे प्रथिमा। [illegible] वहोः॥
वहो [illegible] घामिमनादीनामिकारस्य लोपो भवति वहोः स्याने
भू वादेशः। भूमा। [illegible] मतुः॥ नाम्नो मतुप्प्रत्ययो भवति
[illegible] त्वोत्पर्थे। डकारो नुम् विधानार्थः। [illegible] न [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

भवति। किन्तु तयोर्युडागमो भवति॥ इ उ उ इत्येतावागमौ भवतः॥ व
र्णविश्लेषं कृत्वा। पकारात्पूर्वमिकारः। वकारात्पूर्वमुकारः॥ आ
दि स्वरस्य भावेति वृद्धिः॥ ... जाता र्थे॥ नञ्जा जीता च स्येति
नञ्जितः॥ तारका जाता अस्येति तारकितं नभः॥ तरतमपौ ...:
प्रकर्षे॥ अतिशायेऽर्थे नरतनम् ईयसु इष्ठ इमे ते प्रत्यया भवन्ति॥ अ
॥२४॥ तिशायेन कृष्णः कृष्णतरः॥ ईयस्विष्ठौ ऽडिताविति वक्तव्यो॥ डि
149 त्वाट्टिलोपः॥ डकारोनुबन्धविधानार्थः॥ अतिशायेन लघुर्लघी ॥२६
यान्॥ लघिष्ठः॥ स्थियां लघीयसी॥ पापिष्ठः॥ पापीयसी॥ गुर्वा
रि... न यसु गरा रि... लोप स्त्रीके ... ॥ अतिशायेन गुरुर्गरीया
न्॥ गरिष्ठः॥ गरिमा॥ प्रेयान्॥ प्रेष्ठः॥ प्रियस्य प्र आदेशः॥ स्थू

गा... शब्देन प्रपः१

इयइष्ठावीमोस्तस्य एव स्वरः२

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मेधावी॥ स्रग्वी॥ वाग्मिनिः॥ वाग्मी॥ आलाटौ कुत्सितभाषिणि॥ वा
चालः॥ वाचाटः॥ ईषदपरिसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः॥ ईषदपरि
समाप्तः सर्वज्ञः॥ [illegible]॥ पटुकल्पः॥ पटुदेश्यः पटुदेशीयः॥ कविकल्पः॥ क
विदेशीयः॥ प्रशंसायां रूपप्॥ प्रशस्तो वैयाकरणो वैयाकरणरूपः॥ पो
[illegible]॥ कुत्सितो वैयाकरणो वैयाकरणपाशः॥ [illegible]॥ पू
[illegible]॥ [illegible] विकार प्राधान्यादि [illegible]॥ अन्नमयो [illegible]
[illegible]॥ [illegible] मयो [illegible]॥ अमृतमयः [illegible]॥ [illegible] धीते वेद
वेत्ति [illegible]॥ व्याकरणमधीते वेद वा वैयाकरणः॥ [illegible]
[illegible] वेदनि [illegible]॥ न संधि [illegible]॥ [illegible]
संधि [illegible] कार वकार [illegible] स्वरस्य वृद्धिर्न

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

षण्णां संख्यापूरकः ६ अष्टानां संख्यापू... एकादशानां ...

स्तोकिकमान्तरं कृत्वानु ॥ संख्येयविशेषावधारणो [illegible] द्वित्रिभ्यां तीयः ॥ द्व
योः संख्यापूरकः द्वितीयः । त्रयाणां संख्यापूरकः तृतीयः ॥ त्रेः संप्रसारणं ॥
[illegible] चतुरो थट् ॥ चतुर्थः । चतुर्थी ॥ कतिकतिपयाभ्यां च ॥ कतिथः ॥ कतिपय[illegible]
पंचादेर्मट् । पंचमः । अष्टमः । नवमः । दशमः । एकादशादेर्डः । एकादशः । द्वादशः । त्रयो
दशः । त्रयोदशः ॥ विंशत्यादेस्तमट् । विंशतितमः ॥ विंशतेस्तिलोपो डिति । विंशः ।
त्रिंशतितमः । त्रिंशः । शतादेर्नित्यम् । शततमः ॥ संख्याया धाः प्रकारे ॥ द्विधा ।
त्रिधा । चतुर्धा ॥ गुणात्प्राच्च । द्वेधा त्रेधा ॥ द्वैधम् । त्रैधम् । क्रियाया वारे कृ
त्वसुच् । पंचकृत्वः षट्कृत्वः ॥ द्वित्रिभ्यां सुच् । द्विः । त्रिः । त्रिः कृत्वः । [illegible]
सकृत् ॥ शालि बहुल्पार्थे शसुं वक्तव्य । बहुशो द्विबहुशः । संख्याया [illegible]
[illegible]शः ॥ [illegible] संख्यायाः ॥ द्वितयम् । त्रितयम् । द्वयम् । त्रयम् । द्वयी । त्रयी ।
[illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] । [illegible] ॥
का संख्या येषां ते कति । यत्तदोः [illegible] । इति श्री[illegible]

संख्या नाः

पंचानां संख्यापूरकः ५

त्रिभिर्[illegible] दशा ५

१८६५१

पंच धारा[illegible]

150

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

शस्यस्य श्रादेशः स्यादिष्ठे ।। श्रेयान् ।। प्रशस्यस्य ज्य आदेशः ।। श्रेयान् ।। श्रेष्ठः
वृद्धस्य ज्यादेशः ।। [illegible]ज्या[illegible]दीयसः ।। ज्या शब्दात्परस्य ईयस ईकारस्य
लोपो भवति ।। ज्यायान् । ज्येष्ठः ।। अतिशायने दीर्घः द्राघीयान् । द्राघिष्ठः ।।
दीर्घस्य द्राघादेशः ।। बहोर्लोपः ।। बहोः परस्य ईयस्प्रत्ययस्य ईकारस्य लोपो
भवति । बहोः स्थाने भू चादेशः ।। भूयान् भूयिष्ठः ।। किमे[illegible]व्ययादाम्[illegible]ता
च तरतमयोराम् वक्तव्यः ।। किंतराम् ।। किंतमाम् ।। कुतस्तराम् पचमानाः
कुतस्तमां ते ब्राह्मणा भकत्वम् ।। उच्चैस्तरां गायति ।। पचतितराम् ।। पचति
तमाम् ।। प्र[illegible]द्वयसप् ।। परिमाणतोऽर्थे द्वयसद् दघ्नद् मात्रद् इत्येते
प्रत्यया भवन्ति ।। जानुः परिमाणमस्येति जानुदघ्नम् ।। शिरोद्वयसम् ।।
पुरुषमात्रम् ।। द्वयोर्बहूनां चैकस्य निर्धारणे किमादिभ्योऽतरडतमौ वक्त
व्यौ ।। कतरो भवतोः कान्वः ।। कतमो भवतां त्रिकः । भवतामेपनर

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सा०
आ०

श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीसरस्वत्यै नमः॥ अथाख्यातप्रक्रिया निरूप्यते॥
धातोः। यस्मात् गणात् प्रत्यया धातोर्येयाः। भ्वादिः। भू सत्तायामित्यादि
गणो धातुसंज्ञको भवति सच त्रिविधः। आत्मनेपद परस्मैपद उभयप
दी चेति। आदनुदात्तङितः॥ अनुदात्तेतो ङितश्च धातोरात्मनेपदं
भवति॥ ञित्स्वरितेत उभे॥ ञितः स्वरितेतश्च उभे आत्मनेपदप ॥१॥
॥१॥ रस्मैपदे भवतः आत्मगामि चेत्फलमात्मनेपदम्॥ परगामि चेत्फलं
परस्मैपदम्॥ प्रयोक्तव्यमन्यथा तु पूर्वोक्तनिमित्तविधुराद्धातोः पर
स्मैपदं भवति। तिवादीनामाद्यानि नववचनानि परस्मैपदानि॥ त
तः पराणि नववचनानि आत्मनेपदसंज्ञानि भवन्ति॥ वर्तमाने

15

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सारस्वत०
आख्यात०

इति स्थिते पकारः पित्कार्यार्थः ॥ अप् कर्त्तरि ॥ धातोरप् प्रत्ययो भवति कर्त्तरि
विहितेषु चतुर्षु तिबादिषु दिग्वर्जितेषु परतः पकारोऽपि करणाभेदग्रा
पनार्थः ॥ गुणः ॥ धातोरन्त्यभूतस्य नामिनो गुणो भवति ॥ ओ अव्
व् भवति ह्लविवक्षायां भूत स० इति स्थिते ॥ अपि तादेर्ङित्
॥२॥ पकारेत्तं तादिकं च विहाय अन्यः प्रत्ययो ङित्संज्ञो भवति ॥ ङित्यगु
णः ॥ किति ङिति च परे धातोर्वृद्धिर्गुणो न भवति भुवं वर्जयित्वा ॥२॥
किति ङिति च ना भुवि परे भवत्येव ॥ ततो ङित्वाद् तिगुणौ प्राप्ते अप्र प्रतिषेधे
त्ययेनिमित्ते गुणो भवत्येव ॥ सो विसर्गः ॥ भवतः ॥ बहुत्वविवक्षा
यां भू अन्ति इति स्थिते ॥ अदे ॥ अकारस्य लोपो भवत्यकारे ए
कारे च परे ॥ भवन्ति ० भवसि ० भवथः ० भवथ ० वमोर्वा ॥ वम

152

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

तिप्॰ तस्॰ अन्ति॰ सिप्॰ थस्॰ थ॰ मिप्॰ वस्॰ मस्॰ ते॰ आते॰
अन्ते॰ से॰ आथे॰ ध्वे॰ ए॰ वहे॰ महे॰ प्रारब्धापरिसमाप्तः क्रियोप
लक्षितः कालो वर्त्तमानः। तस्मिन्वर्त्तमानेऽभिधेये तिवादयः प्रत्य
या भवन्ति॥ अस्य तिवादेः पाणिनीयानां लडिति संज्ञा॥ नाम्नि च
युष्मदि चास्मदि च भागे॥ नामादिषूपपदेषु सत्सु त्रिभिर्भागैरेते प्रत्य
या भवन्ति॥ नाम्नि प्रयुज्यमाने प्रथमः॥ नाम्नि प्रयुज्यमाने च शब्द
स्य प्रयुज्यमाने प्रथमपुरुषो भवति॥ तथैव युष्मदि मध्यमः अस्मदि
उत्तमः॥ कर्त्तरि पं च॥ पं परस्मैपदं कर्त्तरि भवति। चकारादात्मने
पदमपि॥ तत्र भू इत्येतस्माद्धातोः परस्मैपदं भवति। अविकरणा
त्तिवादयो योज्यन्ते॥ तत्रार्थे कर्त्तृविवक्षायां प्रथमैकवचने भू तिप्

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

योः परयोः अत आत्वं स्यात् । भवामि० भवावः। भवामः० नामयुष्म
दस्मदमुत्तरोत्तरं बली यः। सेच त्वंच साधू भवा[illegible]थः० सच त्वंच अहं
च साधवोभवामः। सराजा धार्मिको भवति अहंच त्वंच साधू भवावः
विधिसंभावनयोः॥ यात् यातम्० युः० याः० यातम्० यात०
याम्० याव० याम० ईत० ईयाताम्० ईरन्० ईथाः० ईयाथाम्
ईध्वम्० ईय० ईवहि० ईमहि० विधिः कर्तव्योपदेशः संभावनं
कल्पनमूहः तत्रयारादयः प्रत्यया भवन्ति॥ लिङिति संज्ञापाणिनी
यानाम्। या। अकारात्परो याईः स्यात् अइए भवेत् भवेताम्
युस इउ् अकारात्परो युस इउागमो भवति भवेयुः भवेः॥

153

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

श्रीगणेशाय नमः॥ अथ कृदन्तप्रक्रिया निरूप्यते कृत्कर्तरि धातोर्वि
स्यमाणाः प्रत्ययः कृत्संज्ञकः सच कर्तरि तृच्णौ धातोस्तृ
णौ प्रत्ययौ भवतः डुपचष्पाके पक्तृ निष्पद्यते नामसंज्ञायां
स्यादिर्विभक्तिः सुराट् पचतीति पक्ता करोतीति हरतीति ह कर्ता४
॥१॥ र्ता इतः धातोः परस्य कृत्प्रत्ययस्य वसादेरिडागमो भवति भ
वतीति भविता एधिता ऊदितो वा ऊदितो धातोर्वा इडागमो ॥१॥
भवति गुपूरक्षणे गोपायिता गोपिता गोप्ता सहिवहोरोद
वर्णस्य सहवहोर्धातोरवर्णस्य ओकारो भवति ढलोपे सति
सोढा वोढा पुवोरनाकौ पुवुइत्येतयोरनाकौ इत्येतावादेशौ
युपादिभ्यः आपाद्यो वाउ

154

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

५।

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

डुनदि समृद्धौ १ दुषम् ... रो १ साधसंसिद्धौ १
शुभ दीप्तौ मदी हर्षे १

नीतिदेवः नन्दयतीति नन्दनः वर्मनः मदनः दूषणः साधनः शो
भनः रोचनः शासनः दमनः रौर्युण् रुधातोर्युण् प्रत्ययो भव
ति रौति रावयतीति वा रावणः ग्रहस्तीतीति ग्राही विरावी
इग्रादेः शः इग्रादेर्धातोः शप्रत्ययो भवति शाकारः शित्को
र्प्यार्पः शिति चतुर्घत् शिति प्रत्यये परे चतुर्षु तिवादिषु परस्मैपदेषु
कं तद्भवति इशिर् प्रेक्षणे पश्यः धेट् पाने उद्धयः पापाने उजि ॥२॥
घ्रः घ्रा गन्धोपादाने उजिघ्रः गोघ्रः ज्वलादेर्णः ज्वालः तप् सं
तापे तापः पथि गतौ पान्थः आदेर्वृद्धिः पश्चान्नुमागमः का
र्मेऽण् कर्मणि प्रयुज्यमाने धातोरण् प्रत्ययो भवति कुंभकारः
ग्रन्थकारः आतोऽडः आकारान्ताद्धातोर्ड प्रत्ययो भवति गोदः
इकार इदित्कार्यार्पः इदितो नुम् इदितो धातोर्नुमागमो भवति दीर्घत्वं निपातनात्
[illegible] नायं [illegible]

॥२॥

155

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

प्राज्ञ नवरात्रि...
२शो अत्त इ२५

भवतः यथासंख्येन पाचकः णित्वात् अत उपधाया इति वृद्धिः पठति पाठयतीति वा पाठकः कारकः श्रावकः भावकः लाव कः इत्यादि नृप्रवचनतररायोः तारकः मारकः नाम्युपधा त्कः नाम्युपधाद्धातोः कप्रत्ययो भवति ककारो गुणप्रतिषेधार्थः क्षिप प्रेरणे क्षिपः भिदः प्रीकृगृभ्यश्च कप्रत्ययो भव ति नुधातोः प्रीणातीति प्रियः किरतीति किरः गृणाती ति गिरः ज्ञानातेश्च सुरः आतोऽनपि इत्याकारलोपः पचिनन्दिग्रहादेरयुणाः पचादेर्नन्द्यादेर्ग्रहादेश्च अयुणा नि इत्येते प्रत्यया भवन्ति यथासंख्येन पचः वदः दीव्य

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सारस्वत
कृदन्त०

उदरं बिभर्तीति ३

देवापिः वातापिः खितिपदस्य खिति प्रत्यये परे पूर्वपदस्य मुमा
गमो भवति क्षेमं करोतीति क्षेमंकरः प्रियं वदतीति प्रियंवदः आ
त्मंभरिः उदरंभरिः एजः खश् एजृ कम्पने इत्यादीनां ख
श् प्रत्ययो भवति खकारो मुमागमार्थः शकारश्चतुर्थकार्या
र्थः जनान् एजयतीति जनमेजयः पण्डितमन्यः मन् ज्ञाने
॥३॥ ख्युट्करणे धातोः करणेऽर्थे ख्युट् प्रत्ययो भवति अनग्नो न
ग्नः क्रियते अनेनेति नग्नंकरणम् द्यूतम् नस्थूलं अस्थू
लं स्थूलं क्रियते अनेनेति स्थूलंकरणं दधि भजो विण्
156 भजादीनां विण् प्रत्ययो भवति कर्त्तरि वेः वेर्लोपो भवति
भज सेवायाम् अर्द्धं भजतीति अर्द्धभाक् तत्त्वप्राट् बहुप्रा
नस्थूलं स्थूलं क्रियतेऽनेनेति ३
नग्नं प्रकुर्वन्तीति १ ॥३॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

धनदः नाम्निच नाममात्रेप्रयुज्यमाने ड प्रत्ययो भवति द्वाभ्यांपिबतीति द्विपः द्विजः गृहस्थः दुग्वती शुचःद्रवतीति शूद्रः शुचःशूद्र शुचः शूद्रत्वादेशो भवति द्रपरे उरसः सलोपोमुम् वा उरसागच्छतीति उरगः उरङ्गः विहायसो विहच विहायसागच्छतीति विहगः विहंगः अतो नाम्नि कार्ये सति अकारटकारो प्रत्ययो भवेतः टकार इत्वर्थः अंशिम्हरतीति अंशिम्हरः अवा कवचंहरतीति कवचहरः कुमारः धनुः धरयतीति धनुर्धरः चरणाति भवत्यो कुञ्जचरतीति कुञ्जचरः कुञ्जचरी इत्यादि धातोर्नाम्नि कार्ये सति इत्यादि इत्येते प्रत्ययाः भवन्ति आत्मानंविभवं सतां करोतीति स्तवकरिः ब्रीहिः आपु आप्तो देवानाप्नोतीति

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सारस्वत॰
कृदन्त॰

रोति महाकरोति आतो मनिन्क्वनिब्वनिपः आकारान्ताद्धातो म
निप्क्वनिप्वनिप इत्येते प्रत्यया भवन्ति सुष्ठु ददातीति सुदामा
राजन्शब्दवत्प्रक्रिया स्थामा ... ति
ति शापो ... अपि ... कृपिवती ... क्विपिया
नतुक्वपि सुष्ठु पिबतीति सुपीवा भूरिदावा अन्येभ्योपि दृश्य
॥१४॥ ते सुकर्मा क्विप्सर्वधातुभ्यः क्विप्प्रत्ययो भवति सुष्ठु श्रय ॥१४॥
तीति सुश्रीः हस्वस्य पिति कृति तुक् कर्मकृत् अग्निं चि
नोतीति अग्निचित् देवान् स्तौतीति देवस्तुत् सोमं पिब
तीति सोमपाः सर्वं पश्यतीति सर्वदृक् दिशामिति कुत्वम्
सुष्ठु ध्यायतीति सुधीः ... तत्वेप्राप्ते

... संप्रसारणम्

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

परो भारंवहतीति भारवाट् वाहेर्वैयाप्तादीत्वरे भारौहः भा
रौहा इत्यादि सहेः षः साढि शत्रूणांवेगंसहते तुरासाट्
तुरासाहौ तुरासाहः इत्यादि मोनोधातोः धातोर्मकारस्य न
कारादेशोभवति प्रकर्षेण शाम्यतीति प्रशान् अभूततद्भा
वे कृभ्वस्तियोगे च्विः च्वौदीर्घः ईचास्य च्वौपरे अवर्णस्य
ईकारोभवति अन्यस्वरस्यदीर्घोभवति वकारोपपार्थः वे
रिति विलोपः अमिथुनं मिथुनंक्रियते अनेनेति मिथुनी
करणम् अशुक्लः शुक्लः भूयते शुक्लीभावः असहायः
सहायः स्यात् सहायीस्यात् अहेतुः हेतुःकृतं हेतूकृतम्
च्वौमनोपञ्च उन्मनीभावः अथकाचिद्वृत्तयः दुःखाक

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

इति अमूदृशः अमूदृक्षः अमूदृक् अमूदृशी समानस्य सः समान
इवदृश्यते इति सदृशः सदृक्षः सदृक् सदृशी भवादिषु दृशेर्विधा
नार्थे इत्यादौ चेटदीर्घतावक्तव्या भवादृशः त्वमिवदृश्यते इति
त्वादृशः अहमिवदृश्यते इति मादृशः णिनिरतीते धातोरती
॥५॥ ते काले शीलेऽर्थे च णिनि प्रत्ययो भवति अग्निष्टोमेनेष्टवा
न् अग्निष्टोमयाजी उष्णभोजी क्विप्क्वनिड्वनिपः धातोरतीते
काले शीलेऽर्थे च क्विप् क्वनिप् ड्वनिप् इत्येते प्रत्ययाः भवन्ति वृत्रहा ॥५॥
158 यज्वा सुत्वा पित्वा तुक् कित्वात् गुणाभावः सरसिजम् सामगः
क्तक्तवतू धातोरतीते काले क्तक्तवतू प्रत्ययौ भवतः भावकर्म्म
णोः क्तः कर्त्तरि क्तवतुः उकारो नुम् विधानार्थः कृतः घटः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

उपनह्यतीति उपानत् नह्युपसर्गस्य दीर्घता वक्तव्या क्वचि
त्। दृशेष्टक्सकौ चोपमाने कार्ये दृशेर्धातोष्टक्सकौ प्रत्ययौ
भवतः चकारात् क्विप् कार्येऽर्थे उपमाने सति आसर्वादेः
एतेषु प्रत्ययेषु परेषु सत्सु सर्वादेष्टेरात्वं भवति अन्य इव दृश्यते
इति अन्यादृशः अन्यादृक्षः अन्यादृक् अन्यादृशी स इव दृ
श्यते इति तादृशः तादृक्षः तादृक् तादृशी किमिदमः कीशौ
किमः शब्दस्य इदमः शब्दस्य की ईश इत्येतादेशौ भवतः क इव दृश्य
ते इति कीदृशः कीदृक्षः कीदृक् कीदृशी अयमिव दृश्यते इति
ईदृशः ईदृक्षः ईदृक् ईदृशी अदोमूः अदः शब्दस्य दृशेष्ट
क्सकादिषु प्रत्ययेषु परेषु अमूर्भवति असाविव दृश्यते

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नैसेनवर्त्तते शिथिलगात्रप्रसारणे आयासेन प्रक्लिन्नः नि
ष्ठिदासनचूर्णने ष्ठिवन्तः मदोजनुः क्विति जग्धम् रः रेफा
दुत्तरस्य क्तितत्तकारस्य नत्वं भवति कॄ विक्षेपे हिंसायां च
ॠत इर् य्वोर्विहसे इति दीर्घः विकीर्णम् जॄष् झॄष् वयो
हानौ जीर्णम् झीर्णम् शरीरम् ञ्चाद्योदितश्च
ञ्चादेरोतश्च धातोः क्तो नो भवति लूनः क्षि क्षये क्षी
णः क्षीयतेर्निष्ठायां दीर्घः क्षितः ग्लानः म्लानः ओह
कृ त्यागे हीनः ओप्यायी वृद्धौ प्यायः पी पीनः दोदत्ति दाइ
त्यस्य दद्भवति नकारादौ क्ङिति परे दत्तवान् स्वरान्तोपा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

यं कृतवान् श्रितं स्थितं देवदत्तेन भावे नपुंसकम् गत्यर्थादकर्म्म
काच्च कर्त्तरि क्तः गत्यर्थादकर्म्मकाद्धातोः कर्त्तरि क्तप्रत्ययो भवति
श्रितः स्थितः कोवासेट् सेट् क्तप्रत्ययो वा किम्भवति प्रद्योतितः
प्रद्युतितः रोदितः उदितः वेदितः विदितः मोषितः मुषितः
ग्रहितः गृहीतः ग्रहोगुहाम् ग्रहादीनामिट् इकारो भवति
कितः ऊकारान्तादिकारान्ताच्छिश्रयस्च धातोः परस्य कितः प्रत्य
यस्येड् न भवति भूतः यतः श्रितः आदीदितः आदित इदि
तस्चेन्द्भवति शीतान्तस्य वर्त्तमानेपि शीतांधातूनां क्तप्रत्ययो
भवति वर्त्तमाने काले रक्तस्यनोदस्च दकारान्तउत्तरस्य कितस्तका
रस्य नत्वं भवति दकारस्य नकारः भिन्नान्तेहने भिन्नमन्नं

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सारस्वत०
छन्त०

स्यादः क्वसिति वेति स्फीतः क्वसुकानौ वा भवतः धातोः क्वसु
कानौ प्रत्ययौ भवतः अतीते काले तौ च वा भवतः द्विवचनं च
पपाराप् तस्थाक्वस पपाठ तस्थाकारा: विविद्वान् चकृ
वान् चकाराः शतृशानौ तिसेवाक्रियायाम् क्रियापदे
गम्यमाने शतृशानौ प्रत्ययौ भवतः तौ च तिप्रवत् इतिप
॥७१॥ रस्मैपद आत्मनेपदयोर्भवतः पचन् आस्ते पठन् तिष्ठति ॥७१॥
160 गायन् गच्छति मुगानेऽतः अकारस्याने परे मुगागमो
भवति पचमानः पठति यजमानः पिबति आसेरानई:
आसेः परस्यानस्यात ई: आसीनः गादेयो: शतुः अवस्था

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

स्वराडन्तरस्यदाउत्वस्यतोवामवति अतः प्रदत्तः अवत्तः अवदत्तः प
जेर्वर्णमाणम् यजोपवरानामितिसंप्रसारणम् ग्रहिज्याजादीनामि
ति षत्वे कुत्वे च इष्टम् इष्टवान् डुवपुबीजतन्तुसन्ताने उप्तम् बी
जम् वहप्रापणे होढः सीतेढ लंकृतं नपो ढुः छुनि:ढु: ढिं
ष्ठीवोपदीर्घस्व उढः उढवान् व्येञ्संवरणे संवीतः ह्वेञ् आ
ह्वाने आहूतः वदव्यक्तायांवाचि वचपरिभाषणे उदितः
उक्तः उषितः व्रातः शीराः श्रितः ह्वाराः हृतः निर्वाराः
निर्वातः संपर्युपेभ्यः करोतेर्भूषणेसुट् संस्कृतः परिष्कृतः
उपस्कृतः जनेर्जाजातः पचोवः पक्वः शुषेक्कः शुष्कः

निर्वाणोऽनुनिवन्यादौ निर्वातम्नुगतेनिरे३

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

भिक्षुः चिकीर्षुः भावुकः कामुकः नमादेरः नम्रः घस्मादेःरः घस्म
रः स्मरः भासेर्घुरः वर्णौ वर्णोवित्ति भासुरः भङ्गुरः पदः
उकः पदलौ [illegible] लौ ऊकप्रत्ययो भवति शीलेऽर्थे लुक् डुके
यति पदगो लुब्धः पापजूकः [illegible] शूकः आहनः क्विर्द्वित्वम् ने
अकारान्ताद्धकारान्ताद्धातोः क्विप्रत्ययो भवति धातोश्च
द्विर्वचनम् रामः सोमंपपि पतिः [illegible] स्वीकारम्भुनम्
यायजकान् [illegible] राजहिः [illegible] महाह्निजान् सर्वोदाद
पः सर्वस्मिन्काले उणादयः प्रत्यया भवन्ति करोतीति
कारुः वागतिगंधनयोः वातीति वायुः आनोयुके

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

परस्य शात् प्रत्ययस्य वा नुमागमो भवति ईकारे ईपि च परे तु
दत् तुदती तुदन्ती तुदन्ति अप्यो रान्नित्यम् अप्रत्ययप्र
त्यय संबंधिन अकारात्परस्य शातुर्नित्यं नुमोगमो भवति ई
कारे ईपि च परे पचन्ती पठन्ती पुष्यन्ती द्विजक्षानां ज
क्षादीनां च शातुर्नुम् न ददत् ददती दधत् जक्षत् जाग्र
त् दरिद्रत् चकाशत् विदेर्वावसुः विदः परस्य शातुर्वा
वसुरादेशोः विद्वान् विदन् शीलेतृन् कर्तकर्ता इष्णु
कुः शीले अलंकरिष्णुः निराकरिष्णुः जिष्णुः भूष्णुः
घाकोकराः शीले षाक उक उकरा प्रत्यया भवन्ति जल्पाकः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सारस्वत०
उत्तरा०

पठितुमीछे स्यात् तुं इहते घञ् भावे धातोर्भावेऽर्थे घञ् प्रत्ययो
भवति चजोः कुगौ घिति चजोः ककारगकारौ भवतः घिति परे
पाकः त्यागः विभागः प्रयागः भ्रंशे न घञ्बलम् इणागतौ
अयनम् आयः भवनं भावः हायः पायः आतो युक् संज्ञा
॥८१॥ यां कर्तरि च कर्तृवर्जिते कारके भावे च घञ्प्रत्ययो भवति सं
ज्ञायां विषये प्रतिकार्यमाहृते इति प्रत्याहारः दीयते इति दा
यः विक्षिप्यते अनेनेति विक्षारः स्वरादः स्वरान्ताद् धातोरप्रत्य ॥८१॥
162 यो भवति भावादौ विषये चयनम् चयः संचीयते इति सं
चयः स्तवः नयः उन्नयः कृविक्षेपे निपते क्वापादिभिरि
ति नरः ग्रहाम्नः मदाहि नाम प्रत्ययो भवति भावादौ विषये

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

क्रोशतीति क्रोष्टा कुष्ट आह्वाने तृप्रत्ययः अवरत्नरो अत सातत्यगमने मनिप्प्रत्ययः अततीति आत्मा वहवंहवहो वंहत्वा वहरा ता हा वहल धारणं धर्म धादेः लिः धूलिः धू कंपने अंगुलिः अगि गत्यर्थः अंगुलिः अग्निः भावे ग्राः निःप्रत्ययः भुवो डितीनिः भावी ईश इतीश्वरः वरप्रत्ययः स्था वरः राजादेरन् राजा भ्राजा राज भ्राज दीप्तौ वचादेरस् वचः महः सौ कार्ये केलिमः भिदेलिमं काष्ठम् पचेलिमाः माषाः उणादयोऽपरिमिताः प्रयोगमनुसृत्य प्रयोक्तव्याः तुमुन्तर्थाया भविष्यति धातोर्भविष्यति काले तुमुन्प्रत्ययो भवति तदर्थायां क्रियायां प्रयुज्यमानायां भोक्तुं व्रजति

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सारस्वत०

163

नङ्क्षी धातोर्नङ्क्षीप्रत्ययो भवति यतीप्रयत्ने यत्नः प्रच्छवि
च्छोः स्थाने प्रश्नः विश्नः आतोऽनपीत्याकारलोपः संविधिः
अम्भोनिधीयते अम्भोनिधिः युट् धातोर्भावेऽर्थे युट्प्रत्य
यो भवति करणम् वहनम् दानम् भाषणम् उदःस्था
दिःसलोपश्च उत्थानम् उत्तम्भनम् साधनाधारभावयोः
॥१०॥ साधनाधारेऽपि युट्प्रत्ययो भवति पचनोऽग्निः पचनीस्था ॥१०॥
ली ईषद्दुःसुषु खल्पू ईषदादिषु प्रयुज्यमानेषु खल्
पू इत्येतौ प्रत्ययौ भवतः भावादौ लकारः प्रत्ययभेदज्ञापना
र्थः ईषद्भवः दुर्भवः ईषत्करः दुःकरः सुकरः दुर्योधनः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मदी हर्षे मदः प्रमाद्यतेऽनयेति प्रमदा यथा: दमः दमउप
शमे दमः षिञ् बन्धने विशेषेणासिनोतीति विषयः मू
र्तौ घनः मूर्तौ काठिन्ये परिछेदे चाभिधेये हन्तेरप्प्रत्ययो भव
ति भावादौ घनादेशश्च इषिबनः सैंधवघनः दसीविप
र्ययश्च हिसि हिंसायाम् सिंहः ट्वितोऽथुः ट्वितो धातोर
थुः प्रत्ययो भवति भावादौ टुवेपृ कम्पने वेपथुः टुत्रपते
परो त्रेपथुः ड्वितः क्त्रिमक्त क्ते ड्वितो धातोः क्त्रिमक्
प्रत्ययो भवति तेन धात्वर्थेन कृतेऽर्थे वाच्ये सति क्रियानि
र्मितः कृत्रिमो घटः संमृत्रिमं पुष्पम् पाचित्रिमं विस्तुधनम्

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सार०टी०
उत्त०

प्रत्ययो भवति कार्यम् वाच्यम् धार्यम् बाध्यम् हस्तहस्तने
हाय्यम् चित्तात्ककारः धाय्यम् येऽते भावकार्ययोर्वि
हिता स्तव्यादय स्तेऽहिविधौ च वेदितव्याः शशोर्मसे द्दशाम्
दर्शनमर्हो द्रष्टव्यः श्रुश्रवणे श्रोतव्यम् ध्यै चिन्ताया
॥११॥ म् ध्यातव्यम् ओराववश्यके एवं शीलादावश्यकेऽर्थे
164 ण्यः प्रत्ययो भवति ओतोऽप्यः स्वरवत् अवश्यंभा ॥११॥
व्यम् अवश्यभाव्यम् अवश्यलाभ्यम् समासेऽव्यय
दीनां मलोपमिच्छन्ति तुमेदवश्यमः कृत्ये तुं काममन
नसोरपि समो वा हितततयोर्मांसस्य पचि युड्घञोः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पुम संप्रहरणे तव्यानीयौ धातोस्तव्यानीयौ प्रत्ययौ भवतः
भवितव्यम् भ्रासनीयम् कर्तव्यम् करणीयम् इटो ग्रहाम्
ग्रहादीनामिट ईकारो भवति गृहीतव्यम् वृतोनभको
वरीतव्यम् स्वराद्यः स्वरान्ताद्धातोर्यप्रत्ययो भवति गाधा
तो येयम् जेयम् तपजपौ शक्यार्थे तप्यं जप्यं शिक्ये
जिज्ये पुशकान्त् पवर्गान्ताद्धातोः शकारादेश्च यप्रत्ययो
भवति लभ्यम् शक्यम् सह्यम् ण्यान्तः आकारान्ता
द्धातोर्यप्रत्ययो भवति आकारस्यैकारः देयम् गेयम् ऋ
हलान्ताद् ण्यत् ऋवर्णान्ताद्धलन्ताच्च धातोर्ण्यत्

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

धातुनिर्दिष्टो पचिः पचतिः षिद्भिदादेरङ् षितो धातो
र्भिदादेश्च स्त्रियामङ् प्रत्ययो भवति पचा मृजूष् भु
जौ मजा भिदा छिदा मतेऽङ्गुराः जरा गुरोर्हलात्
गुरुमतो हलन्ताद प्रत्ययो भवति स्त्रियां विषये ईह चेष्टा
याम् ईहा ऊह वितर्के ऊहा ईक्ष दर्शनाङ्कनयोः ईक्षा ॥१२॥
प्रत्ययात् प्रत्ययान्ताद्धातो रप्रत्ययो भवति चिकी
र्षा पुत्रीया पूर्वकाले क्त्वा पूर्वकाले क्त्वाप्रत्ययो
भवति समानकर्तृके धातौ प्रयुज्यमाने स्नात्वा भु
के भुक्त्वा व्रजति क्त्वासेट्किन्न शयित्वा वाग्गहत्वा॥

165

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मोक्तुकामः श्रोतुमनाः सहितम् संहितम् सततम् संततम्
मांसस्पचनम् मांस्पाकः अदुपधात्क्यप् अदुपधाद्धातोः
क्यप्प्रत्ययो भवति भावकार्ययोः वृत्यम् कृतीभेदने कृ
त्यम् स्त्रियां भावे क्यप् व्रजादेर्धातोः स्त्रियां भावे क्यप्प्रत्ययो
भवति क्विचा संप्रसारणम् इज्या समज्या व्रजगतौ
तेषपरोच व्रज्या हत्या क्तिः धातोः क्तिः प्रत्ययो भवति
स्त्रियां भावे अनुभूतिः पचिविस्तारे पंक्तिः ऊतिः
भूतिः शान्तिः ग्लानिः [illegible]नैः संक्रान्तिः
हूतिः कर्तरि क्तिश्च प्रकृन्ते इति प्रकृतिः इकश्तिपौ

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सुखंव्यादायस्वपिति पौनःपुन्ये णमुपदं द्विश्च समानकर्तृके
षु धातुषु पूर्वकाले धातोर्णम् णमन्तस्य पदस्य द्विर्वचन
म् पायंपायंगायति भोजंभोजंव्रजति स्मारंस्मारंगुरोर्वचः
कष्पमादिषु स्वार्थे णम् कृञः कष्पंकारम् कुष्पंकारम् भुवे
॥९३॥ भावे अप् ओलम्भूपगतः लेतरीमुच्च लक्षदर्शनांकन ॥९३॥
पोः अस्मीः स्यायते ईर् छेद्यस्ये शब्दसंघातपोः [illegible]
लस्यलोपः टिलादिप् स्त्री वर्णात्कारः ककारः बकारः
रादिफो वा रेफः रकारः रकारादीनि नामानि श्रुतानि ससा
रावराः रत्नानि रमणीयानि देवत्राससजनपन्ति च ॥१॥

166

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

त् उदादेः परः सेट् क्त्वा किन्न भवति तुदिर् अश्रुविमोचने तुदि
त्वा रुदित्वा वेदित्वा विदित्वा वस निवासे [illegible]
वसिक्षुधोरिट् उषित्वा क्षुधित्वा उदित्वा अलंखल्वोः प्र
तिषेधे क्त्वा अलंभुक्त्वा खलुभुक्त्वा उदितः लोवेट्
रक्षित्वा इष्ट्वा समासेल्यप् समासेसति पूर्वकाले ल्यप्
प्रत्ययो भवति तत्कोऽर्थे के धातो प्रयुज्यमाने संभवत्यकर्ता
ति याम् प्रहृत्य प्राञ्च प्रणाम्यागच्छति अन नपूर्वकस्ये
क अकृत्वा क्वापि भैर्यास्य परिणामध्यमुक्ते तत्क्वा
पि ल्यप् दृश्यते नेत्रे संमील्य हसति मील निमीलने

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सारस्वत०
क्षरनी०

लोकाच्छेषस्यसिद्धिर्भव्यामातरां: स्वयाली अनुभूत्वा
दिशाद्वो भूपन्नसमस्करी शुभां यके प्रक्रिया चतुरोवि
ताम् अवताद्धयग्रीवः कमलाकर ईश्वरः सतुराउ ॥१९४॥
रवरोकरमधुपापीतपंकजः ॥ इतिश्रीमदनुभू
॥१९४॥ ति स्वरूपाचार्यविरचिता सारस्वत प्रक्रिया समाप्ता
॥ शुभमस्तु शुभंभूयात्

167

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

8

168

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham